Chap-6

षष्ठ अध्याय

*
:
:
:
:
:
:
:
:

सर्वेक्षण कार्य का विश्लेषण

1 हिन्दी अध्यापकों की प्रश्नावली का विश्लेषण

2 आठवीं कक्षा के उपलब्धि परीक्षण का विश्लेषण

3 मौखिक साक्षात्कार का विश्लेषण

षष्ठ अध्याय

सर्वेक्षण कार्य का विश्लेषण

एकत्रित सामग्री का वर्गीकरण :

शोध सामग्री प्राप्त करने के अनेक साधन हैं । इन साधनों की सहायता से शोधकर्ता अपने निश्चित उद्देश्य तक पहुँच सकता है ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने तीन प्रमुख साधनों की सहायता ली है । 1) प्रश्नावली 2) भाषा उपलब्धि-परीक्षण और 3) मौखिक साक्षात्कार ।

विषय से संबंधित सामग्री प्राप्त करने के लिए आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा को द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापक बन्धुओं तक पहुँचना अनिवार्य था । इसको दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने उक्त हिन्दी अध्यापकों को पोस्ट के द्वारा प्रश्नावली भेजी । इनकी अत्यधिक संख्या को ध्यान में रखकर सोचने से यह पता चलता है कि इनके लिए प्रश्नावली साधन ही उपयुक्त था ।

प्रश्नावली के बाद इस शोधकार्य का दूसरा प्रमुख साधन है भाषा उपलब्धि-परीक्षण । इस साधन के द्वारा आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखनेवाले 960 नगरीय एवं ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं की भाषा उपलब्धि परीक्षण उनकी पाठ्यपुस्तक के आधार पर ली गई है । इस परीक्षा में छात्रों के भाषायी स्तर का विश्लेषण किया गया है ।

तृतीय प्रमुख साधन है छात्रों का मौखिक साक्षात्कार । इस साधन की सहायता से उपलब्धि परीक्षण में 20% से कम अंक प्राप्त किये प्रति 10 छात्र तथा

छात्राओं को नगरीय एवं ग्रामीय पाठशालाओं से चयन करके मौखिक साक्षात्कार किया गया है । यह प्रत्यक्ष साधन शैक्षणिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है ।

प्रश्नावली के द्वारा आठवीं कक्षा को पढ़ानेवाले हिन्दी अध्यापकों से छात्रों के सामने भाषा अधिगम में आनेवाली समस्याएँ एवं कठिनाइयों का पता चलता है । इन समस्याओं एवं कठिनाइयों का वास्तविक परिणाम छात्रों की भाषा उपलब्धि-परीक्षण के द्वारा प्राप्त हुआ है । इसके अतिरिक्त हिन्दी में पिछड़े हुए छात्र एवं छात्राओं के द्वारा उनकी रुचि, अभिप्रेरणा एवं दृष्टिकोण के साथ साथ भाषायी समस्याओं का ज्ञान भी मौखिक साक्षात्कार से स्पष्ट हुआ है ।

इन तीनों प्रमुख साधनों के अतिरिक्त प्रश्नावली के निर्माण में हिन्दी अध्यापकों से भेंट वार्ता भी की गई हैं परन्तु विषय की दृष्टि से उसकी प्रमुखता गौण रूप से ली गई है ।

इस अध्याय में इन तीनों साधनों का विश्लेषण वैज्ञानिक ढंग से किया गया है ।

**

हिन्दी अध्यापकों की प्रश्नावली

का

विश्लेषण

प्रश्नावली का विश्लेषण

1 अध्यापक का नाम :

शोधकार्य के विषय की दृष्टि से इस प्रश्न का विशेष महत्व नहीं है । इस प्रश्नावली के उत्तर दिये 262 अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के नाम संग्रहीत है । यह प्रश्नावली आन्ध्र प्रान्त में आठवीं कक्षा के द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों को ही भेजी गई है ।

2 आयु :

इस प्रश्नावली को अनुभवी हिन्दी अध्यापकों को भेजा गया है । लगभग 65% अध्यापकों का शैक्षणिक अनुभव 10 वर्ष से ऊपर होना अध्यापकों की शारीरिक आयु का औसत 30 वर्ष से अधिक होना इसकी साक्षी है ।

3 पुरूष तथा स्त्री :

इस प्रश्नावली का उत्तर पुरूष एवं स्त्री हिन्दी अध्यापकों ने समान रूप से दिये हैं । प्रश्नावली के वितरण में स्त्री तथा पुरूष का ध्यान न देकर उनके आठवीं कक्षा को पढ़ाना प्रधान माना गया है ।

4 मातृभाषा :

इस प्रश्नावली के उत्तर दिये 262 हिन्दी अध्यापकों की मातृभाषा तेलुगु है ।

5 विद्यालय का नाम :

इस प्रश्नावली का उत्तर 262 विद्यालयों के हिन्दी अध्यापकों ने दिया है । ~~इन पाठशालाओं के नाम परिशिष्ट संख्या (——) में देखिए~~ ।

6 माध्यम :

यह प्रश्नावली विभिन्न संचालकों के द्वारा संचालित तेलुगु माध्यम की पाठशालाओं क में काम करनेवाले हिन्दी अध्यापकों को भेजी गई है ।

**

7 संचालक : जिसके द्वारा विद्यालय संचालित है उसके सामने यह चिह्न (✓) लगाएँ ।

1 सरकार ( ) 2 नगरपालिका ( )
3 निजी ( ) 4 जिला परिषद् ( )
5 सहायता प्राप्त ( )
6 अन्य

जिले का नाम	सरकार	नगर	निजी	जिला परिषद्	सहायता प्राप्त	अन्य	कुल संख्या
1 श्रीकाकुलम	3	-	-	34	3	-	40
2 विशाखापट्टणम	2	6	2	15	5	1	31
3 पूर्व गोदावरी	2	4	1	17	3	2	29
4 पश्चिम गोदावरी	5	3	1	19	5	-	33
5 कृष्णा	2	5	-	18	3	-	28
6 गुंटूर	3	3	1	19	9	2	37
7 प्रकाशम्	3	-	-	26	5	1	35
8 नेल्लूर	7	-	-	17	5	-	29
संख्या	27	21	5	165	38	6	262
प्रतिशत	10·31	8·02	1·90	62·98	14·50	2·29	100

यह प्रश्न आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापकों के पाठशाला सम्बन्धी विवरण जानने के उद्देश्य से दिया गया था । इसमें प्रधानता पाँच प्रकार की पाठशालाएँ सम्मिलित हैं । प्रश्न के प्राप्त उत्तरों के अनुसार कुल 262 अध्यापकों में से 165 अध्यापक जिला परिषद हाईस्कूल में काम कर रहे हैं जिनका प्रतिशत 62·98 हैं । दूसरा स्थान सहायता प्राप्त पाठशालाओं का है जिनकी संख्या 38 हैं और प्रतिशत 14·50 हैं । प्राप्त विवरण के अनुसार सबसे कम प्रतिशत निजी स्कूलों के हिन्दी अध्यापकों का है जिनकी संख्या 5 हैं और प्रतिशत 1·90 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र के अधिकांश हिन्दी अध्यापक जिला परिषद् हाईस्कूलों में काम कर रहे हैं ।

8 विद्यालय कहाँ स्थित है ?

गाँव/शहर का नाम : तालुके का नाम : जिले का नाम

जिले का नाम	गाँव	शहर	तालूका	जिला	अन्य	योग
1 श्रीकाकुलम	35	4	1	-	-	40
2 विशाखापट्टणम	13	4	14	-	-	31
3 पूर्व गोदावरी	15	10	2	-	2	29
4 पश्चिम गोदावरी	22	5	6	-	-	33
5 कृष्णा	17	6	5	-	-	28
6 गुंटूर	20	7	10	-	-	37
7 प्रकाशम	34	-	-	-	1	35
8 नेल्लूर	21	4	3	-	1	29
संख्या	177	40	41	-	4	262
प्रतिशत	67·56	15·27	15·65	-	1·52	100

यह प्रश्न पाठशालाओं का स्थान-स्थिति (Location) जानने के उद्देश्य से दिया गया था । प्रश्न संख्या 8 की सूची के अनुसार अधिकतर जिला परिषद् हाईस्कूल गाँवों में हैं । इनकी संख्या 177 है और वे कुल स्कूलों में 67·56 प्रतिशत हैं । इसके बाद का स्थान शहरों में स्थित स्कूलों का है जिनका प्रतिशत 15·27 है । तीसरा स्थान उन स्कूलों का है जो तालूकों में स्थित हैं, जिनकी संख्या 41 है और प्रतिशत 15·65 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र में अधिकतर पाठशालाएँ गाँवों में है जिससे छात्रों को हिन्दी सीखने का कम वातावरण प्राप्त होता है ।

9 आपकी शैक्षणिक योग्यता : 1 हाईस्कूल ( )
2 पी0 यू0 सी0 या इन्टर ( ) 3 बी0 ए0 ( )
4 एम0 ए0 ( )

जिला	हाईस्कूल	पी0 यू0 सी0	बी0 ए0	एम0 ए0	अन्य	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	19	4	5	5	3	4	40
2 विशाखापट्टणम	15	4	3	4	-	5	31
3 पूर्व गोदावरी	21	4	1	-	-	3	29
4 पश्चिम गोदावरी	20	3	3	2	-	5	33
5 कृष्णा	19	2	3	1	-	3	28
6 गुंटूर	21	5	3	2	-	6	37
7 प्रकाशम	17	3	5	1	-	9	35
8 नेल्लूर	12	4	4	3	5	1	29
संख्या :	144	29	27	18	8	36	262
प्रतिशत :	54·96	11·07	10·31	6·87	3·05	13·74	100

नववाँ प्रश्न हिन्दी अध्यापकों की शैक्षणिक योग्यता को जानने के लिए दिया गया है । इस प्रश्न के उत्तर के अनुसार आन्ध्र प्रान्त में अधिकतम हिन्दी अध्यापकों की साधारण योग्यता हाईस्कूल स्तर तक की है । कुल 262 शिक्षकों में से उनकी संख्या 144 और उनका प्रतिशत 54·96 है । इसके बाद पी0 यू0 सी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का स्थान आता है । उनकी संख्या 29 हैं और उनका प्रतिशत 11·07 है । इसके अतिरिक्त उच्च योग्यता (एम0 ए0) उत्तीर्ण अध्यापकों की संख्या 18 और जिनका प्रतिशत 6·87 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर हिन्दी अध्यापक हाईस्कूल तक पढ़कर हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त कर हिन्दी अध्यापक बने हैं ।

प्र010 विशेष योग्यता (हिन्दी में)

1 हिन्दी विद्वान ( ) 2 प्रवीण ( )

3 साहित्य रत्न ( ) 4 अन्य ( )

	जिला	विद्वान	प्रवीण	साहित्य रत्न	अन्य	रिक्त	योग
1	श्रीकाकुलम	3	27	8	2	-	40
2	विशाखापट्टणम	7	14	7	-	3	31
3	पूर्व गोदावरी	-	21	1	-	7	29
4	पश्चिम गोदावरी	4	25	2	-	2	33
5	कृष्णा	1	18	3	-	6	28
6	गुंटूर	1	26	9	-	1	37
7	प्रकाशम	3	19	8	-	5	35
8	नेल्लोर	3	16	5	5	-	29
	योग संख्या	22	166	43	7	24	262
	प्रतिशत	8·40	63·36	16·41	2·67	9·16	100

दसवाँ प्रश्न हिन्दी अध्यापकों की विशेष योग्यता मालूम करने के लिए दिया गया था । इसके अनुसार 166 हिन्दी अध्यापक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की उच्च परीक्षा प्रवीण में उत्तीर्ण हैं जिनका प्रतिशत् 63·36 है । आन्ध्र प्रदेश सरकार से मान्यता प्राप्त यह परीक्षा हिन्दी अध्यापकों की विशेष योग्यता के लिए पर्याप्त है । इसके बाद 43 अध्यापक "साहित्य रत्न" हैं, जो बी0 ए0 (आनर्स) के समकक्ष हैं । इस परीक्षा में उत्तीर्ण अध्यापकों का प्रतिशत् 16·41 है । इसके अतिरिक्त 'विद्वान' उपाधि रखनेवालों की संख्या 22 है और उनका प्रतिशत 8·40 है । अन्य हिन्दी योग्यताएँ रखनेवालों की संख्या 7 है और उनका प्रतिशत् 2·67 मात्र है ।

इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कुल 262 अध्यापकों में से हिन्दी पढ़ाने की योग्यता रखनेवालों की संख्या 231 है, जो पर्याप्त है ।

11 शैक्षणिक योग्यता :

1) हिन्दी पंडित ( ) 2) प्रचारक ( ) 3) बी0 एड0 ( )

4) एम0 एड0 ( ) 5) अन्य

जिले का नाम	हिन्दी पंडित	प्रचारक	बी0 एड0	एम0 एड0	अन्य	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	17	15	1	-	7	-	40
2 विशाखापट्टनम	15	11	1	-	-	4	31
3 पूर्व गोदावरी	15	11	-	-	-	3	29
4 पश्चिम गोदावरी	20	13	-	-	-	-	33
5 कृष्णा	7	18	1	-	-	2	28
6 गुंटूर	9	26	-	-	-	2	37
7 प्रकाशम	12	15	1	-	-	7	35
8 नेल्लूर	11	13	3	-	2	-	29
संख्या :	106	122	7	-	9	18	262
प्रतिशत :	40·46	46·56	2·67	-	3·44	6·87	100

यह प्रश्न हिन्दी अध्यापकों की शैक्षणिक योग्यता जानने के उद्देश्य से दिया गया है, जो शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुल 262 हिन्दी अध्यापकों में से 122 अध्यापक, प्रचारक योग्यता रखते हैं जिनका प्रतिशत 46·56 है और 106 अध्यापक हिन्दी पंडित योग्यता रखते हैं जिनका प्रतिशत 40·46 है। आन्ध्र प्रदेश सरकार की मान्यता प्राप्त शैक्षणिक योग्यताओं में हिन्दी पंडित एवं प्रचारक दोनों ही सम्मिलित हैं। इस दृष्टि से कुल संख्या 228 अध्यापक हिन्दी में शैक्षणिक योग्यता रखते हैं जिनका प्रतिशत 87·01 है। बी0 एड0 की योग्यता रखनेवाले अध्यापक केवल 7 हैं जिनका प्रतिशत 2·67 है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक योग्यता की दृष्टि से इस प्रान्त में अध्यापक पर्याप्त हैं।

12 शैक्षणिक अनुभव :

1 हिन्दी क्षेत्रों में (   ) वर्ष 2 अहिन्दी क्षेत्रों में (   )वर्ष

जिले का नाम	हिन्दी क्षेत्रों में	अहिन्दी क्षेत्रों में	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	-	40	-	40
2 विशाखापट्टणम	4	27	-	31
3 पूर्व गोदावरी	7	20	2	29
4 पश्चिम गोदावरी	6	27	-	33
5 कृष्णा	8	20	-	28
6 गुंटूर	7	30	-	37
7 प्रकाशम	4	31	-	35
8 नेल्लूर	4	22	3	29
संख्या	40	217	5	262
प्रतिशत	15•27	82•82	1•91	100

यह प्रश्न अध्यापकों का हिन्दी तथा अहिन्दी प्रदेशों में शैक्षिक अनुभव जानने के उद्देश्य से दिया था। प्रश्न संख्या सूची 12 से यह स्पष्ट होता है कि कुल संख्या 262 में से 217 संख्यक अध्यापक जिनका प्रतिशत् 82•82 है केवल आन्ध्र प्रान्त में ही शैक्षिक अनुभव रखते हैं। हिन्दी क्षेत्रों में अध्यापन कार्य केवल 40 अध्यापकों ने किया जिनका प्रतिशत् केवल 15•27 हैं। इसके बाद 5 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट नहीं किया है जिनका प्रतिशत 1•91 मात्र हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिक संख्यक अध्यापक अहिन्दी क्षेत्रों में ही पढ़ाने का शैक्षिक अनुभव क रखते हैं।

13 द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का अनुभव (   ) वर्ष

जिले का नाम	अध्यापक का अनुभव (वर्षों में)						रिक्त	योग
	1-5	6-10	11-15	16-20	21-25	26-30		
1 श्रीकाकुलम	3	9	6	8	-	-	14	40
2 विशाखापट्टणम	2	10	8	7	4	-	-	31
3 पूर्व गोदावरी	4	3	11	2	6	1	2	29
4 पश्चिम गोदावरी	5	8	10	4	2	4	-	33
5 कृष्णा	2	6	6	6	4	4	-	28
6 गुंटूर	2	5	11	10	5	2	2	37
7 प्रकाशम	4	14	10	3	-	1	3	35
8 नेल्लूर	4	10	7	1	4	-	3	29
संख्या	26	65	69	41	25	12	24	262
प्रतिशत	9•92	24•81	26•34	15•65	9•54	4•58	9•16	100

यह प्रश्न आन्ध्र प्रान्त में ~~प्रकाशमेल पढ़ानेवाले अध्यापक~~, हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाने का अनुभव जानने के लिए दिया गया है । प्रश्न ~~सूसंख्या~~ सूची 13 के अनुसार 69 अध्यापक जिनका प्रतिशत 26•34 है जो 11-15 वर्ष का शैक्षिक अनुभव रखते हैं और इसके बाद दूसरा स्थान उन अध्यापकों का है जिनकी संख्या 65 है और उनका प्रतिशत 24•81 है इन अध्यापकों का शैक्षिक अनुभव ~~रखते हैं जिनका प्रतिशत~~ 6-10 वर्ष के प्रसार में है । इसके बाद 25 अध्यापक 21-25 के बीच द्वितीय भाषा शिक्षा का अनुभव रखते हैं जिनका प्रतिशत 9•54 है । सबसे कम शैक्षिक अनुभव रखनेवाले अध्यापकों की संख्या 26 है उनका प्रतिशत 9•92 मात्र हैं ।

इससे यह पता चलता है कि बहु संख्यक उत्तरदाता द्वितीय भाषा के रूप में शैक्षणिक अनुभव 11-15 वर्ष के ~~बीच~~ प्रसार में रखते हैं ।

14 आपको कभी हिन्दी प्रदेशों में रहने का अवसर मिला है ?

(1) हाँ ( ) (2) नहीं ( ) (3) यदि हाँ, तो कितने वर्ष ( )

	1 हाँ	2 नहीं	वर्ष	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	6	34	-	-	40
2 विशाखापट्टणम	10	17	-	4	31
3 पूर्व गोदावरी	5	22	-	2	29
4 पश्चिम गोदावरी	2	31	-	-	33
5 कृष्णा	4	22	-	2	28
6 गुंटूर	5	27	1	4	37
7 प्रकाशम	3	28	2	2	~~29~~ 35
8 नेल्लूर	4	25	-	-	29
संख्या	39	206	3	14	262
प्रतिशत	14·89	78·63	1·14	5·34	100

यह प्रश्न अध्यापकों के हिन्दी प्रदेशों में रहने का शैक्षिक अनुभव जानने के लिए दिया गया है । इससे उन अध्यापकों का उच्चारण, वाक्य संरचना आदि का प्रभाव उनकी भाषा पर होता है । भाषा तो सहज [illegible] वातावरण में ही ठीक ढंग से सीखी जा सकती है । परन्तु प्रश्न संख्या सूची 14 के अनुसार कुल 262 अध्यापकों में से 206 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 78·63 ऐसे हैं जो हिन्दी प्रदेशों में कभी भी नहीं रहे हैं । केवल 39 अध्यापक जिनका प्रतिशत 14·89 है उनको हिन्दी प्रदेशों में एक वर्ष के अन्तर्गत रहने का अवसर मिला है ।

इससे हमें यह ज्ञात होता है कि इस प्रान्त के अधिकतर अध्यापक अहिन्दी प्रदेशों में ही अपना अधिकतर समय बिताया है ।

15 आप कुल कितनी भाषाएँ जानते हैं ? (✓) चिह्न के द्वारा निर्देश करें –

(1) तेलुगु ( ) (2) हिन्दी ( ) (3) अंग्रेजी ( )
(4) उर्दू ( ) (5) तमिल ( ) (6) कन्नड़ ( )
(7) अन्य

	तेलुगु	हिन्दी	अंग्रेजी	उर्दू	तमिल	कन्नड	अन्य	योग
संख्या :	176	176	40	44	2	-	-	262
प्रतिशतः	67·17	67·17	15·26	16·79	0·76	-	-	100

यह प्रश्न अध्यापकों के भाषा ज्ञान जानने के उद्देश्य से दिया गया है । इस प्रश्न की विश्लेषण सूची से यह ज्ञात होता है कि कुल संख्या 262 में से 176 अध्यापक तेलुगु तथा हिन्दी भाषाएँ जानते हैं इनका प्रतिशत 67·17 है । इन दोनों भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा जानने वाले हिन्दी अध्यापकों की संख्या 40 है उनका प्रतिशत 15·26 है । इन तीन भाषाओं के अतिरिक्त 44 अध्यापक उर्दू भी जानते हैं, उनका प्रतिशत 16·79 है । तमिल जाननेवालों की संख्या 2 है उनका प्रतिशत 0·76 मात्र है ।

इससे स्पष्ट है कि अधिकतर हिन्दी अध्यापक हिन्दी के साथ साथ मातृभाषा का ज्ञान ही अधिक रखते हैं ।

16 आप किन-किन कक्षाओं को हिन्दी पढ़ाते हैं ? (✓) चिह्न के द्वारा निर्देश करें :-

(1) 6 वीं (   ) (2) 7 वीं (   ) (3) 8 वीं (   )
(4) 9 वीं (   ) (5) 10वीं (   )

	(6 वीं से 10)	(7 वीं से 10)	(8 वीं से 10)	योग
अध्यापक	191	2	69	= 262
प्रतिशत	72•90	0•76	26•34	= 100

यह प्रश्न अध्यापक के कक्षागत अनुभव जानने के उद्देश्य से दिया गया है । उक्त प्रश्न संख्या 16 की सूची से यह ब पता चलता है कि 6वीं से लेकर 10 वीं कक्षा तक पढ़ाने वालों की संख्या 191 है जिनका प्रतिशत् 72•90 हैं । 7 वीं से 10 वीं तक पढ़ानेवाले अध्यापकों की संख्या 2 है जिनका प्रतिशत 0•76 मात्र है और 8वीं से 10 वीं क तक पढ़ानेवाले अध्यापकों की संख्या 69 हैं जिनका प्रतिशत् 26•34 है ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रश्नावली के सभी के सभी उत्तरदाता 8वीं कक्षा को हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाते हैं ।

17 आपके विद्यालय में हिन्दी की कौन-सी पत्रिकाएँ आती हैं ?

(1) धर्मयुग ( ) (2) हिन्दुस्तान साप्ताहिक ( )

(3) नवनीत ( ) (4) अन्य ··· ········ (5) अप्राप्य (

जिला	धर्मयुग	हिन्दुस्तान साप्ताहिक	नवनीत	अन्य	अप्राप्य	योग
	1	2	3	4		
1 श्रीकाकुलम	6	-	1	11	22	40
2 विशाखापट्टणम	7	2	1	-	21	31
3 पूर्व गोदावरी	3	-	-	-	26	29
4 पश्चिम गोदावरी	3	-	-	-	30	33
5 कृष्णा	3	1	-	-	24	28
6 गुंटूर	3	1	-	-	33	37
7 प्रकाशम	2	-	-	-	33	35
8 नेल्लूर	1	-	-	5	23	29
संख्या	28	4	2	16	212	262
प्रतिशत	10·69	1·52	0·76	6·11	80·92	100

इस प्रश्न के द्वारा शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि आन्ध्र के हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध होती है या नहीं । प्रश्न संख्या सूची 17 के अनुसार यह ज्ञात होता है कि कुल 262 अध्यापकों में से 212 अध्यापक जिनका प्रतिशत 80·92 है उनकी पाठशालाओं में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ अप्राप्य हैं । कुल संख्या में केवल 28 अध्यापक जिनका प्रतिशत 10·69 हैं उनको हिन्दी का साप्ताहिक, धर्मयुग पढ़ने का मौका मिलता हैं । इसके अतिरिक्त हिन्दी साप्ताहिक 4 पाठशालाओं में मंगाते हैं जिनका प्रतिशत 1·52 है और नवनीत 2 पाठशालाएँ मंगाती है जिनका प्रतिशत 0·76 प्राप्य है । कुल संख्या की दृष्टि से इसका कोई विशेष मूल्य नहीं है ।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि बहुसंख्यक हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ पाठशालाओं में अप्राप्य हैं ।

18 आप हिन्दी पुस्तकों पर एक वर्ष में कितना खर्च करते हैं ?

(1) 10 रुपये ( ) (2) 25 रुपये ( )

(3) 50 रुपये ( ) (4) अन्य

जिला	रुपये 10/- (1)	रुपये 25/- (2)	रुपये 50/- (3)	अन्य (4)	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	20	5	5	5	5	40
2 विशाखापट्टणम	7	5	9	-	10	31
3 पूर्व गोदावरी	7	10	3	-	9	29
4 पश्चिम गोदावरी	12	6	3	-	12	33
5 कृष्णा	5	8	5	-	10	28
6 गुंटूर	10	13	6	-	8	37
7 प्रकाशम	19	6	5	-	5	35
8 नेल्लूर	10	8	1	3	7	29
संख्या	90	61	37	8	66	262
प्रतिशत	34•36	23•28	14•12	3•05	25•19	100

यह प्रश्न अध्यापकों की हिन्दी के प्रति रुचि आदि जानने के उद्देश्य से दिया गया है । प्रश्न संख्या 18 की सूची के अनुसार 66 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 25•19 है । इन प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है। कुल संख्या 262 अध्यापकों में से 90 अध्यापक जिनका प्रतिशत 34•36 हैं । एक वर्ष में केवल 10 रूपये खर्च करते हैं । इसके बाद 61 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 23•28 हैं प्रति वर्ष 25 रूपये खर्च करते हैं । इसके बाद 37 अध्यापक जिनका प्रतिशत 14•12 है, 50 रूपये खर्च करते हैं । अगर हम प्रश्न 18 में, क्रम संख्या एक के अध्यापक केवल प्रति मास 10 रूपये से कम खर्च करते हैं और हिन्दी कु की पुस्तकों पर बिलकुल खर्च न करनेवालों की संख्या 66 को जोड़कर अध्ययन करने से यह पता चलता है कि हिन्दी अध्यापक हिन्दी पुस्तकों को खरीदने में बहुत ही कम रूपये खर्च करते हैं । इससे अध्यापकों की रुचि के साथ साथ उनकी आर्थिक स्थिति का भी आभास प्राप्त होता है ।

19 आपकी सबसे अधिक समस्याएँ किस कक्षा को पढ़ाते समय आती है ?

(1) 8वीं ( ) (2) 9वीं ( )

(3) दसवीं ( ) (4) अन्य ......

जिला	8वीं	9वीं	10वीं	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	11	12	13	4	40
2 विशाखपट्टणम	24	7	-	-	31
3 पूर्व गोदावरी	21	8	-	-	29
4 प • गोदावरी	24	9	-	-	33
5 कृष्णा	21	5	2	-	28
6 गुंटूर	24	8	5	-	37
7 प्रकाशम्	19	10	6	-	35
8 नेल्लूर	6	17	6	-	29
योग संख्या	150	76	32	4	262
प्रतिशत	57•25	29•01	12•21	1•53	100

यह प्रश्न शोधकर्ता के शोधकार्य से घनिष्ठ संबंध रखता है । इस प्रश्न के द्वारा शोधकर्ता ने यह जानना चाहा कि अध्यापकगण किस कक्षा को पढ़ाने में अधिक समस्याएँ सामने आती है । प्रश्न संख्या 19 की सूची के अनुसार 262 अध्यापकों में से 150 अध्यापक जिनका प्रतिशत 57•25 है वे आठवीं कक्षा के स्तर पर अधिक समस्याओं का अनुभव करते हैं इसके बाद 76 अध्यापक जिनका प्रतिशत 29•01 है, जो 9वीं के स्तर पर समस्याओं का सामना करते हैं । संख्या की तुलना में केवल 32 अध्यापक जिनका प्रतिशत 12•21 हैं जो 10वीं कक्षा को पढ़ाते समय अधिक समस्याओं का अनुभव करते हैं शेष अध्यापकों की तुलना अप्रासंगिक है ।

बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के उत्तर से यह पता चलता है कि आठवीं कक्षा को पढ़ाते समय अध्यापक कई समस्याओं और इनसे सम्बन्धित कठिनाइयों का अनुभव करते हैं ।

20 हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए छात्रों को कितने अंक प्राप्त करने चाहिए ?

(1) 25 प्रतिशत ( ) (2) 20 प्रतिशत ( )

(3) 35 प्रतिशत ( ) (4) 15 प्रतिशत ( )

(5) अन्य

जिला	25 प्रतिशत (1)	20 प्रतिशत (2)	35 प्रतिशत (3)	15 प्रतिशत (4)	अन्य	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	5	21	11	1	2	-	40
2 विशाखापट्टणम	4	12	8	2	-	5	31
3 पूर्व गोदावरी	3	18	8	-	-	-	29
4 पश्चिम गोदावरी	2	18	5	4	-	4	33
5 कृष्णा	1	18	6	2	-	1	28
6 गुंटूर	2	23	10	2	-	-	37
7 प्रकाशम	1	23	7	-	-	4	35
8 नेल्लूर	3	18	8	-	-	-	29
संख्या	21	151	63	11	2	14	262
प्रतिशत	8·02	57·63	24·05	4·20	0·76	5·34	

हिन्दी अध्यापकों के निजी उद्देश्य को जानने के लिए यह प्रश्न पूछा गया है कि । प्रश्न संख्या 20 की सूची के अनुसार कुल संख्या 262 में 151 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 57·63 है हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए 20 अंक पर्याप्त माना है । इसके बाद 63 अध्यापक जिनका प्रतिशत 24·05 है छात्रों को 35 अंक प्राप्त करना आवश्यक समझते हैं । अन्य अध्यापकों की संख्या गौण रूप में ली जाती है ।

अधिकतम संख्या के अध्यापकों का यह अभिप्राय है कि आन्ध्र के छात्रों को हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए 20% अंक प्राप्त करना पर्याप्त है ।

21 गत तीन वर्षों से आठवीं कक्षा के उत्तीर्ण प्रतिशत क्या है ?

1973 1974 1975

उत्तीर्ण प्रतिशत (8 वीं कक्षा)
(1973, 1974, 1975)

		75% उपस्थिति के आधार पर उत्तीर्ण माना जाता है ।	योग
1	श्रीकाकुलम	- वही -	40
2	विशाखापट्टणम	- वही -	31
3	पूर्व गोदावरी	- वही -	29
4	पश्चिम गोदावरी	- वही -	33
5	कृष्णा	- वही -	28
6	गुंटूर	- वही -	37
7	प्रकाशम	- वही -	35
8	नेल्लूर	- वही -	29
	संख्या :		262
	प्रतिशत् :		100

यह प्रश्न 8 वीं कक्षा के गत तीन वर्षों के उत्तीर्ण प्रतिशत जानने के उद्देश्य से अध्यापकों से पूछा गया है । कुल 262 अध्यापकों ने शत प्रतिशत् यह विचार प्रकट किया है कि 8वीं कक्षा में छात्रों की कक्षा की उपस्थित कम से कम 75% हो तो उनको उत्तीर्ण माना जाता है ।

सरकार की इस नीति से यह पता चलता है कि हिन्दी की प्रगति एवं विकास के प्रति उनका विशेष ध्यान नहीं और हिन्दी में उत्तीर्ण होना न होना उनके लिए अप्रमुख है ।

22 आप सप्ताह में हिन्दी शिक्षण के लिए कितने घण्टों का होना आवश्यक समझते हैं ?

(1) दो घण्टे ( ) (2) तीन घण्टे (3) चार घण्टे ( )

(4) पाँच घण्टे ( ) (5) छः घण्टे ( ) (6) अन्य ....

जिला	दो घण्टे 1	तीन घण्टे 2	चार घण्टे 3	पाँच घंटे 4	छः घंटे 5	अन्य	रिक्त यों	
1 श्रीकाकुलम	1	5	5	13	13	-	3	40
2 विशाखपट्टणम	1	2	4	8	12	-	5	31
3 पूर्व गोदावरी	-	2	7	9	9	-	2	29
4 प० गोदावरी	-	3	4	8	13	-	5	33
5 कृष्णा	-	3	7	6	10	-	2	28
6 गुन्टूर	-	4	11	7	13	-	2	37
7 प्रकाशम	-	1	11	7	14	-	2	35
8 नेल्लूर	-	-	12	6	9	2	-	29
संख्या	2	20	61	64	93	2	20	262
प्रतिशत	0·76	7·63	23·29	24·43	35·50	·76	7·63	100

हिन्दी शिक्षण के लिए 8वीं कक्षा के छात्रों को कितना समय पर्याप्त है यह जानने के लिए पूछा गया । प्रश्न संख्या सूची-22 के अनुसार यह पता चलता है कि 262 अध्यापकों में से 93 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 35·50 हैं, इनका मत है कि हिन्दी शिक्षण के लिए सप्ताह में छः घण्टे हों । इसके बाद दूसरा स्थान उन अध्यापकों अध्यापकों को दिया जाता है जिनकी संख्या 64 और उनका प्रतिशत् 24·43 है जिन्होंने हिन्दी शिक्षण के लिए सप्ताह में पाँच घण्टों का होना आवश्यक समझा है । उक्त तालिका में तीसरे पद के अन्तर्गत 61 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 23·29 हैं उन्होंने चार घण्टे होना आवश्यक समझा है ।

इस प्रकार बहुसंख्यक उत्तर से यह प्रकट होता है कि हिन्दी शिक्षण के लिए सप्ताह में कम से कम छः घण्टे होना आवश्यक है । यह आवश्यक है कि व्यक्ति, भाषा को निरन्तर अभ्यास से ही जल्दी सीख सकता है ।

23 तेलुगु भाषा भाषियों के लिए हिन्दी शिक्षण किस कक्षा से आरंभ करना चाहिए ?

(1) पाँचवी ( ) (2) छठवीं ( ) (3) सातवीं ( )

(4) चौथी ( ) (5) अन्य

जिला	5 वीं 1	6 वीं 2	7 वीं 3	4 थी 4	अन्य 5	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	29	3	-	6	1	1	40
2 विशाखापट्टणम	16	6	-	7	-	2	31
3 पूर्व गोदावरी	14	8	-	7	-	-	29
4 पश्चिम गोदावरी	17	6	-	7	1	2	33
5 कृष्णा	14	8	-	4	-	2	28
6 गुंटूर	21	8	1	4	-	3	37
7 प्रकाशम	18	11	-	5	-	1	35
8 नेल्लूर	24	5	-	-	-	-	28
संख्या :	153	55	1	40	2	11	262
प्रतिशत् :	58·40	20·99	0·38	15·27	0·76	4·20	100

यह प्रश्न हिन्दी भाषा के आरंभ स्तर को जानने की दृष्टि से पूछा गया है । उपर्युक्त तालिका 23 के अनुसार 262 कुल संख्या में 153 अध्यापक जिनका प्रतिशत 58·40 है इनका मत है कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का शिक्षण पाँचवी कक्षा से आरंभ किया जाये । इसके बाद 55 अध्यापक जिनका प्रतिशत 20·99 है इनका मत है कि हिन्दी का अध्यापन 6वीं कक्षा से प्रारंभ किया जाये । इसके बाद 40 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 15·27 है इनका मतानुसार हिन्दी का अध्यापन चौथी कक्षा से प्रारंभ होना चाहिए ।

रिक्त उत्तरदाताओं के उत्तर को छोड़कर बहुसंख्यक उत्तर के आधार से इस निष्कर्ष पर आ सकते हैं कि हिन्दी शिक्षण आन्ध्र प्रान्त में 5वीं कक्षा से ही आरंभ करना चाहिए ।

24 हिन्दी कक्षा में छात्रों की संख्या कितनी होनी चाहिए ?

(1) 40 ( ) (2) 35 ( ) (3) 25 ( )

(4) 45 ( ) (5) अन्य

जिला	40	35	25	45	अन्य	रिक्त	योग
1 श्रीकाकुलम	2	10	26	1	1	-	40
2 विशाखापट्टणम	-	17	8	5	-	1	31
3 पूर्व गोदावरी	3	11	15	-	-	-	29
4 पश्चिम गोदावरी	1	15	16	-	-	1	33
5 कृष्णा	1	12	12	-	-	3	28
6 गुंटूर	4	19	14	-	-	-	37
7 प्रकाशम्	2	10	21	-	-	2	35
8 नेल्लूर	1	12	16	-	-	-	29
संख्या	14	106	128	6	1	7	262
प्रतिशत्	5·34	40·46	48·85	2·29	0·38	2·68	100

हिन्दी शिक्षण सुचारु रूप से देने में कक्षा की संख्या भी विशेष स्थान रखती हैं । इस संख्या को जानने के उद्देश्य से यह प्रश्न पूछा गया है । कुल 262 अध्यापकों में से 128 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 48·85 है जिन्होंने हिन्दी कक्षा में कमसे कम 25 छात्रों की आवश्यकता पर अपना मत प्रकट किया है इसके बाद 106 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 40·46 हैं इनके विचार में कक्षा की संख्या 35 का होना आवश्यक समझा है ।

बहुसंख्यक उत्तर दाताओं ने कक्षा की संख्या 25 रहने का विचार रखते हैं । अन्य उत्तरों को गौण रूप में लिया जा सकता है ।

25 क्या हिन्दी ने भारत में राष्ट्रभाषा का सही स्थान प्राप्त किया है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	59	163	32	8	262
प्रतिशत	22·52	62·21	12·22	3·05	100

यह प्रश्न राष्ट्रभाषा के वास्तविक स्थान को हिन्दी अध्यापकों से जाने की दृष्टि से पूछा गया है । प्रश्न संख्या सूची 25 के अनुसार 262 उत्तरदाताओं में से 163 उत्तरदाताओं ने जिनका प्रतिशत 62·21 है नकारात्मक उत्तर दिया है । इसके बाद 59 उत्तरदाताओं ने जिनका प्रतिशत 22·52 है जिन्होंने हिन्दी के राष्ट्रभाषा का सही स्थान प्राप्त होने के संदर्भ में अपनी सम्मति प्रकट की है । 32 उत्तरदाताओं ने जिनका प्रतिशत 12·22 है अपनी संदिग्धता प्रकट की है ।

सर्वमान्य मत के अनुसार आन्ध्र के हिन्दी अध्यापकों की यह धारणा है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सही स्थान प्राप्त नहीं हुआ है ।

26 क्या सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी व्यवृत है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	111	94	46	11	262
प्रतिशत	42·37	35·88	17·56	4·19	100

हिन्दी की सम्पर्क भाषा का स्थान जानने के उद्देश्य से यह प्रश्न पूछा गया है । प्रश्न संख्या सूची 26 के अनुसार कुल 262 हिन्दी अध्यापकों में से 111 हिन्दी अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 42·37 हैं अपनी सम्मति प्रकट की और 94 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 35·88 है जिन्होंने अपनी असम्मति प्रकट की हैं । 46 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 17·56 हैं संदिग्धता व्यक्त की हैं । शेष 11 अध्यापक उत्तर नहीं दिये हैं ।

इससे यह पता चलता है कि बहुसंख्यक अध्यापकों का यह मत है कि हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहृत नहीं है ।

27 क्या त्रिभाषा सूत्र का सही पालन आन्ध्र प्रदेश में हो रहा है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	72	172	18	-	262
प्रतिशत	27·48	65·65	6·87	-	100

यह प्रश्न त्रिभाषा सूत्र के सही पालन के सन्दर्भ में पूछा गया है । सूची-27 के अनुसार 262 कुल संख्या में 172 उत्तरदाताओं ने आन्ध्र प्रदेश में त्रिभाषा सूत्र के सही पालन नहीं होने पर अपनी सम्मति प्रकट की है जिनका प्रतिशत 65·65 है । दूसरा स्थान उन 72 अध्यापकों का है जिन्होंने इस प्रश्न पर अपनी सम्मति प्रकट की है । उनका प्रतिशत 27·48 है । इस संदर्भ में 18 अध्यापकों ने संदिग्धता व्यक्त की है । इनका प्रतिशत 6·87 है ।

अधिकतर उत्तरदाताओं का मत यह है कि आन्ध्र प्रदेश में त्रिभाषा-सूत्र का सही पालन नहीं हो रहा है ।

28 क्या हिन्दी प्रचार एवं प्रसार में आन्ध्र प्रदेश सरकार की नीति स्पष्ट है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	127	86	41	8	262
प्रतिशत	48·47	32·82	15·66	3·05	100

हिन्दी भाषाके प्रचार एवं प्रसार के संदर्भ में आन्ध्र प्रदेश सरकार की नीति जानने के उद्देश्य से यह प्रश्न पूछा गया है । कुल संख्या 262 में 127 अध्यापकों ने स्पष्ट रहने के पक्ष में अपना मत किया है । जिनका प्रतिशत् 48·47 है । इसके बाद 86 अध्यापकों ने सरकार की नीति को अस्पष्ट बताया है जिनका प्रतिशत 32·82 है । 41 उत्तरदाताओं ने संदिग्धता व्यक्त की है । इस सन्दर्भ में 8 अध्यापकों ने इस प्रश्न पर अपना कोई विचार प्रकट नहीं किया है ।

बहुसंख्यक उत्तर से यह पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार का हिन्दी प्रचार एवं प्रसार की नीति स्पष्ट है ।

29 क्या आन्ध्र प्रदेश का न शैक्षणिक वातावरण हिन्दी के अनुकूल है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	109	135	12	6	262
प्रतिशत्	41·60	51·53	4·58	2·29	100

हिन्दी पर आन्ध्र प्रदेश के शैक्षिक वातावरण का प्रभाव जानने के हेतु यह प्रश्न पूछा गया है । इस सन्दर्भ में 135 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 51·53 है जिन्होंने यह विचार प्रकट किया है कि आन्ध्र प्रदेश का शैक्षिक वातावरण हिन्दी के अनुकूल नहीं है । 109 उत्तरदाताओं ने जिनका प्रतिशत् 41·60 हैं । शैक्षिक वातावरण की अनुकूलता पर अपनी सम्मति दी हैं । 12 उत्तरदाता जिनका प्रतिशत् 4·58 हैं इस सन्दर्भ में संदिग्ध हैं ।

बहुसंख्यक मत यह है कि आन्ध्र प्रदेश का शैक्षणिक वातावरण हिन्दी के अनुकूल नहीं है ।

30 क्या आन्ध्र प्रदेश की सरकार ने हिन्दी को हर स्तर पर अनिवार्य बनाया है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	111	129	15	7	262
प्रतिशत्	42·37	49·24	5·72	2·67	100

शिक्षा के स्तर पर हिन्दी के अनिवार्य शिक्षण को दृष्टि में रखकर यह प्रश्न पूछा गया है । प्रश्न संख्या 30 की सूची के अनुसार कुल 262 अध्यापकों में से 129 अध्यापक जिनका प्रतिशत् ≥49·24 हैं उनका मत यह है कि हिन्दी को आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हर स्तर पर अनिवार्य नहीं बनाया है । परन्तु 111 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 42·37 हैं अनिवार्यता के पक्ष में अपना विचार प्रकट किया है । इस सन्दर्भ में 15 अध्यापक जिनका प्रतिशत 5·72 हैं जो स्तब्ध हैं ।

उक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हिन्दी को शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य नहीं बनाया ।

31 क्या आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को हिन्दी सीखने में कुछ प्रयोजन है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	230	15	13	4	262
प्रतिशत्	87·79	5·73	4·96	1·52	100

छात्रों के लिए हिन्दी सीखना कहाँ तक प्रयोजन है इसको दृष्टि में रखकर हिन्दी अध्यापकों से प्रश्न पूछा गया है । कुल संख्या में 230 अध्यापकों ने, जिनका प्रतिशत् 87·79 है । हिन्दी के प्रयोजन पर अपनी सम्मति सम्मति दी है और 15 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 5·73 हैं इस प्रश्न पर असहमत हैं उनकी संख्या बहुत कम है ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापकों ने छात्रों को हिन्दी सीखने में प्रयोजन का अनुभव किया है ।

32 क्या आन्ध्र के छात्र हिन्दी रुचि के साथ सीखते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	71	161	28	2	262
प्रतिशत्	27·10	61·45	10·69	0·76	100

हिन्दी सीखने के प्रति छात्रों की रुचि जानने के लिए अध्यापकों से यह प्रश्न पूछा गया है । कुल संख्या 262 में से 161 अध्यापकों का विचार है कि छात्रों को हिंदी सीखने में रुचि नहीं हैं इनका प्रतिशत् 61·45 है । 71 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 27·10 है । हिन्दी के प्रति छात्रों की रुचि रहने के पक्ष में अपना विचार प्रकट किया है । 28 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 10·69 इस प्रश्न पर संदिग्ध हैं ।

ऊपर दी गयी तालिका के विश्लेषण से यह पता चलता है कि छात्रों की रुचि सीखने के प्रति बहुत कम है ।

33 क्या आपके विद्यालय में आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या:	131	115	15	1	262
प्रतिशत्	50·00	43·89	5·73	0·38	100

यह प्रश्न अ शोधकर्ता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इसका संबंध उनकी पूर्व कल्पना से है । प्रश्न संख्या 33 की सूची के अनुसार 131 अध्यापकों के विचार से यह व्यक्त हुआ है कि आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर हैं । इस प्रश्न के उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 50·00 है । दूसरा स्थान उन 115 अध्यापकों का है जिन्होंने इस प्रश्न पर असम्मति प्रकट की है । उनका प्रतिशत 43·89 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 15 है जिनका प्रतिशत् 5·73 है ।

बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के विचार से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि आन्ध्र प्रान्त में पढ़नेवाले 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर हैं ।

34 क्या छात्र हिन्दी भाषा को सुनकर समझ सकते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	93	144	22	3	262
प्रतिशत् :	35·50	54·96	8·40	1·14	100

छात्रों के श्रवण तथा अवगाहन को दृष्टि में रखकर यह प्रश्न हिन्दी अध्यापकों से पूछा गया है । कुल संख्या में से 144 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि छात्र हिन्दी को सुनकर समझ नहीं सकते हैं । इनका प्रतिशत् 54·96 हैं । इसके विपरीत मत 93 अध्यापकों ने प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 35·50 है । इस प्रश्न पर 22 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 8·40 है जो अपनी संदिग्धता व्यक्त की है ।

बहुमत अध्यापकों का यह विचार है कि छात्र हिन्दी को सुनकर समझ नहीं सकते हैं ।

35 क्या वे हिन्दी में वार्तालाप कर सकते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्याः	41	196	20	5	262
प्रतिशत्	15·65	74·81	7·63	1·91	100

यह प्रश्न छात्रों की अभिव्यक्ति कुशलता को जानने के उद्देश्य से आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापकों से पूछा गया है । प्रश्न सूची संख्या 35 के विश्लेषण के आधार से यह पता चलता है कि कुल 262 अध्यापकों में से 196 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 74·81 है यह विचार प्रकट किया है कि छात्र हिन्दी में वार्तालाप नहीं कर सकते हैं । इसमें 41 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 15·65 है छात्रों की वार्तालाप कुशलता का समर्थन किया है । इनमें 20 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 7·63 है, संदिग्ध है ।

उक्त विश्लेषण इस बात का साक्षी है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र हिन्दी में वार्तालाप नहीं कर सकते हैं ।

19

36 क्या वे सस्वर वाचन कर सकते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	74	171	14	3	262
प्रतिशत्	28·24	65·27	5·34	1·15	100

इस प्र

यह प्रश्न छात्रों के वाचन कौशल को जानने के उद्देश्य से पूछा गया है । प्रश्न संख्या 36 की सूची के अनुसार 171 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 65·27 है उनका मत है छात्र सस्वर वाचन नहीं कर सकते हैं । इस पर 74 अध्यापकों ने अपनी सम्मति प्रकट की हैं जिनका प्रतिशत् 28·24 हैं । तीसरा स्थान उन अध्यापकों का है जो संख्या में 14 और जिनका प्रतिशत् 5·34 है इस प्रश्न पर संदिग्ध विचार रखते हैं । तीन अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 1·15 अपना कोई विचार प्रकट नहीं किया है ।

बहुमत विचार से यह ज्ञात होता है है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र सस्वर वाचन नहीं कर सकते हैं ।

37. क्या आठवी कक्षा के छात्र सरल तथा शुध्द भाषा में अपने विचारों को लिख-करके प्रकट कर सकते है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त
संख्या	71	163	23	5
प्रतिशत्	27.10	62.21	8.78	1.91

यह प्रश्न छात्रो के लेखन कौशल को जानने के लिए अध्यापकों से पूछा गया है । प्रश्न संख्या 37 की तालिका से यह ज्ञात होता है कि 262 अध्यापकों मे से 163 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 62.21 है उनके विचार से छात्र लेखन कौशल मे कमजोर है । दूसरा स्थान उन 71 अध्यापकों का है जिन्होने छात्रों के लेखन कौशल की दक्षता पर अपना विचार प्रगट किया है, उनका प्रतिशत् 27.10 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 23 है जिनका प्रतिशत् 8.78 है ।

उक्त विचारों को दृष्टि में रखकर इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र लेखन कौशल मे कमजोर है ।

38. क्या छात्र संयुक्ताक्षर आदि शब्द लिखने मे गलतियाँ करते है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	168	77	15	2	262
प्रतिशत्	64.12	29.39	5.73	0.73	100

इसके अन्तर्गत छात्रों के संयुक्ताक्षर का ज्ञान जानने का उद्देश्य निहित है । सूची के विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल संख्या में 168 अध्यापकों के जिनका प्रतिशत् 64.12 है उनके विचार से छात्रों को संयुक्ताक्षर लिखने का ज्ञान कम है और उनसे कई गलतियाँ होती है । परन्तु 77 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 29.39 है इस विचार से सहमत नहीं है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 15 और उनका प्रतिशत् 5.73 है ।

उक्त विश्लेषण मे बहु संख्यक अध्यापकों का यह विचार है कि आन्ध्र के छात्र संयुक्ताक्षर लिखने मे गलतियाँ करते है ।

39. तेलुगु छात्रों के लिए हिन्दी की लिंग व्यवस्था कठिन है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	205	59	4	3	262
प्रतिशत्	78.•24	19•08	1• 63	1•15	100

शोधकर्ता ने अपने अनुभव में यह देखा है कि तेलुगु भाषा- भाषी अक्सर हिन्दी लिखते समय लिंग सम्बन्धी गलती करते हैं । इस पूर्व कल्पना के आधार पर हिन्दी अध्यापकों से यह प्रश्न पूछा गया है । प्रश्न संख्या 39 की तालिका के अनुसार 262 अध्यापकों में से 205 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 78•24 है । इस तथ्य को मान लिया है । दूसरा स्थान उन 50 अध्यापकों का है जो इस प्रश्न से सहमत नहीं है । उनका प्रतिशत् 19•08 है और 4 अध्यापक जिनका प्रतिशत 1•53 है/ ऐसे है जो इस प्रश्न पर संदिग्ध विचार रखते हैं ।

अधिक संख्यक अध्यापकों के विचार से यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र के छात्रों के लिए लिंग व्यवस्था का निर्णय एक कठिन कार्य है ।

40 क्या तेलुगु छात्रों के लिए "ने" प्रत्यय के प्रयोग की समस्या है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	199	54	6	3	262
प्रतिशत्	75·95	20·61	2·29	~~1·29~~ 1·15	100

तेलुगु छात्रों के लिए 'ने' प्रत्यय प्रयोग की समस्या पर अध्यापकों के विचार- ग्रहण करने हेतु यह प्रश्न पूछा गया है । कुल संख्या में 199 अध्यापकों का जिनका प्रतिशत् 75·95 है उनका विचार है कि तेलुगु छात्रों के लिए 'ने' प्रत्यय का प्रयोग कठिन कार्य है । दूसरा स्थान उन अध्यापकों है जिन्होंने इस मत का समर्थन नहीं किया है । उनकी संख्या 54 और प्रतिशत् 20·61 है । संदिग्ध स्थिति के अध्यापक 6 है और उनका प्रतिशत् 2·29 है । तीन अध्यापकों ने इस संदर्भ में उत्तर नहीं दिया है उनका प्रतिशत् 1·15 मात्र ही है ।

अतः इस विश्लेषण से यह पता चलता है कि तेलुगु छात्रों के लिए 'ने' का प्रयोग कठिन एवं समस्याजनक है ।

41. क्या मिश्र वाक्य के प्रयोग में छात्रों को कठिनाई होती है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	191	58	9	4	262
प्रतिशत्	72·90	22·14	3·44	1·52	100

यह प्रश्न हिन्दी की मिश्र वाक्य रचना की दृष्टि से रखकर हिन्दी अध्यापकों से पूछा गया है । उपयुक्त विश्लेषण तालिका के अनुसार कुल संख्या में 191 हिन्दी अध्यापकों ने यह विचार प्रगट किया है कि छात्रों को मिश्र वाक्य के प्रयोग में कठिनाई होती है जिनका प्रतिशत् 72·90 है 58 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 22·14 है इस विचार से सहमत नहीं है । 9 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 3·44 है इस पर अपनी संदिग्ध अवस्था प्रकट की है ।

बहु संख्यक विचार से यह कहा जा सकता है कि तेलुगु छात्रों को मिश्र वाक्य प्रयोग मे कठिनाई होती है ।

42. प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण ठीक नही होना उच्च कक्षाओं के लिए हानिकारक है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	236	20	6	—	262
प्रतिशत्	90•08	7•63	2•29	—	100

यह प्रश्न हिन्दी शिक्षण के मूलभूत कारणों को दर्शानेवाले प्रमुख कारणों को दृष्टि में रखकर पूछा गया है । शिक्षण की सहज स्थिति जानने के उद्देश्य से यह प्रश्न पूछा गया है ।

42 प्रश्न संख्या की तालिका में 236 अध्यापक इसके पक्ष में है जिनका प्रतिशत् 90•08 और 20 अध्यापको ने जिनका प्रतिशत् 7•63 विपक्ष मे अपना विचार प्रकट किया है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 6 है और उनका प्रतिशत् 2•29 होने के कारण इस पर कोई विचार नही किया जा सकता है ।

अतः अधिक संख्यक उत्तर से यह पता चलता है प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण ठीक नहीं होना उच्च कक्षाओ के लिए हानिकारक है ।

43 क्या सातवीं कक्षा के छात्र केवल हिन्दी में अनुत्तीर्ण हों तो उनको उत्तीर्ण मानकर 8वीं कक्षा में बिठाते है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	191	57	8	6	262
प्रतिशत्	72·90	21·76	3·05	2·29	100

यह आन्ध्र प्रदेश सरकार की हिन्दी नीति से सम्बन्धित प्रश्न है जो आठवीं कक्षा के लिए भी लागू होता है । इस प्रश्न का उत्तर हिन्दी अध्यापकों से अपेक्षित किया गया है ।

262 कुल संख्या मे 191 हिन्दी अध्यापकों के जिनका प्रतिशत् 72·90 है इनके मतानुसार 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में अनुतीर्ण होने पर भी उनको 9 वीं कक्षा में बिठाते है दिये जाते है । इस विचार पर 57 अध्यापकों ने अपनी असम्मति प्रकट की है । इनका प्रतिशत् 21·76 है । यह अनुभव किया जा सकता है कि 57 अध्यापक हिन्दी के उतीर्ण नियमों के बारे मे अनभिज्ञ है । प्रश्न तालिका के अनुसार 6 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 2·29 है किसी प्रकार का विचार प्रकट नहीं किया है ।

बहुमत से बात स्पष्ट होती है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी विषय से सम्बन्धित उत्तीर्ण नियमों के प्रति बहुत ही उदार है । यह उदारता छात्रों में अरुचि, आलसता को जन्म देती है ।

44 क्या हिन्दी में छात्रों का स्तर कम होने के का कारण हिन्दी पाठ्यक्रम का दोषपूर्ण रहना है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	140	99	15	8	262
प्रतिशत् :	53·44	37·79	5·72	3·05	100

यह प्रश्न छात्रों की अनुत्तीर्णता के कारण को जानने की दृष्टि से हिन्दी अध्यापकों से पूछा गया है । उक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि कुल संख्या में 140 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 53·44 है उन्होंने इस प्रश्न का समर्थन किया है और 99 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 37·79 है इसपर अपनी असम्मति प्रकट की है । 15 अध्यापकों जिनकी संख्या सबसे कम और प्रतिशत् 5·72 है इस पर संदिग्ध 8 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट नहीं किया है ।

अधिक संख्यक उत्तरदाताओं के उत्तर के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाठ्यक्रम का दोषपूर्ण होना भी हिन्दी में अनुत्तीर्ण होने के कारणों में से एक है ।

45 8वीं कक्षा के हिन्दी का पाठ्यक्रम द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	95	152	14	1	262
प्रतिशत् :	36·26	58·02	5·34	0·38	100

प्रश्न संख्या 45 की तालिका में प्रकट किये गये विचारों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 152 अध्यापकों ने 8 वीं कक्षा की द्वितीय भाषा हिन्दी पाठ्यक्रम को हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं माना है जिनका प्रतिशत् 58·02 है । इस प्रश्न पर 95 हिन्दी अध्यापकों ने सम्मति प्रकट की है, जिनका प्रतिशत् 36·26 है । सबसे कम संख्यक अध्यापक 14 हैं जिनका प्रतिशत् 5·34 है, इन्होंने इस प्रश्न पर अपनी संदिग्धता प्रकट की है । एक अध्यापक ने उत्तर नहीं दिया है ।

बहुसंख्यक विचारों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 8वीं की द्वितीय भाषा हिन्दी के पाठ्यक्रम को हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं माना है ।

46 क्या पाठ्यक्रम छात्रों की मानसिक आयु के अनुसार है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	82	173	5	2	262
प्रतिशत्	31•30	66•03	1•91	0•76	100

छात्रों की मानसिक आयु को आधार मानकर हिन्दी अध्यापकों से यह प्रश्न पूछा गया है । कुल 262 अध्यापकों में से सबसे अधिक उत्तरदाताओं की संख्या 173 है जिनका प्रतिशत् 66•03 % इनके अनुसार पाठ्यक्रम छात्रों की मानसिक आयु के अनुरूप नहीं है और सबसे कम संख्या 5 और जिनका प्रतिशत् 1•91 % मात्र है । अनुकूल मत प्रकट किये गये उत्तरदाताओं की संख्या 82 हैं और इनका प्रतिशत् 31•30 हैं । इस तालिका में 2 उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है ।

उपर्युक्त विश्लेषण तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 8 वीं कक्षा की हिन्दी का पाठ्यक्रम छात्रों की मानसिक आयु के अनुरूप नहीं है ।

47 क्या आप 8 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट को आवश्यक समझते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	190	58	8	6	262
प्रतिशत्	72·52	22·14	3·05	2·29	100

कुल 262 अध्यापकों में से 190 अध्यापक जिनका प्रतिशत 72·52 हैं जिनके विचार में पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट का होना आवश्यक है । इसके बाद 58 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 22·14 है, पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट की आम अनावश्यकता पर जोर दिया है । 8 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 3·05 है इस मत पर संदिग्धता प्रकट किया है । 6 रिक्त उत्तर प्राप्त हुए हैं जिनका प्रतिशत् 2·29 है । इस पर कोई विचार नहीं किया जा सकता है ।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर हिन्दी अध्यापकों ने हिन्दी पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट का होना आवश्यक समझा है ।

48 • क्या पाठ्यक्रम में भाषागत सभी कौशलों पर ध्यान दिया गया है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	111	131	17	3	262
प्रतिशत	42·37	50·00	6·49	1·14	100

यह प्रश्न पाठ्यक्रम में भाषागत कौशलों का स्था सम्बन्धी विवरण हिन्दी अध्यापकों से प्राप्त करने के उद्देश्य से पूछा गया है । इस सम्बिन्ध में कुल संख्या में 131 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 50 है । अपनी असम्मति प्रकट की है परन्तु 111 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 42·37 है । इस प्रश्न पर अपनी सम्मति प्रकट की है । 17 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध है जिनका प्रतिशत 6·49 हैं ।

अत्याधिक अध्यापकों के विचार से यह पताचलता है कि पाठ्यक्रम में भाषागत कौशलों को उचित स्थान नहीं मिला है ।

49 आप क्या इस पाठ्यक्रम में परिवर्तन चाहेंगी है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	174	82	6	—	262
प्रतिशत्	66•41	31•30	2•29	—	100

यह प्रश्न पाठ्यक्रम के परिवर्तन के सम्बन्ध मे पूछा गया है । कुल संख्या में 174 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 66•41 हैं ।पाठ्यक्रम मे परिवर्तन का होना आवश्यक समझते है । 82 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 31•30 है प्रस्तुत पाठ्यक्रम को दोषरहित मानते है । 6 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध है जिनका प्रतिशत् 2•29 है ।

अतः अत्याधिक अध्यापक 8 वीं कक्षा के हिन्दी पाठ्यक्रम मे परिवर्तन होना आवश्यक समझते हैं ।

50. क्या यह पाठ्यक्रम स्तरानुसार है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	123	127	10	2	262
प्रतिशत्	46•95	48•47	3•82	0•82	100

प्रश्न संख्या 50 के विश्लेषण के अनुसार यह ज्ञात होता है कि कुल संख्या मे 127 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 48•47 है जो पाठ्यक्रम मे क्रमिक स्तर का अभाव मानते है परन्तु 123 अध्यापकों के जिनका प्रतिशत् 46•95 है इनके विचार में पाठ्यक्रम स्तरानुसार है । कुल संख्या मे केवल 10 अध्यापक इस पर अपनी संदिग्धता प्रकट ~~करते~~ किया है । उनका प्रतिशत् 3•82 मात्र है ।

प्रश्न संख्या 50 में सहमत तथा असहमत का अन्तर बहुत ही कम है । इसलिए अधिक संख्यक उत्तर को प्रमुख रूप मे मानते हुए पाठ्यक्रम स्तरानुसार न रहने के मत को कुछ महत्व दिया जा सकता है ।

51. क्या आठवी कक्षा की हिन्दी पुस्तक पाठ्यक्रम के अनुरूप लिखी गई है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	93	144	21	4	262
प्रतिशत्	35•50	54•96	8•02	1•52	100

इस प्रश्न मे आठ वी कक्षा द्वितीय भाषा हिन्दी पुस्तक पर अध्यापकों का विचार पूछा गया है । [illegible] विश्लेषण सारिणी 51 के अनुसार 262 अध्यापकों मैं से 144 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया कि 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं है । इस मत को प्रकट किये गये अध्यापकों का प्रतिशत् 54•96 है । इसके समर्थन में 93 अध्यापकों ने अपना विचार प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 35•50 है । संदिग्ध विचार प्रकट किये गये अध्यापकों की संख्या 21 और उनका प्रतिशत् 8•02 है । शेष 4 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 1•52 है इस पर कोई विचार प्रकट नहीं किया ।

अतः बहुसंख्यक उत्तर के अनुसार यह कहा जा सकता है कि आठवी कक्षा की हिन्दी पुस्तक पाठ्यक्रम के अनुरूप नही लिखी गई है ।

05

52. 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक छात्रों के स्तर को दृष्टि मे रखकर लिखी गई है ?

	हा	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	86	164	9	3	262
प्रतिशत्	32.82	62.60	3.44	1.14	100

उपयुक्त प्रश्न के विश्लेषण उत्तर तालिका से यह मालूम होता है कि 164 अध्यापकों के मतानुसार जिनका प्रतिशत् 62.60 है 8वीं कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तक छात्रों के स्तर को दृष्टि में रखकर नहीं लिखी गई है । 86 अध्यापकों ने इस प्रश्न पर अपनी सम्मति प्रकट की है जिनका प्रतिशत् 32.82 है । 9 अध्यापकों ने संदिग्ध स्थिति को व्यक्त किया जिनका प्रतिशत् 3.44 है और 3 अध्यापकों ने उत्तर नहीं दिया है जो विचारणीय नही ।

53 क्या आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी पाठ्यपुस्तक के लेखक को तेलुगु जानना आवश्यक है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	214	44	3	1	262
प्रतिशत् :	81·68	16·79	1·15	0·38	100

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में कुल 262 अध्यापकों में से 214 अध्यापकों का विचार है कि आन्ध्र प्रदेश में पाठ्यपुस्तक के लेखक को हिन्दी जानना अत्यन्त आवश्यक है । इस विचार को प्रकट किये गये अध्यापकों का प्रतिशत् 81·68 है । इसके विपरीत में 44 अध्यापकों ने अपना विचार प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 16·79 है । 3 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 1·15 हैं जो संदिग्ध हैं ।

अत्यधिक उत्तर मान्य समझते हुए यह कहा जा सकता है कि आन्ध्र प्रदेश के हिन्दी पुस्तक के लेखक को तेलुगु जानना अत्यन्त आवश्यक है ।

7

54 क्या आप इस कक्षा की पुस्तक में प्राचीन कविताओं का समावेश आवश्यक समझते हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	100	155	6	1	262
प्रतिशत् :	38·17	59·16	2·29	0·38	100

उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर प्रविश्लेषण सूची के अनुसार 155 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 59·16 है उनके विचार में 8वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में प्राचीन कविताओं का समावेश अनावश्यक माना है । परन्तु 100 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 38·17 हैं जो इन कविताओं की आवश्यकता पर जोर दिया हैं । संदिग्धता 6 अध्यापकों ने प्रकट किया जिनका प्रतिशत् 2·29 है । यह सबसे कम संख्या है ।

बहुसंख्यक उत्तर के अनुसार यह कहना उचित होगा कि 8वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में प्राचीन कविताओं का होना छात्रों को भाषा सीखने में कठिनाई उपस्थित करती हैं इसलिए इनका समावेश इस स्तर पर न होना ठीक मालूम होता है ।

55 क्या आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का संकलन ठीक हुआ है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	103	132	20	7	262
प्रतिशत् :	39·31	50·38	7·64	2·67	100

इस प्रश्न के उत्तर में 262 अध्यापकों में से 132 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 50·38 है संकलन को दोषपूर्ण माना है । 103 अध्यापकों के विचार में पुस्तक/पाठों का संकलन ठीक ही हुआ है । इनका प्रतिशत् 7·64 है । 7 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 2·67 है इस पर अपना कोई विचार प्रकट नहीं किया है ।

उक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि 8वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक व संकलन भाषा शिक्षण की दृष्टि से दोषपूर्ण है ।

56 इस पाठ्यपुस्तक के परिवर्तन की आवश्यकता है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	150	101	7	4	262
प्रतिशत् :	57·25	38·55	2·67	1·53	100

कुल 262 अध्यापकों में से 150 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 57·25 है उनके विचार में प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का परिवर्तन होना आवश्यक है । इसके बाद का स्थान उन 101 अध्यापकों का है जिनके मतानुसार पाठ्यपुस्तक ठीक है । उन अध्यापकों का प्रतिशत् 38·55 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 7 हैं और उनका प्रतिशत् 2·67 है ।

उक्त विश्लेषण / 7 / तालिका से यह पता चलता है कि बहुसंख्यक अध्यापकों ने पाठ्यपुस्तक के परिवर्तन की आवश्यकता पर अपना विचार प्रकट किया है ।

57 क्या यह पाठ्यपुस्तक छात्रों के भाषा ज्ञान को बढ़ाने में सहायक है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	75	167	18	2	262
प्रतिशत् :	28·63	63·74	6·87	0·76	100

इस प्रश्न का उत्तर उक्त तालिका के अनुसार कुल 262 अध्यापकों में से 167 अध्यापकों के विचार में 8वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक छात्रों के भाषा ज्ञान को बढ़ाने में सहायक नहीं है । इनका प्रतिशत् 63·74 है । इसके समर्थन में 75 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 28·63 है अपनी सम्मति प्रकट किया है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 18 और उनका प्रतिशत् 6·87 हैं ।

अत्यधिक उत्तरदाताओं की संख्या तथा प्रतिशत् को दृष्टि में रखकर यह कहा जाता है कि उक्त पाठ्यपुस्तक छात्रों के भाषा ज्ञान को बढ़ाने में सहायक नहीं है ।

58. क्या आठवी कक्षा की पाठ्यपुस्तक मे तेलुगु संस्कृति एवं आचार-विचारों का पुट है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	160	86	13	3	262
प्रतिशत्	61·07	32·82	4·96	~~1·15~~ 1·15	100

कुल संख्या में 160 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 61·07 है उन्होंने इस पुस्तक में तेलुगु संस्कृति का पुट होने के पक्ष में अपना विचार प्रकट किया है । 86 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 32·82 है इसके विरुद्ध मे अपना मत प्रस्तुत किया है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 13 है और जिनका प्रतिशत् 4·96 मात्र है ।

बहुमत विचारों से यह पता चलता है कि 8 वीं कक्षा हिन्दी पाठ्यपुस्तक में तेलुगु संस्कृति एवं आचार विचारों का पुट है ।

59 पाठ्यपुस्तक छात्रों की रूचि स्थान, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक
आवश्यकताओं के अनुरूप है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	115	119	23	5	262
प्रतिशत	43·89	~~45·428~~ 45·42	8·78	1·91	100

उक्त प्रश्न के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि 119 अध्यापकोंने जिनका प्रतिशत् 45·42 है उनके विचार मे 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक छात्रों की रूचि, स्थान, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिकआवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है । इसके विरूद्ध में 115 अध्यापको ने जिनका प्रतिशत् 43·89 है । अपनी सम्मति प्रकट किया है । संदिग्ध अध्यापको की संख्या 23 है और उनका प्रतिशत् 8·78 है । इस प्रश्न का उत्तर 5 अध्यापकों ने नहीं दिया है ।

विश्लेषण के बहुसंख्यक अध्यापकों के विचार में प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दोषपूर्ण है जिनमे उपयुक्त गुणों का अभाव है ।

3

60 पाठ्यपुस्तक की रचना नवीन शिक्षण विधियों के अनुरूप
हुई है ?

	हाँ	नही	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या	72	173	16	1	262
प्रतिशत्	27·48	66·03	6·11	0·38	100

यह प्रश्न शिक्षण विधियों को दृष्टि मे रखकर पुछा गया/था है । प्रश्न संख्या 60 की विश्लेषण सूची से यह ज्ञात होता है कि कुल 262 अध्यापको मे से 173 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 66·03 है उनके विचार मे पाठ्य-पुस्तक की रचना नवीन शिक्षण विधियों के अनुरूप नहीं हुई । इसके विपरीत में 72 अध्यापको ने जिनका प्रतिशत् 27·48 है अपनी सम्मति प्रकट की है । 16 अध्यापकों ने इस पर अपनी संदिग्धता प्रकट की है ।

अतः बहुसंख्यक उत्तर से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि हिन्दी पाठ्यपुस्तक की रचना नवीन शिक्षण विधियो के अनुरूप नही हुई है ।

6। क्या द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण की पद्धतियों का निर्णय हुआ ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	94	141	24	3	262
प्रतिशत् :	35·88	53·81	9·16	1·15	100

यह प्रश्न हिन्दी शिक्षण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । शिक्षण पद्धतियों से संबंधित ज्ञान की जाँच करने की दृष्टि से यह प्रश्न अध्यापकों से पूछा गया है ।

61 की सूची के अनुसार कुल संख्या में 141 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 53·81 हैं, यह विचार प्रकट किया है कि अभीतक द्वितीय भाषा शिक्षण पद्धतियों का निर्णय नहीं हुआ है । 94 अध्यापकों का यह विचार है कि द्वितीय भाषा शिक्षण पद्धतियों का निर्णय हुआ है । इनका प्रतिशत् 35·88 है । प्रथम उत्तरदाताओं की तुलना में यह संख्या बहुत कम है । इसके अतिरिक्त 24 अध्यापकगण जिनका प्रतिशत 9·16 है उन्होंने इस प्रश्न के उत्तर पर संदिग्ध हैं । 3 अध्यापकों ने इसका उत्तर नहीं दिया है जिनका प्रतिशत 1·15 है ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाने की पद्धतियों का निर्णय न होना छात्रों की कमजोरी का कारण बन सकता है ।

62 क्या आठवीं कक्षा के छात्रों को प्रत्यक्ष पद्धति से हिन्दी पढ़ाना उचित है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	59	194	5	4	262
प्रतिशत् :	22•52	74•05	1•91	1•52	100

इस प्रश्न के उत्तर में 62 प्रश्न विश्लेषण सूची के अनुसार कुल संख्या में 194 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत् 74•05 है उनके विचार में हिन्दी शिक्षण प्रत्यक्ष पद्धति से देना उचित नहीं माना है ।

इस विचार के प्रति 59 अध्यापकों ने अपनी सम्मति प्रकट की है जिनका प्रतिशत 22•52 मात्र है । संदिग्ध विचार रखनेवाले अध्यापकों की संख्या 5 हैं और उनका प्रतिशत 1•91 है । 4 अध्यापकों ने उत्तर नहीं दिया हैं जिनका प्रतिशत् 1•52 है ।

उक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि 8 वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी का शिक्षण - प्रत्यक्ष-पद्धति से देना उचित नहीं है ।

63 क्या हिन्दी शिक्षण को रोचक बनाने के लिए सहायक सामग्री की आवश्यकता है ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	222	31	7	2	262
प्रतिशत् :	84·73	11·83	2·68	0·76	100

इस प्रश्न के उत्तर में कुल संख्या में 222 अध्यापकों ने अपनी सम्मति प्रकट की हैं जिनका प्रतिशत 84·73 है । इसके बाद का स्थान उन 31 अध्यापकों का है जिन्होंने उपर्युक्त प्रश्न के प्रति अपनी असम्मति प्रकट की है । इनका प्रतिशत 11·83 है । संदिग्ध विचार रखनेवाले अध्यापकों की संख्या 7 है और उनका प्रतिशत 2·68 होने के कारण यह विचारणीय नहीं है । 2 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 0·76 है उन्होंने अपनी सम्मति प्रकट नहीं की है ।

बहुमत अध्यापकों के विचार में हिन्दी शिक्षण को रोचक बनाने में सहायक-साधन अत्यन्त आवश्यक है ।

64 आपकी पाठशाला में हिन्दी के सहायक ग्रन्थ उपलब्ध हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	65	182	12	3	262
प्रतिशत् :	24·81	69·47	4·58	1·14	100

इस प्रश्न का उत्तर प्रश्न-विश्लेषण सूची 64 के अनुसार कुल संख्या में 182 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि उनकी पाठशालाओं में हिन्दी के सहायक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं जिनका प्रतिशत् 69·47 है । केवल 64 अध्यापकों ने इनकी उपलब्धि पर अपना विचार प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 24·81 है । 12 हिन्दी अध्यापकों को अपनी पाठशालाओं के सन्दर्भ ग्रंथों के विषय में संदिग्ध हैं । इनका प्रतिशत् 4·58 है । तीन अध्यापकों ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ।

अधिक संख्यक उत्तर से यह पता चलता है कि लगभग 70% पाठशालाओं में हिन्दी के संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध नहीं है ।

65 आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी अध्यापकों की संख्या पर्याप्त हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	48	198	13	3	262
प्रतिशत् :	18·32	75·57	4·96	1·15	100

इस प्रश्न का उत्तर प्रश्नावली के विश्लेषण के अनुसार 262 अध्यापकों में से 198 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी अध्यापकों की संख्या पर्याप्त नहीं है । इन उत्तरदाताओं की संख्या 48 और प्रतिशत् 18·32 है । संदिग्ध विचार रखनेवाले अध्यापकों की संख्या 13 और जिनका प्रतिशत् 4·96 है । केवल 3 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 1·15 है इस विषय पर अपना मत प्रकट / नहीं किया है ।

अतः इस प्रश्न के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आन्ध्र प्रान्त की पाठशालाओं में हिन्दी अध्यापकों की संख्या पर्याप्त नहीं हैं ।

66 आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी निरीक्षणाधिकारी हैं ?

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्या :	53	192	15	2	262
प्रतिशत् :	20·23	73·28	5·73	0·76	100

इस प्रश्न का उत्तर प्रश्न विश्लेषण सूची 66 के अनुसार 262 कुल संख्या में 192 संख्यक उत्तरदाताओं ने यह माना है कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी निरीक्षणाधिकारी नहीं है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 73·28 है । इसके बाद दूसरा स्थान उन अध्यापक उत्तरदाताओं का है जिन्होंने आन्ध्र प्रान्त में निरीक्षणाधिकारियों के रहने के संबंध में अपना विचार प्रकट किया है । इनकी संख्या 53 और प्रतिशत् 20·23 है । इस पर 15 अध्यापकों ने संदिग्धता व्यक्त की है । इनका प्रतिशत् 5·73 है । 2 अध्यापकोंने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है जिनका प्रतिशत 0·76 है ।

प्रश्न के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी निरीक्षणाधिकारियों का बिलकुल अभाव है ।

67 हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में क्या कठिनाई हैं ?

(1) भारत सरकार ने इसको अनिवार्य नहीं बनाया है ?

(2) सभी प्रान्तीय सरकारें इसको अनिवार्य बनाने में सहमत नहीं है ?

(3) हिन्दी भाषा समृद्ध नहीं है ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या	72	185	4	1	262
प्रतिशत	27·48	70·61	1·53	0·38	100

प्रश्न संख्या 67 के अन्तर्गत 3 उत्तर दिये गये हैं और चौथा, उत्तरदाताओं के निजी विचार के लिए छोड दिया गया है । हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के संबंध में प्रश्न पूछा गया है । बहुसंख्यक उत्तरदाताओं ने दूसरे उत्तर को अधिक महत्व दिया है । उनके विचार में हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने में सभी प्रान्तीय सरकार सहमत नहीं हैं । इन उत्तरदाताओं की संख्या 185 हैं और उनका प्रतिशत् 70·61 है । दूसरा स्थान प्रश्न के प्रथम उत्तर के उत्तरदाताओं का है जिनकी संख्या 72 है और प्रतिशत् 27·48 है इनके विचार में हिन्दी को भारत सरकार ने अनिवार्य नहीं बनाया है इसलिए यह राष्ट्रभाषा का सही स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है । केवल चार उत्तरदाताओं ने तीसरे उत्तर का चयन किया है इनका प्रतिशत 1·53 होने के नाते बहु संख्यक उत्तर के साथ तुलना करना उचित न होगा । सबसे कम संख्या एक है और उच्च संख्या 185 होने के नाते अत्यधिक उत्तरदाताओं का अभिप्राय मान्य है ।

68 सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी व्यवहृत होने में क्या कठिनाई है ?

(1) अंग्रेजी का प्रभाव जनता पर अधिक है ।

(2) उच्च अधिकारी हिन्दी का ज्ञान नहीं रखते हैं ।

(3) उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से हो रही है ।

(4) जनता राष्ट्रभाषा के महत्व को नहीं जानती है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	119	88	32	23	262
प्रतिशत्	45•42	33•59	12•21	8•78	100

इस प्रश्न का विश्लेषण 68 सूची के अनुसार कुल उत्तरदाताओं में से 119 उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी इसीलिए व्यवहृत नहीं है कि जनता पर अंग्रेजी का प्रभाव अधिक है ।इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 45•42 है । तालिका के अनुसार ~~यह~~ प्रतिशत सर्वोच्च है । दूसरा स्थान उन 88 उत्तरदाताओं का है जिनका विचार यह है कि उच्च अधिकारी हिन्दी का ज्ञान नहीं रखने के कारण हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहृत नहीं है । इनका प्रतिशत 33•59 है । 32 अध्यापक उत्तरदाताओं ने बताया कि उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से होने के कारण संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी व्यवहृत नहीं है । इनका प्रतिशत ~~12•12~~ 12•21 है । चौथे उत्तर को 23 अध्यापकों ने महत्व दिया है जिनका प्रतिशत 8•78 होने के कारण यह विचारणीय नहीं है ।

बहुसंख्यक उत्तर के आधार पर यह मानना पड़ता है कि जनता पर अंग्रेजी का प्रभाव अधिक होने के कारण हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में व्यवहृत नहीं है ।

69 त्रिभाषा-सूत्र के सही पालन में सरकार के सामने निम्न प्रकार की कठिनाई है ?

(1) केन्द्र सरकार हिन्दी के लिए पर्याप्त अनुदान नहीं देती है ।
(2) आन्ध्र सरकार हिन्दी के विकास के लिए विशेष बजट नहीं बनाती है ।
(3) हिन्दी की अपेक्षा सभी स्तरों पर तेलुगु का व्यवहार होता है ।
(4) अन्य . . . .

	1	2	3	4	योग
संख्या :	69	156	37	-	262
प्रतिशत्	26.34	59.54	14.12	-	100

इस प्रश्न के उत्तर में कुल 262 अध्यापकों में से 156 अध्यापकों ने यह स्वीकार किया है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी के लिए विशेष बजट नहीं बनाती है क्योंकि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी का प्रचार एवं त्रिभाषा-सूत्र का प्रतिपादन केन्द्रीय सरकार के अनुदान से ही कर रही है । इन बहुसंख्यक उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 59.54 है । दूसरा स्थान उन 69 अध्यापकों का है जिनके विचार में केन्द्र सरकार हिन्दी के लिए पर्याप्त अनुदान नहीं देने के कारण आन्ध्र प्रदेश में त्रिभाषा सूत्र का सही पालन नहीं हो रहा है । 37 तीसरे उत्तरदाताओं का कहना है कि सभी स्तरों पर तेलुगु व्यवहृत होने के कारण आन्ध्र प्रदेश सरकार त्रिभाषा-सूत्र का सही पालन नहीं कर पा रही है ।

बहुसंख्यक उत्तर के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी को केन्द्र का विषय माना है इसलिए त्रिभाषा-सूत्र के पालन में सरकार के सामने कठिनाई उपस्थित हो रही है ।

70 हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में आन्ध्र प्रदेश को सफलता नहीं मिली ? क्यों कि –

(1) आन्ध्र प्रदेश हिन्दी को प्रान्तीय विषय नहीं मानता है ।

(2) सरकार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है ।

(3) सरकार हिन्दी को विधिवत किसी पर लादना नहीं चाहती ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	88	66	108	-	262
प्रतिशत् :	33·59	25·19	41·22	-	100

प्रश्न संख्या 70 के अनुसार 108 अध्यापक उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी को किसी पर विधिवत नहीं लादने के कारण सरकार को हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में सफलता नहीं मिली । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 41·22 है जो सूची के अनुसार सर्वोच्च है । इसके बाद दूसरा स्थान उन उत्तरदाताओं का जिन्होंने प्रश्न के प्रथम उत्तर के प्रति अपना मत प्रकट किया है इनके अनुसार आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी को प्रान्तीय विषय नहीं मानती है इसलिए हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में सफलता नहीं मिली । इन उत्तरदाताओं की संख्या 88 है और उनका प्रतिशत् 33·59 है । 66 दूसरे उत्तरदाताओं का विचार है कि सरकार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में सफलता नहीं मिली है ।

बहुसंख्यक उत्तरदाताओं ने यह माना है कि सरकार हिन्दी को विधिवत् किसी ~~प्रान्त~~ पर लादना नहीं चाहती है । इसलिए यह मान्य है ।

7। अहिन्दी भाषाभाषियों को हिन्दी सीखने से विशेष लाभ नहीं है ? क्योंकि -

(1) हिन्दी आन्ध्र प्रदेश की द्वितीय भाषा है ।

(2) हिन्दी शिक्षण इस प्रान्त में अनिवार्य नहीं है ।

(3) हिन्दी सीखने से नौकरी नहीं मिलती है ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	91	123	48	-	262
प्रतिशत् :	34·73	46·95	18·32	-	100

उपर्युक्त प्रश्न की उत्तर तालिका 7। के अनुसार 123 उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि हिन्दी शिक्षण इस प्रान्त में अनिवार्य नहीं होने के कारण हिन्दी सीखने से कोई विशेष लाभ नहीं होता है । इनका प्रतिशत् 46·95 है । प्रश्न के प्रथम 91 उत्तरदाताओं का मत है कि हिन्दी आन्ध्र प्रदेश की द्वितीय भाषा होने के कारण इस भाषा के अध्ययन से कोई विशेष लाभ नहीं पहुँचता है । इनका प्रतिशत् 34·73 है ।

बहुमत उत्तरदाताओं ने दूसरे उत्तर को स्वीकार किया है इसलिए यह कहा जा सकता है कि आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी को अनिवार्य बनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा ।

72 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर हैं ? क्योंकि –

(1) छात्रों को हिन्दी का वातावरण नहीं मिलता है ।
(2) छात्रों को हिन्दी सीखने से कोई लाभ नहीं होता ।
(3) छात्रों को हिन्दी सीखने के प्रति कोई रुचि नहीं है ।
(4) हिन्दी अध्यापक छात्रों को प्रोत्साहन नहीं देते हैं ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	166	41	55	-	262
प्रतिशत् :	63·36	15·65	20·99		100

72 प्रश्न की विश्लेषण सूची के अनुसार 166 उत्तरदाताओं ने प्रथम उत्तर को स्वीकार किया है । उनका प्रतिशत् 63·36 है । इनका विचार है कि 8 वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी का सही वातावरण नहीं मिलने के कारण वे हिन्दी में कमज़ोर हैं । दूसरा स्थान उन 55 उत्तरदाताओं को दिया जा सकता है, जिन्होंने तीसरे उत्तर के प्रति अपनी सम्मति दी है । उनके अनुसार छात्रों को हिन्दी सीखने के प्रति कोई रुचि नहीं है । इनका प्रतिशत 20·99 है ।

अतः बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के मतानुसार यह कहा जा सकता है कि 8वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी का सही वातावरण प्राप्त नहीं है इसलिए वे हिन्दी में कमज़ोर हैं ।

73 8 वीं कक्षा को हिन्दी पढ़ाना कठिन कार्य है क्योंकि –

(1) आठवीं कक्षा से ही उच्चतर माध्यमिक कक्षाएँ प्रारंभ होती हैं ।

(2) प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण दोषपूर्ण है ।

(3) तीनों भाषाओं का भार इस कक्षा के छात्रों के लिए अधिक है ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	40	158	61	3	262
प्रतिशत् :	15·27	60·31	23·28	1·14	100

उपर्युक्त प्रश्न संख्या 73 की विश्लेषण सूची के अनुसार 158 हिन्दी अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण दोषपूर्ण होने के कारण 8वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी पढ़ाना कठिन कार्य बन गया है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 60·31 है । दूसरा स्थान उन 61 अध्यापकों को मिलता है जिन्होंने तीसरे उत्तर को अधिक महत्व दिया है उनका मत है कि तीनों भाषाओं का भार इस कक्षा के छात्रों पर पड़ता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 23·28 है । संख्या एवं प्रतिशत की दृष्टि से प्रथम तथा चतुर्थ उत्तर का अधिक महत्व नहीं है ।

बहुसंख्यक उत्तरदाताओं ने यह विचार प्रकट किया है कि प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण दोषपूर्ण होने के कारण 8 वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी पढ़ाना कठिन ही नहीं एक समस्या भी है ।

74 हिन्दी में अनुत्तीर्ण होने पर भी छात्रों को उत्तीर्ण मान कर उच्च कक्षा में बिठाते हैं । क्योंकि –

(1) हिन्दी एक अनिवार्य विषय नहीं है ।

(2) हिन्दी में उत्तीर्ण होना आवश्यक नहीं है ।

(3) हिन्दी को उपयुक्त महत्व नहीं है ।

(4) एस0 एस0 सी0 में हिन्दी के अंक कुल अंकों में नहीं मिलते हैं ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	10	33	67	152	262
प्रतिशत् :	3·82	12·60	25·57	58·01	100

विश्लेषण-सूची 74 के अनुसार 152 अध्यापकों ने चतुर्थ उत्तर का समर्थन किया है । उनका प्रतिशत् 58·01 है । इनके अनुसार निम्न कक्षाओं में छात्र अनुत्तीर्ण होने पर भी उनको हिन्दी में उत्तीर्ण इसलिए किया जाता है कि एस0 एस0 सी0 में हिन्दी के अंक कुल अंकों में नहीं मिलाते हैं । यह बहुसंख्यक अध्यापकों का उत्तर है । दूसरा स्थान उन 67 अध्यापकों का जिनका विचार है कि हिन्दी विषय का कोई विशेष महत्व नहीं है । इनका प्रतिशत् 25·57 है । अन्य उत्तरों का प्रतिशत कम होने के कारण उनको चर्चा में नहीं लिया जा सकता है ।

बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के अनुसार निम्न स्तर पर हिन्दी में अनुत्तीर्ण होने पर भी इसलिए उनको उत्तीर्ण समझा जाता है कि एस0 एस0 सी0 में हिन्दी के अंकों को कुल अंकों में नहीं मिलाया जाता है ।

75 हिन्दी में उत्तीर्ण अंकों को कम करने से छात्रों पर यह प्रभाव पड़ता है कि –

(1) छात्र हिन्दी पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं ।

(2) हिन्दी में उत्तीर्ण होना अनावश्यक समझते हैं ।

(3) हिन्दी में अधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रयत्न नहीं करते हैं ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	112	41	61	48	262
प्रतिशत् :	42· 75	15·65	23·28	18·32	100

विश्लेषण-सूची 75 के अनुसार कुल संख्या में 112 उत्तरदाताओं का यह मत है कि हिन्दी विषय में उत्तीर्णांकों को कम करने से छात्र हिन्दी पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं । इनका प्रतिशत् 42· 75 है यह सर्वमान्य मत है । इसके बाद 61 अध्यापकों ने तीसरे उत्तर को ठीक समझा है उनके मतानुसार हिन्दी में उत्तीर्णांकों को कम करने से छात्र हिन्दी विषय में अधिक अंकों को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं । इनका प्रतिशत् 23·28 है ।

बहुमत के अनुसार यह कहा जा सकता है कि हिन्दी के उत्तीर्णांकों को कम करने से छात्र हिन्दी विषय को पढ़ने के प्रति रुचि नहीं लेते हैं ।

76 आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का वातावरण नहीं है क्योंकि –

(1) राज्यों के पुनर्गठन से पहले आन्ध्र प्रान्त मद्रास राज्य में था ।
(2) उर्दू का प्रभाव आन्ध्र प्रान्त में नहीं था ।
(3) मुसलमानों के शासक का प्रभाव आन्ध्र प्रान्त पर अधिक नहीं था ।
(4) जनसाधारण की व्यावहारिकभाषा केवल तेलुगु है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	33	4	13	212	262
प्रतिशत् :	12·60	1·52	4·96	80·92	100

विश्लेषण-सूची 76 के अनुसार 212 अध्यापक उत्तरदाताओं का मत है कि जनसाधारण की व्यवहारिक भाषा तेलुगु होने के कारण आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी का वातावरण नहीं है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 80·92 है । इसके बाद 33 शिक्षक अध्यापक जिनका प्रतिशत् 12·60 है उनका मत है कि राज्यों के पुनर्गठन से पहले आन्ध्र प्रान्त मद्रास राज्य में था इसलिए इस प्रान्त में हिन्दी का वातावरण नहीं है । उत्तर संख्या 2 और 3 पर कम अध्यापकों ने अपना विचार प्रकट किया है इसलिए यह चर्चा का विषय नहीं है ।

अधिक संख्यक अध्यापकों ने कि चतुर्थ उत्तर को महत्व देने के कारण यह उत्तर स्वीकृत माना जाता है ।

77 हिन्दी को शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर अनिवार्य बनाने में यह कठिनाईयाँ हैं —

(1) केन्द्रीय सरकार नेअहिन्दी प्रान्तों को यह आश्वासन दिया है कि हिन्दी बलपूर्वक लोगों पर न थोपी जाएगी ।

(2) आन्ध्र प्रदेश में छात्रों को हिन्दी सीखने को प्रोत्साहन नहीं मिलता है ।

(3) हिन्दी तथा तेलुगु भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी पुस्तके उपलब्ध नहीं है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	175	71	16	-	262
प्रतिशत् :	66·79	27·10	6·11	-	100

कुल उत्तरदाताओं में से 175 अध्यापकों का मत है कि केन्द्रीय सरकार के आश्वासन के अनुसार हिन्दी को शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य बनाना कठिन कार्य है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 66·79 है । दूसरा स्थान उन 71 अध्यापकों को दिया जा सकता है जिन्होंने द्वितीय उत्तर को स्वीकार किया है । इनका प्रतिशत 27·10 है ।

अधिक संख्यक म उत्तरदाताओं के विचारानुसार हिन्दी को शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य बनाना कठिन कार्य है ।

78 गत तीन वर्षों से आठवीं कक्षा के छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत कम होने के ये कारण हैं ?

(1) छात्र हिन्दी सीखने के प्रति रुचि नहीं लेते हैं ।

(2) छात्रों को हिन्दी का वातावरण प्राप्त नहीं है ।

(3) हिन्दी सीखने से छात्रों को कोई लाभ नहीं है ।

(4) प्रारंभिक कक्षाओं में अध्यापक हिन्दी सुचारु रूप से नहीं पढाते हैं ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	95	68	36	63	262
प्रतिशत् :	36·26	25·95	13·74	24·05	100

इस प्रश्न का उत्तर अध्यापकों ने अपनी अपनी पाठशालाओं के छात्रों के अभिलेखों के आधार पर दिया है । इस प्रश्न की विश्लेषण-सूची के अनुसार 95 अध्यापकों का यह मत है कि छात्र हिन्दी सीखने में कम रुचि रखने के कारण गत तीन वर्षों से उनका उत्तीर्ण प्रतिशत कम हो गया है । इनका प्रतिशत 36·26 है जो अन्य प्रतिशत की तुलना में अधिक होने के कारण यह सर्वमान्य उत्तर है । इसके बाद का स्थान उन 68 अध्यापकों का है जिन्होंने दूसरे उत्तर को अधिक महत्व दिया है । विषय एवं संख्या की दृष्टि से चौथा उत्तर भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इनका प्रतिशत 24·05 है जो प्राथमिकता के रूप में तीसरा स्थान रखता है । तीसरा उत्तर उद्दरणीय नहीं है ।

अतः बहुसंख्यक उत्तर से यह ज्ञात होता है कि छात्रों को हिन्दी सीखने के प्रति रुचि न होने के कारण गत तीन वर्षों से उनका उत्तीर्ण प्रतिशत कम हो गया है ।

79 हिन्दी शिक्षा के लिए अधिक घण्टों (Periods)को देने पर कठिनाइयाँ होती है –

(1) हिन्दी के अध्यापक को सप्ताह में हिन्दी को छोड़कर 6 घण्टे अधिक काम करना पड़ता है ।

(2) हिन्दी अध्यापक दूसरे विषयों को पढ़ाने की योग्यता रखनी पड़ती है ।

(3) आन्ध्र सरकार हिन्दी को प्रान्तीय के बजट में शामिल करना है ।

(4) छात्र हिन्दी को विधिवत् सीखे ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	40	9	122	91	262
प्रतिशत् :	15·27	3·44	46·56	34·73	100

उक्त प्रश्न संख्या 79 की विश्लेषण-सूची के अनुसार बहुसंख्यक अध्यापकों ने इस प्रश्न के तीसरे उत्तर को स्वीकार किया है जिनकी संख्या 122 है और प्रतिशत् 46·56 है । दूसरा स्थान उन 91 अध्यापकों का है जिनका मत है कि छात्र हिन्दी को विधिवत् सीखें । अन्य उत्तर संख्या 1 और 2 का प्रतिशत् कम होने के कारण उस पर चर्चा अधिक नहीं की जा सकती है ।

बहुमत के अनुसार शोधकर्ता ने इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि हिन्दी अध्यापकों को अधिक घण्टे पढ़ाने के लिए देने हैं, तो आन्ध्र प्रदेश की सरकार हिन्दी को केन्द्रीय विषय नहीं बल्कि प्रान्तीय विषय समझें ।

80 आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी अध्यापकों की संख्या कम है क्योंकि –

(1) केन्द्रीय सरकार से पूरा अनुदान नहीं मिलता है ।
(2) प्रत्येक हिन्दी अध्यापक के लिए सप्ताह में 12 घंटों का काम नहीं मिलता है ।
(3) जूनियर हिन्दी अध्यापकों से सीनियर हिन्दी अध्यापकों का काम लिया जाता है ।
(4) सरकार हिन्दी शिक्षण के प्रति ध्यान नहीं देती है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	102	19	30	111	262
प्रतिशत् :	38·93	7·25	11·45	42·37	100

सूची 80 के अनुसार 111 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी अध्यापकों की संख्या इसलिए कम है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी शिक्षण के प्रति ध्यान नहीं देती है । इन अध्यापकों की प्रतिशत् 42·37 है । इसके बाद उन 102 अध्यापकों का मत है कि जिनका प्रतिशत् 38·93 है । इनके अनुसार केन्द्रीय सरकार से पूरा अनुदान प्राप्त न होने के कारण आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी अध्यापकों की संख्या बहुत कम है ।

बहुसंख्यक सम्मति यह है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी शिक्षण के प्रति ध्यान नहीं देती है ।

8। आन्ध्र प्रान्त में जब हिन्दी शिक्षक 6 वीं कक्षा से आरंभ होता है तब छात्रों के सामने निम्न प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं ?

(1) छात्रों को मातृभाषा का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है ।
(2) छात्रों को हिन्दी का वातावरण नहीं मिलता है ।
(3) छात्रों को द्वितीय भाषा सीखने को कम समय मिलता है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	62	165	35	-	262
प्रतिशत् :	23·66	62·98	13·36	-	100

प्रश्न संख्या विश्लेषण-सूची 8। के अनुसार 165 हिन्दी अध्यापकों का मत यह है कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का शिक्षण 6 वीं कक्षा से आरंभ होता है तो छात्रों को हिन्दी सीखने का वातावरण प्राप्त नहीं होता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 62·98 है । इसके बाद का स्थान उन 62 हिन्दी अध्यापकों का है जिनके मतानुसार 6 वीं कक्षा से हिन्दी को प्रारंभ करने से छात्रों को द्वितीय भाषा का पर्याप्त ज्ञान को प्राप्त नहीं होता है । इनका प्रतिशत् 23·66 है ।

बहुसंख्यक मतानुसार यह निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का शिक्षण 6 वीं कक्षा से प्रारंभ करने से छात्रों को हिन्दी का पर्याप्त वातावरण प्राप्त नहीं होता है इसलिए हिन्दी का शिक्षण और भी कम कक्षाओं से प्रारंभ करना उचित होगा ।

82 हिन्दी कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक होने से ये कठिनाइयाँ होती हैं –

(1) छात्र पाठ को नहीं समझ सकते हैं ।

(2) अध्यापक छात्रों का अवधान पाठ की ओर ले जाने में सफल नहीं होता है ।

(3) छात्र व्यक्तिगत कठिनाइयों को अध्यापक के सामने नहीं रख सकते हैं ।

(4) छात्र पाठ को सुनने में रुचि नहीं लेते हैं ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	25	141	90	6	262
प्रतिशत् :	9·54	53·82	34·35	2·29	100

उक्त 82 प्रश्न की विश्लेषण-सूची के अनुसार 262 कुल अध्यापकों में से 141 अध्यापकों ने प्रश्न के द्वितीय उत्तर का समर्थन किया इनका प्रतिशत् 53·82 है । इनके मतानुसार हिन्दी कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक होने से अध्यापक छात्रों का अवधान पाठ की ओर ले जाने में सफल नहीं होता है । इसके बाद का स्थान उन 90 अध्यापकों का है जिन्होंने प्रश्न संख्या के तृतीय उत्तर का समर्थन किया है । जिनके अनुसार कक्षा में अधिक संख्या होने से छात्र अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों को अध्यापक के सामने नहीं रख सकते हैं इनका प्रतिशत 34·35 है । इस शोधकार्य में छात्रों की कठिनाइयों की ओर ध्यान दिया गया है । इस उद्देश्य के परिपेक्ष में 90 अध्यापकों का मत का गौण महत्व है । उत्तर संख्या 1 और 4 पर प्रभाव नहीं डाला जा सकता है । क्योंकि संख्या और प्रतिशत् की दृष्टि से इनका अधिक महत्व नहीं है ।

अधिक संख्यक लोगों का मत है कि कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक होने से अध्यापक छात्रों का अवधान पाठ की ओर ले जाने में सफल नहीं होता है ।

83 आठवीं कक्षा का पाठ्यक्रम द्वितीय भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है क्योंकि –

(1) पाठ्यक्रम द्वितीय भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं लिखा गया है ।

(2) हिन्दी का पाठ्यक्रम केवल अंग्रेजी पाठ्यक्रम का अनुवाद मात्र ही है ।

(3) पाठ्यक्रम निर्माण के विद्वान तेलुगु तथा हिन्दी भाषाओं का तुलनात्मक ज्ञान नहीं रखते हैं ।

(4) अनुभवी हिन्दी अध्यापकों की सहायता नहीं ली गई है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	92	5	27	138	262
प्रतिशत् :	35·11	1·91	10·31	52·67	100

इस प्रश्न क्रम संख्या के कुल 262 उत्तरदाताओं से 138 उत्तरदाताओं ने जिनका प्रतिशत् 52·67 है उनका कहना है कि आठवी कक्षा का पाठ्यक्रम द्वितीय भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं होने का यह कारण है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में अनुभवी हिन्दी अध्यापकों की सहायता नहीं ली गई है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 52·67 है । इसके बाद द्वितीय स्थान उन 92 हिन्दी अध्यापकों का है जिनका मत है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का पालन नहीं किया गया है । अन्य उत्तर संख्या 2 और 3 का विशेष महत्व नहीं है ।

अतः बहुसंख्यक उत्तर से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पाठ्यक्रम के निर्माण में अनुभवी अध्यापकों की सहायता ली जानी चाहिए ।

84 पाठ्यक्रम आठवीं कक्षा के छात्रों के मानसिक आयु के अनुरूप नहीं है क्योंकि –

(1) पाठ्यक्रम का निर्माण केवल विदेशी भाषा शिक्षण के सिद्धान्तों के अनुसार किया गया है ।

(2) पाठ्यक्रम में विविधता नहीं है ।

(3) निर्दिष्ट भाषा सूत्रों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण नहीं हुआ है ।

(4) पाठ्यक्रम में छात्रों की मानसिक आयु का ध्यान नहीं दिया गया है ।

		1	2	3	4	योग
संख्या	:	35	24	110	93	262
प्रतिशत्	:	13·36	9·16	41·98	35·50	100

इस प्रश्न के उत्तर में विश्लेषण तालिका 84 के अनुसार 110 अध्यापकों का विचार है कि निर्दिष्ट भाषा सूत्रों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण नहीं हुआ है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 41·98 है । 93 अध्यापक जिन्होंने यह मत प्रकट किया है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में छात्रों की मानसिक आयुको ध्यान नहीं दिया गया है । इसका प्रतिशत 35·50 है । अन्य उत्तर संख्या 1 और 2 का विश्लेषण उचित न होगा ।

बहुसंख्यक अध्यापकों का यह मत है कि पाठ्यक्रम का निर्माण निर्दिष्ट भाषा सूत्रों के आधार पर नहीं हुआ है ।

85 पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट को आवश्यक माना जाता हैं क्योंकि -

(1) भाषा सीखने में कठिनाई नहीं होती है ।

(2) छात्र भाषा को रुचि के साथ सीख सकता है ।

(3) अध्यापक को तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिलता है ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या	51	92	119	-	262
प्रतिशत	19.47	35.11	45.42	-	100

प्रश्न संख्या 85 की विश्लेषण-सूची के अनुसार 262 अध्यापकों में से 119 अध्यापक जिनका प्रतिशत् 45.42 है उनका विचार है कि पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट को यथास्थान देने से छात्रों को तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिलता है और छात्र इससे भाषा जल्दी सीख लेते हैं । परन्तु 92 अध्यापकों का मत है कि स्थानीय पुट का स्थान पाठ्यक्रम में देने से छात्र भाषा का अध्ययन रुचि के साथ करते हैं इनका प्रतिशत् 35.11 है । इसके बाद 51 अध्यापकों का मत है कि स्थानीय पुट के समावेश से भाषा सीखने में कठिनाई नहीं होती हैं । इनका प्रतिशत् 19.47 है ।

इस सूची के अध्ययन से यह पता चलता है अधिक संख्यक अध्यापकों ने प्रश्न संख्या 85 के तृतीय अ उत्तर का समर्थन किया है इसलिए यह उत्तर मान्य है ।

86 8 वीं कक्षा के हिन्दी पाठ्यक्रम में भाषागत सभी कौशलों पर ध्यान नहीं दिया गया है क्योंकि –

(1) भाषागत सभी सिद्धान्तों का ध्यान नहीं रखा गया है ।

(2) पाठ्यक्रम के निर्माण में विषय का महत्व अधिक दिया गया है ।

(3) 8 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में भाषागत विषयों का स्तरीकरण नहीं है ।

(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	98	94	69	1	262
प्रतिशत् :	37.40	35.88	26.34	0.38	100

इस प्रश्न के उत्तर में विश्लेषण सूची-86 के अनुसार 98 अध्यापकों का विचार है कि 8 वीं कक्षा के हिन्दी पाठ्यक्रम में भाषागत कौशलों का ध्यान नहीं रखा गया है । इनका प्रतिशत् 37.40 है । दूसरा स्थान उनका आता है जिन्होंने प्रश्न के द्वितीय उत्तर को महत्व दिया है । इनके अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण में विषय को अधिक महत्व दिया है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 35.88 है । इसके बाद 69 उत्तरदाताओं ने प्रश्न के तृतीय उत्तर को स्वीकार किया है । जिनका प्रतिशत् 26.34 है ।

अत्यधिक उत्तरदाताओं के मतानुसार यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में भाषागत सभी कौशलों पर ध्यान नहीं दिया गया है ।

87 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है क्योंकि –

(1) स्तरानुकूल मानक शब्दों का निर्माण नहीं हुआ है ।

(2) हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों में क्रम नहीं है ।

(3) छात्रों की मानसिक आयु का मापन नहीं किया गया है ।

(4) भाषा शिक्षण के निर्दिष्ट उद्देश्यों को सामने नहीं रखा गया है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	36	32	68	126	262
प्रतिशत्	13·74	12·21	25·96	48·09	100

कुल 262 अध्यापकों में से 126 अध्यापकों ने अपना यह विचार प्रकट किया है कि भाषा शिक्षण के निर्दिष्ट उद्देश्यों को सामने रखकर पाठ्यपुस्तक नहीं लिखी गई है जिसके कारण पाठ्यपुस्तक छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 48·09 है । दूसरा स्थान उन 68 अध्यापकों का है जिनके अनुसार पाठ्यपुस्तक छात्रों की मानसिक आयु के अनुसार नहीं है । इसलिए यह छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है । इनका प्रतिशत् 25·96 है । अन्य विचार, संख्या, और प्रतिशत् की दृष्टि से अधिक महत्व नहीं रखते हैं ।

इस विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक के निर्माण में निर्दिष्ट उद्देश्यों का ध्यान नहीं देने के कारण 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है ।

88 8वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम के अनुसार न होने के ये कारण हैं –

(1) लेखक हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों से अपरिचित हैं ।
(2) पाठ्यपुस्तक की प्रामाणिकता पर ध्यान नहीं दिया गया है ।
(3) पाठ्यक्रम के उद्देश्य संदिग्ध हैं ।
(4) पाठ्यपुस्तक चयन-समिति में अनुभवी अध्यापकों को स्थान नहीं दिया गया है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	52	52	47	111	262
प्रतिशत्	19·85	19·85	17·94	42·36	100

प्रश्न संख्या 88 की विश्लेषण सूची के अनुसार 262 अध्यापकों में से 111 अध्यापकों ने अपना यह मत प्रकट किया है कि पाठ्यपुस्तक चयन समिति में अनुभवी अध्यापकों को स्थान नहीं दिया गया है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 42·36 हैं । इसके बाद उत्तर संख्या 1 और 2 के उत्तर समान है उनके प्रतिशत में भी कोई अन्तर नहीं है । इनके अनुसार पाठ्यपुस्तक के लेखक पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से अपरिचित हैं साथ ही साथ पाठ्यपुस्तक की प्रामाणिकता पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया है । प्रश्न के 47 उत्तरदाताओं ने तृतीय उत्तर का समर्थन किया है । इनका प्रतिशत 17·94 है ।

अतः अत्यधिक उत्तरदाताओं के मत से यह विदित होता है कि पाठ्यपुस्तक चयन समिति में अनुभवी अध्यापकों को स्थान देना उचित होगा, जो नहीं हुआ ।

89 8वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक की बाहरी सजावट आकर्षक नहीं है क्योंकि –

(1) प्रकाशक बाहरी आकर्षण के प्रति जागरूक नहीं है ।

(2) प्रकाशकों को आर्थिक कठिनाई होती है ।

(3) उन्हें शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं है ।

(4) अच्छे चित्रकार उपलब्ध नहीं है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	123	53	72	14	262
प्रतिशत् :	46·95	20·23	27·48	5·34	100

~~प्रश्न~~

प्रश्न संख्या 89 के विश्लेषण के अनुसार 262 हिन्दी अध्यापकों में से 123 हिन्दी अध्यापकों ने प्रश्न संख्या के प्रथम उत्तर पर अपना मत प्रकट किया है उनके अनुसार 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक की बाहरी सजावट आकर्षक नहीं है क्योंकि प्रकाशक बाहरी आकर्षण के प्रति जागरूक नहीं है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 46·95 है । इसके बाद दूसरा स्थान उन अध्यापकों का है जिन्होंने तृतीय उत्तर के प्रति अपना मत प्रकट किया है । इन उत्तरदाताओं का कहना है कि प्रकाशकों को शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 27·48 है । इनके अतिरिक्त 53 अध्यापकों ने अपना मत द्वितीय उत्तर के प्रति दिया है । प्रतिशत की दृष्टि से इस उत्तर की तुलना उचित न होगा ।

विश्लेषण-सूची के पूर्ण सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक की बाहरी सजावट आकर्षक न होने का कारण प्रकाशककी अजागरूकता है ।

90 आन्ध्र प्रदेश के हिन्दी पाठ्यपुस्तक के लेखक को तेलुगु जानना आवश्यक है क्योंकि –

(1) छात्रों को तेलुगु एवं हिन्दी का तुलनात्मक ज्ञान मिल सके ।

(2) छात्रों को दो विभिन्न संस्कृतियों का परिचय दे सके ।

(3) छात्रों के तेलुगु एवं हिन्दी स्तर को दृष्टि में रखकर पुस्तक का निर्माण कर सके ।

(4) छात्रों के संभावित हिन्दी स्तर की कल्पना कर सके ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	115	34	93	20	262
प्रतिशत् :	43·89	12·98	35·50	7·63	100

इस प्रश्न के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि कुल 262 अध्यापकों में से 115 अध्यापकों का विचार है कि आन्ध्र प्रदेश छात्रों के हिन्दी पाठ्यपुस्तक के लेखक को तेलुगु जानना आवश्यक है क्योंकि इससे छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी का तुलनात्मक ज्ञान दे सकें । इस उत्तर के अत्यधिक मतदाताओं का प्रतिशत् 43·89 है । इसके बाद 93 अध्यापकों ने तीसरे उत्तर को स्वीकार किया है । इनका प्रतिशत् 35·50 है । इन उत्तरदाताओं का विचार है कि लेखक छात्रों के तेलुगु तथा हिन्दी स्तर को दृष्टि में रखकर पुस्तक का निर्माण करें ।

विश्लेषण की उत्तर संख्या सूची के अनुसार 2 और 4 का कोई विशेष उत्तर प्राप्त न होने के कारण इस पर विचार प्रकट नहीं किया जा सकता है ।

9। 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में प्राचीन कविताएँ न हों क्योंकि –

(1) इन कविताओं को समझना छात्रों के लिए कठिन होता है।

(2) ये कविताएँ छात्रों की ज्ञान-परिधि से बढ़कर है।

(3) गंभीर तथा दार्शनिक कविताओं के प्रति छात्र रुचि नहीं लेते हैं।

(4) प्राचीन कविताएँ छात्रों के रसास्वादन के लिए अनुपयोगी हैं।

	1	2	3	4	योग
संख्या	112	89	49	12	262
प्रतिशत्	42·75	33·97	18·70	4·58	100

प्रश्न 9। की विश्लेषण सूची के द्वारा यह पता चलता है कि कुल 262 अध्यापकों में से 112 अध्यापकों ने प्रश्न के प्रथम उत्तर को मान लिया है। इसके अनुसार 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में प्राचीन कविताएँ न हो क्योंकि छात्र इन कविताओं को समझ नहीं पाते हैं। उक्त उत्तर के समर्थकों का प्रतिशत् 42·75 है जो अन्य उत्तरों की तुलना में सर्वोच्च है। 89 अध्यापकों का मत है कि प्राचीन कविताएँ छात्रों की ज्ञान परिधि से बढ़कर हैं। इन अध्यापकों ने उक्त प्रश्न के दूसरे उत्तर को स्वीकार किया है जिनका प्रतिशत 33·97 है। तीसरे उत्तर को माननेवालों की संख्या 49 हैं जिनका प्रतिशत 18·70 है।

उक्त उत्तरों की तुलना में बहुसंख्यक उत्तर से यह ज्ञात होता हैं कि 8 वीं कक्षा के छात्र प्राचीन कविताओं को समझ नहीं पाते हैं।

92 8 वीं कक्षा की पुस्तक में पाठों का चयन ठीक नहीं है क्योंकि –

(1) उसके पाठ विषय पर आधारित हैं ।

(2) उसकी भाषा में एकरूपता नहीं है ।

(3) आवश्यक अभ्यास नहीं दिये गये हैं ।

(4) भाषा कौशल पर जोर नहीं दिया गया है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	56	18	102	86	262
प्रतिशत् :	21·38	6·87	38·93	32·82	100

इस प्रश्न की विश्लेषण सूची से यह पता चलता है कि 102 अध्यापकों ने हिन्दी पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अंत में आवश्यक अभ्यास न होने की बात प्रकट की है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 38·93 है । 92 प्रश्न संख्या का यह तीसरा बहुसंख्यक उत्तर है । इसके बाद 86 अध्यापकों का मत है कि पाठ्यपुस्तक के पाठ भाषा कौशल प्रदत्त करने में विफल है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 32·82 है । 56 अध्यापकों ने जिनका प्रतिशत 21·38 है इन्होंने पाठों के विषय पर आधारित माना हैं ।

उक्त बहुसंख्यक उत्तर के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 8वीं कक्षा की पुस्तक में पाठों का चयन ठीक नहीं है ।

93 8वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक को बदलना आवश्यक है क्योंकि –

(1) यह पुस्तक पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है ।

(2) इस पुस्तक में मानक शब्दों का प्रयोग नहीं है ।

(3) सभी पाठ निबंधात्मक हैं । ये पाठ छात्रों की रुचि को बढ़ाने में विफल है ।

(4) उसमें भाषा संबंधी अभ्यासों का अभाव है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	81	13	64	104	262
प्रतिशत्	30·92	4·96	24·43	39·69	100

कुल संख्या में 104 अध्यापकों का विचार है कि 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक को बदलना चाहिए । क्योंकि उसमें भाषा संबंधी अभ्यास नहीं हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 39·69 है । इसके बाद 64 उत्तरदाताओं का विचार है कि पाठ सभी निबंधात्मक होने के कारण बालक इनको पढ़ने में रुचि नहीं दिखाते हैं ।

बहुसंख्यक उत्तर के आधार से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि पाठ्यपुस्तक को बदलना आवश्यक है ।

94 8वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक छात्रों के भाषा ज्ञान के विकास में उपयोगी नहीं है - क्योंकि -

(1) लेखक ने विषय ज्ञान की ओर ध्यान दिया है ।

(2) अभ्यासों में छात्रों के भाषा ज्ञान से संबंधित प्रश्न नहीं हैं ।

(3) बहुत पाठ निबंधात्मक हैं ।

(4) भाषा ज्ञान की दृष्टि में रखकर पाठ नहीं लिखे गये हैं ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	29	67	78	88	262
प्रतिशत् :	11·07	25·57	29·77	33·59	100

कुल संख्या में 88 अध्यापकों का कहना है कि 8वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक भाषा ज्ञान की दृष्टि में रखकर नहीं लिखी गई है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 33·59 है । इसके बाद का स्थान उन 78 अध्यापकों का है जिन्होंने तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया है । इनके अनुसार पाठ निबंधात्मक है । इनका प्रतिशत् 29·77 है ।

बहुसंख्यक उत्तर के आधार से यह कहा जा सकता है कि आठवीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक भाषा ज्ञान को बढ़ाने में सहायक नहीं है ।

95 हिन्दी पाठ्यपुस्तक में तेलुगु संस्कृति एवं आचार-विचार का समावेश होना आवश्यक है क्योंकि –

(1) छात्र नयी भाषा के द्वारा अपनी संस्कृति एवं आचार-विचारों को जानकर उन पाठों को पढ़ना चाहते हैं ?
(2) छात्रों को विषय जानने में मदद मिलती है ।
(3) छात्रों को हिन्दी के प्रति रुचि उत्पन्न होती है ।
(4) अन्य .. ..

	1	2	3	4	योग
संख्या :	123	47	92	-	262
प्रतिशत् :	46.95	17.94	35.11	-	100

95 प्रश्न की विश्लेषण सूची के अनुसार यह ज्ञात होता है कि 262 हिन्दी अध्यापकों में से 123 अध्यापकों का यह मत है कि छात्र नयी भाषा के द्वारा अपनी संस्कृति एवं आचार विचारों को जानकर उस भाषा को पढ़ना चाहते हैं । इन अध्यापकों का प्रतिशत् = 46.95 है । इसके बाद 92 अध्यापकों ने उपर्युक्त प्रश्न के तीसरे उत्तर के समर्थक हैं । इनके मतानुसार तेलुगु संस्कृति एवं आचार-विचारों का समावेश हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में होने से छात्रों में हिन्दी के प्रति रुचि उत्पन्न होती है । इनका प्रतिशत् 35.11 है । अन्य उत्तर विचारणीय नहीं है ।

बहुमत अध्यापकों का कहना है कि हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में तेलुगु भाषा-भाषियों की संस्कृति एवं आचार-विचारों का समावेश होना आवश्यक है ।

96 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक छात्रों की रुचि, स्थान, मनोविज्ञान एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है क्योंकि –

(1) पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन बातों पर ध्यान नहीं दिया गया है ।
(2) पाठ्यक्रम के निर्माण में प्रथम एवं द्वितीय भाषा के उद्देश्यों का सही स्पष्टीकरण नहीं है ।
(3) अलग-अलग लेखों का चयन किया गया है ।
(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	125	111	26	-	262
प्रतिशत् :	47.71	42.37	9.92	-	100

विश्लेषण सूची 96 के अनुसार 125 अध्यापकों ने प्रथम उत्तर को स्वीकार किया है । जिनके मतानुसार पाठ्यक्रम छात्रों की रुचि, स्थान एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप इसलिए नहीं है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में इन बातों पर ध्यान नहीं दिया गया है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 47.71 है । दूसरा स्थान 111 अध्यापक उत्तरदाताओं का है जिनके मतानुसार पाठ्यक्रम के निर्माण में प्रथम एवं द्वितीय भाषा के उद्देश्यों का सही स्पष्टीकरण नहीं है । अन्य 26 अध्यापकों का उत्तर, संख्या की दृष्टि से विचारणीय नहीं है ।

97 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी को प्रत्यक्ष पद्धति के द्वारा समझ नहीं सकते हैं। क्योंकि –

(1) पाठशालाओं में हिन्दी का वातावरण नहीं है।
(2) आधारभूत शब्दावली का अभाव है।
(3) छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचित नहीं है।
(4) पाठ्यपुस्तकों का चयन इसको ध्यान में रखकर नहीं किया गया है।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	164	21	32	45	262
प्रतिशत् :	62.60	8.02	12.21	17.17	100

प्रश्न संख्या 97 में 164 अध्यापकों ने यह उत्तर दिया है कि 8 वीं कक्षा के छात्र प्रत्यक्ष पद्धति के द्वारा पाठ नहीं समझ सकते हैं क्योंकि छात्रों को हिन्दी का वातावरण उपलब्ध नहीं है। इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 62.60 है जो तुलना में सर्वोच्च है। दूसरा स्थान उन अध्यापकों का है जिन्होंने चतुर्थ उत्तर को माना है। इनका प्रतिशत 17.17 है।

बहुसंख्यक उत्तर के अनुसार छात्र हिन्दी वातावरण के अभाव के कारण प्रत्यक्ष पद्धति से नहीं समझ सकते हैं।

98 प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण सुचारु रूप से नहीं होता है क्योंकि –

(1) इन कक्षाओं में हिन्दी का शिक्षण पर कम ध्यान दिया जाता है ।

(2) इन कक्षाओं में छात्रों को केवल वर्णमाला का ही ज्ञान दिया जाता है ।

(3) अध्यापक शिक्षण पद्धतियाँ नहीं जानते हैं ।

(4) इन कक्षाओं में छात्रों की रुचि एवं स्तर की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	194	45	20	3	262
प्रतिशत् :	74·05	17·18	7·63	1·14	100

प्रश्न संख्या 98 की विश्लेषण सूची के अनुसार बहु संख्यक अध्यापकों ने यह माना है कि प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण पर अध्यापक कम ध्यान देते हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 74·05 है अन्य उत्तरों की तुलना में यह सर्वोच्च है । 45 अध्यापकों ने कहा कि प्रारंभिक कक्षाओं में छात्रों को केवल वर्णमाला का ही ज्ञान दिया जाता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 17·18 है ।

बहुसंख्यक अध्यापकों के मतानुसार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण सुचारु रूप से नहीं होता है ।

99 भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री की आवश्यकता है क्योंकि -

(1) सहायक सामग्री की सहायता से नवीन ज्ञान स्पष्ट हो जाता है ।

(2) अध्यापन रोचक होता है ।

(3) छात्रों के अवधान को केन्द्रित करने के लिए सहायक सामग्री उत्तम साधन हैं ।

(4) अन्य : ....

	1	2	3	4	योग
संख्या :	28	97	112	25	262
प्रतिशत् :	10·69	37·02	42·75	9·54	100

इस प्रश्न के उत्तर में 112 अध्यापकों ने यह बताया है कि छात्रों के अवधान को केन्द्रित करने में सहायक सामग्री उत्तम साधन है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 42·75 है । 97 अध्यापकों ने प्रश्न संख्या की द्वितीय उत्तर को स्वीकार किया है जिनका प्रतिशत् 37·02 है ।

बहुसंख्यक मत के अनुसार भाषा शिक्षण में छात्रों के अवधान को केन्द्रित करने में सहायक सामग्री का प्रथम स्थान है ।

100 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी को सुनकर समझने में विफल होते हैं क्योंकि –

(1) छात्रों को हिन्दी सुनने का मौका नहीं मिलता है ।
(2) हिन्दी का व्यवहार घर में नहीं होता है ।
(3) अध्यापक हिन्दी माध्यम से नहीं पढ़ाता है ।
(4) छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचित नहीं है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	118	110	30	4	262
प्रतिशत् :	45·04	41·98	11·45	1·53	100

8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी भाषा को सुनकर समझ नहीं सकते हैं क्योंकि छात्रों को हिन्दी सुनने का मौका नहीं मिलता है । इस विचार से 118 अध्यापक सहमत हैं जिनका प्रतिशत 45·04 है । 110 अध्यापकों के विचार में हिन्दी का व्यवहार घर में न होने के कारण छात्र हिन्दी को सुनकर समझ नहीं सकते हैं । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र हिन्दी को सुनकर समझ नहीं सकते हैं ।

101 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में वार्तालाप नहीं कर सकते हैं क्योंकि --

(1) कक्षा में वार्तालाप का अभ्यास नहीं कराया जाता है ।

(2) हिन्दी का शिक्षण तेलुगु माध्यम से होता है ।

(3) समाज में भी हिन्दी का प्रयोग नहीं होता है ।

(4) हिन्दी का वातावरण घर में नहीं मिलता है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	91	68	63	40	262
प्रतिशत्	34·73	25·95	24·05	15·27	100

इस प्रश्न की विश्लेषण-सूची से यह ज्ञात होता है कि 262 हिन्दी अध्यापकों में से 91 हिन्दी अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में वार्तालाप इसलिए नहीं कर सकते हैं कि कक्षा में वार्तालाप का अभ्यास नहीं कराया जाता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 34·73 है । इसके बाद 68 अध्यापकों ने प्रश्न संख्या के द्वितीय उत्तर को स्वीकार किया है । इनके अनुसार हिन्दी का शिक्षण तेलुगु माध्यम से होने के कारण छात्र कक्षा में हिन्दी में वार्तालाप नहीं कर सकते हैं इन अध्यापकों का प्रतिशत् 25·95 है । 63 अध्यापकों ने कहा कि समाज में हिन्दी का व्यावहारिक प्रयोग नहीं है । इनका प्रतिशत 24·05 है ।

उक्त अध्ययन से यह पता चलता है कि बहुसंख्यक अध्यापकों ने प्रथम उत्तर के प्रति अपना मत दिया है इसलिए यह मान्य है ।

102 8 वीं कक्षा के छात्र सस्वर वाचन नहीं कर सकते हैं क्योंकि –

(1) अध्यापक, छात्रों से सस्वर वाचन का अभ्यास नहीं कराना ।

(2) छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचय प्राप्त नहीं करना ।

(3) हिन्दी सस्वर वाचन में तेलुगु ध्वनियों का व्याघात पहुँचना ।

(4) अध्यापक का आदर्श-वाचन शुद्ध एवं अनुकरणीय नहीं होना ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	89	121	46	6	262
प्रतिशत् :	33·97	46·18	17·56	2·29	100

कुल 262 अध्यापकों में से 121 अध्यापकों ने यह कहा है कि छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचय प्राप्त नहीं करने के कारण वे सस्वर वाचन नहीं कर सकते हैं । इन अध्यापकों का प्रतिशत 46·18 है । इसके बाद दूसरा स्थान उन 89 अध्यापकों का है जिन्होंने प्रथम उत्तर को मान लिया है उनके अनुसार अध्यापक छात्रों से सस्वर वाचन का अभ्यास नहीं कराते हैं । इनका प्रतिशत 33·97 है । अन्य उत्तर विचारणीय नहीं है । बहुसंख्यक मत के आधार से यह कहा जाता है कि 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचय प्राप्त नहीं रखते हैं ।

103 8 वीं कक्षा के छात्र अपने विचारों को लिखकर प्रकट नहीं कर सकते हैं क्योंकि -

(1) हिन्दी ध्वनियों का ज्ञान कम रहना ।

(2) हिन्दी वाक्य संरचना का ज्ञान कम रहना ।

(3) हिन्दी व्याकरण का ज्ञान कम रहना ।

(4) भाव प्रकट करने की प्रक्रिया न जानना ।

	1	2	3	4	योग
संख्या :	19	107	76	60	262
प्रतिशत् :	7·25	40·84	29·01	22·90	100

इस प्रश्न की विश्लेषण सूची से यह पता चलता है कि कुल संख्या में 107 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि छात्र हिन्दी की वाक्य संरचना से ब अपरिचित होने के कारण वे अपने विचारों को हिन्दी में प्रकट लिखकर प्रकट नहीं कर सकते हैं । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 40·84 है । इसके बाद की संख्या 76 अध्यापकों की है जिनका मत है कि छात्र हिन्दी व्याकरण का ज्ञान कम क रखने के कारण वे अपने विचारों को लिखकर प्रकट नहीं कर पाते हैं । इनका प्रतिशत् 29·01 है ।

बहुसंख्यक उत्तर के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र हिन्दी की वाक्य संरचना का ज्ञान नहीं रखते हैं ।

104 मातृभाषा का प्रभाव सबसे अधिक हिन्दी भाषा के इस पक्ष पर पड़ता है ? यह चिह्न ( ) लगाइए -

(1) उच्चारण ( ) (2) वर्तनी ( )
(3) अनुतान ( ) (4) व्याकरण ( )
(5) शैली ( ) (6) अन्य ( )

	1	2	3	4	5	अन्य	योग
संख्या	175	68	9	8	2	-	262
प्रतिशत्	66·79	25·96	3·44	3·05	0·76		100

कुल 262 अध्यापकों में से 175 अध्यापकों ने इस बात को मान लिया है कि मातृभाषा का सबसे अधिक प्रभाव छात्रों के उच्चारण पर पड़ता है । इनका प्रतिशत् 66·79 है । इसके बाद का स्थान 68 अध्यापकों का है जिनके मतानुसार मातृभाषा का सबसे अधिक प्रभाव वर्तनी पर पड़ता है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 25·96 है । अन्य उत्तर विचारणीय नहीं है ।

अधिक संख्यक अध्यापकों का यह विचार है कि मातृभाषा का सबसे अधिक प्रभाव छात्रों के उच्चरण पर पड़ता है ।

105 तेलुगु भाषा भाषी छात्र संयुक्ताक्षर लिखने में गलतियाँ करते हैं क्योंकि –

(1) तेलुगु के छात्र शब्द के पूर्ण रूप का उच्चारण करके लिखते हैं ।
(2) हिन्दी के ध्वनि विज्ञान का ज्ञान नहीं रखते हैं ।
(3) दोनों की ध्वनि प्रक्रिया मालूम न होने के कारण हिन्दी में गलतियाँ करते हैं ।
(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या	69	63	129	1	262
प्रतिशत्	26·34	24·05	49·23	0·38	100

कुल संख्या में 129 संख्यक हिन्दी अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि छात्रों को हिन्दी तथा तेलुगु भाषा की ध्वनि प्रक्रिया मालूम न रहने के कारण छात्र संयुक्ताक्षर लिखने में गलतियाँ करते हैं । इनका प्रतिशत् 49·23 है । 69 अध्यापकों का यह मत हैं कि तेलुगु के छात्र शब्द के पूर्ण रूप का उच्चारण एक ही बार करते हैं इसलिए उन्हें कुछ संयुक्ताक्षर लिखने में गलती होती है । इनका प्रतिशत् 26·34 है ।

अन्य उत्तर विचारणीय नहीं है । बहुसंख्यक मत के अनुसार यह मानना पड़ता है कि छात्र संयुक्ताक्षर लिखते समय गलतियाँ इसलिए करते हैं कि वे दो भाषाओं की ध्वनि प्रक्रिया से अ परिचित ह नहीं है ।

106 तेलुगु भाषा-भाषियों के लिए हिन्दी की लिंग व्यवस्था कठिन है क्योंकि –

(1) तेलुगु में तीन और हिन्दी में केवल दो ही लिंग हैं ।

(2) अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग-निर्णय में गलती होती है ।

(3) हिन्दी में लिंग निर्णय प्रायः रुप के आधार पर होता है ।

(4) कर्तृकारक बहुवचन का रुप शब्द के लिंग पर आधारित होता है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	99	142	19	2	262
प्रतिशत्	37·79	54·20	7·25	0·76	100

262 अध्यापकों में से 142 अध्यापकों का कहना है कि नपुंसक लिंग तेलुगु में हैं इसलिए हिन्दी के इन शब्दों के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 54·20 है । इसके बाद का स्थान उन 99 अध्यापकों का है इन्होंने प्रश्न के प्रथम उत्तर को स्वीकार किया है उनका प्रतिशत् 37·79 है ।

बहुसंख्यक मत के अनुसार यह कहा जा सकता है कि तेलुगु छात्रों को कुछ नपुंसक लिंग के शब्दों के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है ।

107 तेलुगुभाषियों के लिए "ने" प्रत्यय के प्रयोग में कठिनाई होती है क्योंकि –

(1) तेलुगु में "ने" प्रत्यय से मिलती जुलती विभक्ति नहीं है ।

(2) "ने" के प्रयोग के अनेक नियम एवं अपवाद हैं ।

(3) "ने" प्रत्यय का प्रयोग तेलुगु छात्रों को संदिग्ध में डाल देता है ।

(4) अन्य .....

	1	2	3	4	योग
संख्या	45	114	98	5	262
प्रतिशत्	17·18	43·51	37·40	1·91	100

कुल 262 अध्यापकों में 114 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि तेलुगु भाषियों के लिए "ने" प्रत्यय के प्रयोग में कठिनाई इसीलिए होती है कि "ने" के प्रयोग के अनेक नियम एवं अपवाद हैं । यह बहुसंख्यक मत होने के नाते इसको स्वीकार किया जाता है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 43·51 है । इसके बाद का स्थान उन 98 अध्यापकों का है जिनके विचार में "ने" प्रत्यय का प्रयोग तेलुगु छात्रों को संदिग्ध में डाल देता है । इनका प्रतिशत् 37·40 है । प्रतिशत की दृष्टि अन्य विचारणीय नहीं है ।

108 हिन्दी के मिश्र-वाक्यों का प्रयोग तेलुगु छात्रों के लिए क्यों कठिन है ?

(1) तेलुगु की वाक्य रचना हिन्दी की तुलना में सरल करनाए ।

(2) हिन्दी में मिश्रित एवं संयुक्त वाक्यों का प्रयोग अधिक होना ।

(3) हिन्दी वाक्य-रचना का ज्ञान छात्रों को न होना ।

(4) अध्यापक प्रारंभिक कक्षाओं में इसका अभ्यास नहीं कराना ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	21	67	115	59	262
प्रतिशत्	8·02	25·57	43·89	22·52	100

कुल संख्या में 115 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि हिन्दी वाक्य रचना का ज्ञान न होने के कारण मिश्र वाक्यों का प्रयोग तेलुगु छात्रों के लिए कठिन कार्य है । इनका प्रतिशत् 43·89 है । 67 अध्यापकों ने इस प्रश्न के दूसरे उत्तर को स्वीकार किया है । इनके मतानुसार हिन्दी मे मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों का प्रयोग अधिक है । इनका प्रतिशत् 25·57 है । अन्य प्रतिशत् की दृष्टि से अप्रमुख है ।

बहुमत के अनुसार इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि हिन्दी वाक्य का ज्ञान न होने के कारण मिश्र वाक्यों का प्रयोग तेलुगु वाक्यों के लिए कठिन कार्य है ।

109 तेलुगु भाषा-भाषियों को हिन्दी तथा तेलुगु की समानताएँ एवं असमानताएँ बताना आवश्यक है क्योंकि –

(1) छात्रों को दोनों भाषाओं की प्रकृति से परिचय प्राप्त होता है ।
(2) हिन्दी सीखने में आसानी होती है ।
(3) दोनों भाषाओं का सांस्कृतिक परिचय प्राप्त होता है ।
(4) अन्य ....

	1	2	3	4	योग
संख्या	119	133	8	2	262
प्रतिशत्	45·42	50·77	3·05	0·76	100

कुल संख्या में 133 अ संख्यक हिन्दी अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि तेलुगु छात्रों को हिन्दी की समानताओं तथा असमानताओं का ज्ञान देना आवश्यक है जिससे इन छात्रों को हिन्दी सीखना आसान हो जाता है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 50·77 है । दूसरे 119 अध्यापकों ने प्रश्न के प्रथम उत्तर से सहमत है जिसका प्रतिशत् 45·42 है । अन्य प्रतिशत् की दृष्टि से विचारणीय नहीं है ।

बहुमत के आधार पर प्रश्न का दूसरा उत्तर स्वीकृत है ।

110 हिन्दी अध्यापकों की दशा संतोषजनक नहीं है क्योंकि –

(1) अधिकारी हिन्दी अध्यापकों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं देते है ।

(2) प्रधानध्यापक हिन्दी को अप्रमुख विषय मानते है ।

(3) हिन्दी अध्यापकों को प्रधानध्यापक की पदवी नहीं दी जाती है ।

(4) हिन्दी अध्यापकों का वेतन केन्द्रीय सरकार के अनुदान पर निर्भर है ।

	1	2	3	4	योग
संख्या	180	52	30	—	262
प्रतिशत्	68·70	19·85	11·45	—	100

कुल 262 अध्यापकों मे से 180 अध्यापकों इस मत से सहमत है कि आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी अध्यापकों की दशा ठीक नही है । कारण यह है कि अधिकारी हिन्दी अध्यापकों की ओर ध्यान नहीं देते है । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 68·70 है । दूसरा स्थान उन अध्यापकों का है जिन्होंने प्रश्न के द्वितीय उत्तर को स्वीकार किया है । इनका प्रतिशत् 19·85 है ।

बहुसंख्यक उत्तर से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अधिकारी हिन्दी अध्यापकों की ओर विशेष ध्यान न देने के नाते उनकी दशा संतोषजनक नही है ।

111 जब तक अहिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी को अनिवार्य रूप से नहीं सीखेंगें तब तक हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सही स्थान प्राप्त नहीं होगा ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्याः	234	18	10	—	262
प्रतिशत्	89·31	6·87	3·82	—	100

उक्त तालिका के अनुसार कुल अध्यापकों में से 234 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि जब तक हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी को अनिवार्य रूप से नहीं सीखेंगे तब तक हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त नहीं होगा । इनका प्रतिशत् 89·31 है । इसके विरुध्द् में 18 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया इनका प्रतिशत् 6·87 है । बहुसंख्यक मत प्रथम उत्तर के पक्ष में होने के कारण यही स्वीकृत है ।

112 हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में तब तक व्यवहृत नहीं होगा जब तक उसे कार्यालयों में अनिवार्य भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया जायेगा ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्याः	233	17	12	—	262
प्रतिशत्	88•93	6•49	4•58	—	100

कुल उत्तर संख्या में 233 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि हिन्दी को कार्यालयों मे अनिवार्य भाषा के रूप मे व्यवहृत करने पर ही यह संपर्क भाषा का सही स्थान प्राप्त करेगा । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 88•93 होने के कारण यह स्वीकृत है । अन्य 17 अध्यापकों ने इसके विरोध में अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 6•49 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 12 उनका प्रतिशत् 4•58 होने के नाते यह उत्तर अप्रमुख है ।

1.13 सरकार को " त्रिभाषा - सूत्र " के सही पालन पर ध्यान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	रिक्त	योग
संख्याः	255	3	4	—	262
प्रतिशत्	97·33	1·14	1·53	—	100

कुल संख्या मे 255 हिंदी अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि सरकार को त्रिभाषा - सूत्र के सही पालन पर ध्यान देना चाहिए । इनका प्रतिशत् 97·33 है । केवल 3 अध्यापकों ने इसके प्रति अपनी असम्मति प्रकट की । इनका प्रतिशत् 1·14 है । इसलिए अधिक संख्यक उत्तर को हम स्वीकार करते हुए यह कह सकते हैं कि सरकार को त्रिभाषा - सूत्र के पालन पर ध्यान देना चाहिए ।

114 आन्ध्र प्रदेश सरकार को हिन्दी को सही स्थान देना चाहिए और सभी स्तरों पर इसको अनिवार्य विषय बनाना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	251	5	6	262
प्रतिशत् :	95·80	1·91	2·29	100

कुल संख्या में 251 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार हिन्दी को सभी स्तरों पर अनिवार्य करके उचित स्थान देना चाहिए । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 95·80 है । 5 अध्यापकों ने इस सुझाव को नहीं माना है । इनका प्रतिशत केवल *ः 1·91 है । इसलिए 251 अध्यापकों का सुझाव स्वीकृत है । इस संबंध में 6 अध्यापक संदिग्ध हैं ।

115 हिन्दी के प्रचार एवं प्रचार करने की जिम्मेदारी प्रान्तीय सरकार पर होनी चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	230	24	8	262
प्रतिशत्	87·79	9·16	3·05	100

कुल संख्या में 230 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की जिम्मेदारी प्रान्तीय सरकार को लेना उचित है । इनका प्रतिशत् 87·79 है । 24 अध्यापकों ने इसको स्वीकार नहीं किया है जिनका प्रतिशत् 9·16 है और 8 अध्यापक संदिग्ध हैं जिनका प्रतिशत 3·05 है । इसलिए 230 अध्यापकों का मत स्वीकृत है ।

116 नौकरी देते समय हिन्दी योग्यता को विशेष योग्यता के रूप में लेना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	245	13	4	262
प्रतिशत् :	93·51	4·96	1·53	100

कुल अध्यापकों में से 245 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि नौकरी देते समय हिन्दी योग्यता को विशेष योग्यता के रूप में मान्यता देनी चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 93·51 है । इसके असम्मत में 13 अध्यापकों ने अपना विचार प्रकट किया हैं । बहुमत संख्यक अध्यापकों का प्रथम उत्तर स्वीकृत है ।

117 छात्रों को हिन्दी सिखाने अध्यापक को सही वातावरण का निर्माण करना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	258	2	2	262
प्रतिशत्	98·48	0·76	0·76	100

कुल संख्या में बहु संख्यक 258 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि छात्रों को हिन्दी सीखने के लिए सही वातावरण का निर्माण करना चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 98·48 है । इसके विपक्ष में 2 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 0·76 मात्र है और संदिग्ध विचार रखने वाले अध्यापकों की संख्या 2 है और इनका प्रतिशत 0·76 होने के नाते इनके संबंध में विचार प्रकट नहीं किया जाता है ।

118 हिन्दी में उत्तीर्ण होना आवश्यक माना जाए।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	257	3	2	262
प्रतिशत् :	98·10	1·14	0·76	100

कुल अध्यापक संख्या में 257 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि छात्रों को हिन्दी में उत्तीर्ण होना आवश्यक बनाना चाहिए। इन अध्यापकों का प्रतिशत् 98·10 है। यह बहुसंख्यक उत्तर होने के नाते स्वीकृत है। तीन अध्यापकों ने इस सुझाव के प्रति अपनी असम्मति प्रकट की है। इनका प्रतिशत 1·14 मात्र है। 2 अध्यापक इस पर संदिग्ध हैं। इनका प्रतिशत 0·76 है।

119 द्वितीय भाषा हिन्दी के उत्तीर्णांक अन्य विषयों के समान हो।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	244	13	5	262
प्रतिशत्	93·13	4·96	1·91	100

कुल संख्या 262 में से 244 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है द्वितीय भाषा हिन्दी के उत्तीर्णांकों को अन्य विषयों के समान मानना चाहिए। इन अध्यापकों का प्रतिशत् 93·13 है। यह बहुसंख्यक उत्तर होने के नाते स्वीकृत है। 13 अध्यापक जो इस पर असम्मत है जिनका प्रतिशत 4·96 है। संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 5 और उनका प्रतिशत 1·91 है।

120 हिन्दी के वातावरण को बनाये रखने के लिए हिन्दी अध्यापक कक्षा में हिन्दी माध्यम से ही पढ़ायें ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	244	12	6	262
प्रतिशत्	93·13	4·58	2·29	100

कुल अध्यापक संख्या में 244 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि हिन्दी वातावरण को कक्षा में बनाये रखने के लिए हिन्दी अध्यापक को हिन्दी माध्यम से ही पढ़ाना उचित होगा । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 93·13 है । इसके विपरीत 12 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है इनका प्रतिशत् 4·58 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 6 और प्रतिशत 2·29 है । अतः बहुसंख्यक उत्तर स्वीकृत है ।

121 तेलुगु के साथ साथ आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाना आवश्यक है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	244	7	11	262
प्रतिशत्	93·13	2·67	4·20	100

कुल संख्या में 244 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि आन्ध्र प्रदेश में तेलुगु के साथ हिन्दी को भी अनिवार्य विषय बना दिया जाये । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 93·13 है । इसके विरुद्ध 7 अध्यापकों ने अपना मत दिया है उनका प्रतिशत 2·67 है । 11 अध्यापकों का मत संदिग्ध है । उनका प्रतिशत 4·20 है । अतः बहुसंख्यक उत्तर एवं सुझाव स्वीकृत हैं ।

122 प्रारंभिक कक्षाओं में व्यावहारिक हिन्दी शिक्षण पर अधिक ध्यान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	249	8	5	262
प्रतिशत	95·04	3·05	1·91	100

प्रारंभिक कक्षाओं में व्यावहारिक हिन्दी शिक्षण पर ध्यान देना चाहिए । इस सुझाव को 249 हिन्दी अध्यापकों ने दिया । कुल संख्या में उनका प्रतिशत 95·04 है । यह बहुसंख्यक उत्तर है । इसके विरुद्ध में 8 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है उनका प्रतिशत 3·05 है और 5 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध में हैं इनका प्रतिशत 1·91 है । अतः बहुसंख्यक सुझाव स्वीकृत है ।

123 भाषा-अध्ययन के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है । इसलिए सप्ताह में 6 घंटों का समय होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	234	18	10	262
प्रतिशत्	89·31	6·87	3·82	100

कुल अध्यापकों की संख्या में 234 अध्यापक जिनका प्रतिशत 89·31 है उनका विचार है कि हिन्दी शिक्षण के लिए सप्ताह में छः घंटों का समय होना चाहिए । इसके विरोध में 18 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है इनका प्रतिशत 6·87 है । 10 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध में है । इनका प्रतिशत 3·82 है । अतः सर्वमान्य प्रथम सुझाव स्वीकृत हैं ।

124 प्रत्येक हाईस्कूल में एक सीनियर हिन्दी पंडित और माध्यमिक स्कूल के लिए जूनियर हिन्दी पण्डितों की नियुक्ति होनी चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	258	3	1	262
प्रतिशत्	98•48	1•14	0•38	100

कुल संख्या में 258 अध्यापकों का यह सुझाव है कि प्रत्येक हाईस्कूल में एक सीनियर हिन्दी पंडित और माध्यमिक स्कूलों में एक जूनियर हिन्दी पंडित की नियुक्ति होनी चाहिए । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 98•48 है । इसके विरूद्ध 3 अध्यापकों ने अपना विचार प्रकट किया है । इनका प्रतिशत 1•14 है । एक अध्यापक का मत संदिग्ध में है इनका प्रतिशत 0•38 है । अतः बहुसंख्यक सुझाव स्वीकृत है ।

125 तेलंगाना प्रान्त के समान आन्ध्र प्रान्त में भी हिन्दी शिक्षण 5 वीं कक्षा से आरंभ करना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	232	22	8	262
प्रतिशत्	88•55	8•40	3•05	100

232 अध्यापकों का यह सुझाव है कि तेलंगाना प्रान्त के जैसा आन्ध्र प्रान्त में भी हिन्दी शिक्षण पाँचवी कक्षा से आरंभ करना चाहिए । उन अध्यापकों का प्रतिशत 88•55 है । यह बहुसंख्यक उत्तर होने के नाते स्वीकृत है । 22 अध्यापकों ने इस सुझाव को नहीं माना । इनका प्रतिशत 8•40 है । अन्य संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 8 और प्रतिशत् 3•05 है । अतः सर्वाधिक अध्यापकों का सुझाव स्वीकृत है ।

126 हिन्दी कक्षा में छात्रों की संख्या 35 से अधिक न हो ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	250	7	5	262
प्रतिशत	95·42	2·67	1·91	100

उक्त विश्लेषण तालिका के अनुसार 250 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि कक्षा में 35 से अधिक छात्र न रहे जिससे भाषा शिक्षण में असुविधा होती है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 95·42 है । इसके विरोध में 7 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत 2·67 है । 5 अध्यापक इस संदर्भ में संदिग्ध है उनका प्रतिशत 1·91 है । अतः बहुसंख्यक सुझाव स्वीकृत है ।

127 द्वितीयभाषा हिन्दी पाठ्यक्रम का निर्माण अनुभवी अध्यापकों की सहायता से होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	258	3	1	262
प्रतिशत	98·48	1·14	0·38	100

कुल अध्यापकों में से 258 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि द्वितीय भाषा हिन्दी का पाठ्यक्रम का निर्माण अनुभवी हिन्दी अध्यापकों की सहायता होना चाहिए । इनका प्रतिशत 98·48 है । यह बहुसंख्यक मत होने के कारण स्वीकृत है । 3 अध्यापकों ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया है और एक अध्यापक ने इस बात पर अपनी संदिग्धता प्रकट किया है ।

128 8 वीं कक्षा का पाठ्यक्रम छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	258	4	-	262
प्रतिशत्	98·48	1·52	-	100

258 अध्यापकों का सुझाव है कि हिन्दी पाठ्यक्रम छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप होना चाहिए । इनका प्रतिशत् 98·48 है । बहुसंख्यक उत्तर होने के नाते स्वीकृत है । अन्य 4 अध्यापकों ने इस मत के विरुद्ध में अपना विचार प्रकट किया हैं इनका प्रतिशत् 1·52 है ।

129 पाठ्यक्रम के निर्माण में स्थानीय पुट को महत्व देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	244	13	5	262
प्रतिशत्	93·13	4·96	1·91	100

उपर्युक्त विश्लेषण-सूची के आधार पर कुल अध्यापकों में से 244 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में स्थानीय पुट को महत्व देना चाहिए । उन अध्यापकों का प्रतिशत् 93·13 है । इस सुझाव को 13 अध्यापकों ने स्वीकार नहीं किया है उनका प्रतिशत् 4·96 है । 5 अध्यापकों ने अपनी संदिग्धता प्रकट की जिनका प्रतिशत् 1·91 है ।

130 पाठ्यक्रम के निर्माण में भाषागत सभी कौशलों पर ध्यान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	247	10	5	262
प्रतिशत्	94•27	3•82	1•91	100

कुल 262 अध्यापकों में से उक्त विश्लेषण सूची के अनुसार 247 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि पाठ्यक्रम के निर्माण में भाषागत सभी कौशलों पर ध्यान देना चाहिए । इस सुझाव के उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 94•27 है । अन्य 10 अध्यापकों ने इस सुझाव को नहीं माना है जिनका प्रतिशत् 3•82 है । 5 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध में है उनका प्रतिशत् 1•91 है । अतः बहुसंख्यक सुझाव स्वीकृत है ।

131 8 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम को छात्रों के स्तर के अनुरूप रहने के लिए आधारभूत शब्दों का निर्माण होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	255	1	6	262
प्रतिशत्	97• 33	0• 38	2• 29	100

कुल संख्या में उक्त विश्लेषण सूची के 255 अध्यापकों का यह सुझाव है कि पाठ्यक्रम को छात्रों के स्तर के अनुरूप रखने के लिए आधारभूत शब्दों का निर्माण होना चाहिए । उनका प्रतिशत् 97• 33 है । इस सुझाव को 1 अध्यापक ने नहीं माना जिनका प्रतिशत् 0• 38 है और 6 अध्यापक इस संदर्भ में संदिग्ध है उनका प्रतिशत 2• 29 हैं । अतः बहुसंख्यक सुझाव स्वीकृत है ।

132 8 वीं कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तक स्तरानुसार होनी चाहिए और इसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति पूर्ण रूप से हो ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	259	2	1	262
प्रतिशत्	98·86	0·76	0·38	100

विश्लेषण सूची के अनुसार 259 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक स्तरानुसार होनी चाहिए और पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति उसमें पूर्ण रूप से हो । उन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 98·86 है । इसके विरुद्ध में 2 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत 0·76 है । संदिग्ध अध्यापक 1 है उनका प्रतिशत 0·38 है । बहुसंख्यक अध्यापकों ने प्रश्न के प्रथम उत्तर का समर्थन किया है ।

133 8 वीं कक्षा की पुस्तक आकर्षक हो और उसमें संदर्भानुसार अच्छे चित्रों का समावेश होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग

उक्त सूची के विश्लेषण के अनुसार कुल संख्या में 245 संख्यक अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि 8 वीं कक्षा की पुस्तक आकर्षक हो और उसमें संदर्भानुसार अच्छे चित्रों का समावेश होना चाहिए । उक्त प्रत्युत्तरदाताओं का प्रतिशत 93·51 है । इनके अतिरिक्त 12 अध्यापकों ने इस सुझाव से सहमत नहीं है । उनका प्रतिशत् 4·58 है । अन्य संदिग्ध उत्तरदाताओं का प्रतिशत 1·91 है । अतः अधिक संख्यक यह सुझाव स्वीकृत है ।

2 75

134 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक नूतन विधियों के अनुरूप होना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	255	4	3	262
प्रतिशत्	97·33	1·53	1·14	100

कुल अध्यापकों में से 255 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक नूतन विधियों के अनुरूप हो । इनका प्रतिशत् 97·33 हैं । 4 अध्यापकों ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया है । जिनका प्रतिशत 1·53 है । 3 अध्यापकों का मत संदिग्ध में हैं उनका प्रतिशत 1·14 है । अतः अधिक संख्यक अध्यापकों का सुझाव स्वीकृत है ।

135 छात्रों की मातृभाषा का प्रभाव हिन्दी भाषा के किस पक्ष पर पड़ता है इसको जानने के लिए आन्ध्र प्रदेश के हिन्दी अध्यापक को तेलुगु जानना आवश्यक है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	241	16	5	262
प्रतिशत्	91·98	6·11	1·91	100

कुल संख्या में 241 हिन्दी अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि छात्रों की मातृभाषा का प्रभाव हिन्दी भाषा पर किस प्र पक्ष पर पड़ता है इसको जानने के लिए अ हिन्दी अध्यापक को तेलुगु जानना आवश्यक है । इनका प्रतिशत 91·98 है । यह बहुसंख्यक उत्तर हैं । इसके विरोध में 16 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया जिनका प्रतिशत 6·11 है । अन्य 5 संदिग्ध अध्यापकों का प्रतिशत 1·91 मात्र है । अतः बहुसम्मत सुझाव को स्वीकार किया गया है ।

136 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में प्राचीन कविताओं को स्थान नहीं देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	156	90	16	262
प्रतिशत्	59•54	34•35	6•11	100

उक्त विश्लेषण सूची में 156 अध्यापकों ने 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में प्राचीन कविताओं को स्थान देने के पक्ष में अपना विचार प्रकट किया है । इनका प्रतिशत 59•54 है । अन्य 90 अध्यापकों ने इसके विरूद्ध में अपना विचार प्रकट किया हैं इनका प्रतिशत 34•35 है । इस संबंध में 16 हिन्दी अध्यापक संदिग्ध स्थिति में हैं जिनका प्रतिशत 6•11 है ।

137 8 वीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में भाषा कौशल संबंधी पाठ अधिक होने चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	223	32	7	262
प्रतिशत्	85•12	12•21	2•67	100

उक्त सूची में 223 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि पाठ्यपुस्तक में भाषा कौशल संबंधी पाठ अधिक होने चाहिए । इनका प्रतिशत 85•12 है । इस विचार के विरूद्ध में 32 अध्यापकों ने अपनी सम्मति प्रकट की है जिनका प्रतिशत 12•21 है । संदिग्ध उत्तरदाताओं की संख्या 7 हैं । अतः अत्यधिक संख्यक प्रथम सुझाव स्वीकृत हैं ।

138 8 वीं कक्षा की पुस्तक पाठ्यक्रम के अनुरूप न होने के कारण उसको बदलना आवश्यक है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	209	30	23	262
प्रतिशत्	79·77	11·45	8·78	100

विश्लेषण सूची 138 के अनुसार कुल संख्या में 209 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया हैं कि 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं है इसलिए इसको बदलना चाहिए । इनका प्रतिशत 79·77 है । परंतु 30 अध्यापकों ने इस सुझाव के प्रति अपनी असम्मति प्रकट की है । इनका प्रतिशत 11·45 है । संदिग्ध उत्तरदाताओं की संख्या 23 है और जिसका प्रतिशत 8·78 हैं । अतः अधिक संख्यक सुझाव के अनुसार प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का परिवर्तन आवश्यक है ।

139 8 वीं कक्षा की पुस्तक भाषा संबंधी ज्ञान के विकास में उपयोगी नहीं है । इसमें भाषा संबंधी अभ्यासों का अभाव है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	207	35	20	262
प्रतिशत्	79·01	13·36	7·63	100

विश्लेषण सूची-139 के अनुसार कुल 262 अध्यापकों में 207 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक भाषा संबंधी ज्ञान के विकास में सहायक नहीं है । इसमें भाषा संबंधी अभ्यासों का अभाव है । इनका प्रतिशत 79·01 है । इसके विरूद्ध में 35 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है उनका प्रतिशत 13·36 है । संदिग्ध उत्तरदाताओं की संख्या 20 हैं और इनका प्रतिशत 7·63 है ।

140 छात्र हिन्दी भाषा को सीखने में रुचि एवं ~~छात्र~~ ध्यान को दिखाने के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तक में तेलुगु संस्कृति एवं आचार विचारों का समावेश होना आवश्यक है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	238	18	6	262
प्रतिशत्	90·84	6·87	2·29	100

कुल 262 अध्यापकों में 238 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि हिन्दी भाषा को सीखने में रुचि एवं ध्यान को दिखाने के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तक में तेलुगु संस्कृति एवं आचार विचारों का समावेश होना आवश्यक है । इनका प्रतिशत 90·84 है । इस सुझाव के विरोध में केवल 18 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया उनका प्रतिशत 6·87 है । 6 अध्यापक संदिग्ध हैं उनका प्रतिशत 2·29 है ।

141 पाठ्यपुस्तक का निर्माण मनोविज्ञान के आधार पर होना चाहिए और इसमें सामाजिक आवश्यकताओं को भी स्थान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	259	3	-	262
प्रतिशत्	98·86	1·14	-	100

इस प्रश्न के विश्लेषण से यह पता चलता है कि 262 अध्यापकों में से 259 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का निर्माण मनोवैज्ञानिक ढंग पर होना चाहिए और इसमें सामाजिक आवश्यकताओं को भी स्थान मिलना चाहिए । इनका प्रतिशत 98·86 है और इसके विरोध में केवल 3 ही अपना मत प्रकट किये हैं जिनका प्रतिशत 1·14 है ।

142 हिन्दी भाषा शिक्षण को सुदृढ़ एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए एस0 सी0 इ0 आर0 टी0 (SCERT) में हिन्दी विशेषज्ञों का एक विभाग खोलना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	246	9	7	262
प्रतिशत्	93·89	3·44	2·67	100

उक्त सूची के अनुसार 262 अध्यापकों में से 246 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि भाषा शिक्षण को सुदृढ़ एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए एस0 सी0 इ0 आर0 टी0 में हिन्दी विशेषज्ञों का एक विभाग खोलना चाहिए । इनका प्रतिशत 93·89 है । इसके विपरीत विरोध में 9 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत 3·44 है और 7 अध्यापक संदिग्ध हैं जिनका प्रतिशत 2·67 है ।

143 8 वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी के वातावरण से परिचय कराना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	259	2	1	262
प्रतिशत्	98·86	0·76	0·38	100

इस प्रश्न के उत्तर में 259 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि आठवीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी के वातावरण से परिचय कराना चाहिए । उनका प्रतिशत् 98·86 है । इसमें 2 अध्यापकों ने स्वीकार/नहीं किया जिनका प्रतिशत 0·76 है । शेष अध्यापकों ने अपनी संदिग्धता प्रकट की उनका प्रतिशत 0·38 है ।

144 कक्षा में क्रमानुसार प्रत्यक्ष पद्धति का प्रयोग करना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	254	5	3	262
प्रतिशत् :	96·95	1·91	1·14	100

कुल संख्या में 254 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि कक्षा में क्रमानुसार प्रत्यक्ष पद्धति का प्रयोग करना चाहिए । इनका प्रतिशत् 96·95 है । 5 अध्यापकों ने इसको स्वीकार नहीं किया है । इनका प्रतिशत 1·91 है । तीनों ने अपना संदेह प्रकट किया है । जिनका प्रतिशत 1·14 है ।

145 प्रारंभिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले हिन्दी अध्यापक छात्रों को हिन्दी का आधारभूत ज्ञान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	255	5	2	262
प्रतिशत् :	97·33	1·91	0·76	100

इस सुझाव को कुल संख्या में 255 अध्यापकों ने मान लिया है । जिनका प्रतिशत 97·33 है । केवल 5 अध्यापकों ने अस्वीकार किया है उनका प्रतिशत 1·91 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 2 और प्रतिशत 0·76 है ।

बहुमत के अनुसार प्रारंभिक कक्षाओं को पढ़ानेवाले हिन्दी अध्यापक छात्रों को हिन्दी का आधारभूत ज्ञान देना चाहिए ।

146 8 वीं कक्षा की सभी समस्याओं को दृष्टि में रखकर एक नवीन शिक्षण पद्धति की खोज करना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	237	14	11	262
प्रतिशत् :	90·46	5·34	4·20	100

बहुसंख्यक अध्यापकों का यह सुझाव है कि 8 वीं कक्षा की सभी समस्याओं को दृष्टि में रखकर एक नवीन शिक्षण पद्धति की खोज करनी चाहिए । इस सुझाव के समर्थकों का प्रतिशत् 90·46 है । इसके विरोध में 14 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया जिनका प्रतिशत् 5·34 है । संदिग्ध 11 अध्यापकों का प्रतिशत 4·20 है ।

147 पाठ को रोचक बनाकर छात्रों को स्पष्ट ज्ञान देने के लिए सहायक सामग्री की अत्यन्त आवश्यकता है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	254	6	2	262
प्रतिशत्	96·95	2·29	0·76	100

147 प्रश्न की विश्लेषण सूची में 254 अध्यापकों का यह सुझाव है कि पाठ को रोचक बनाने एवं छात्रों को स्पष्ट ज्ञान देने के लिए सहायक सामग्री की आवश्यकता है । सरकार को चाहिए कि हर प्राथमिक तथा उच्च माध्यमिक पाठशालाओं को सहायक सामग्री देने का प्रबंध करें । इसके समर्थकों का प्रतिशत् 96·95 है । 6 अध्यापकों ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया है जिनका प्रतिशत 2·29 है । 2 अध्यापकों की स्थिति संदिग्ध है में है उनका प्रतिशत 0·76 है ।

148 8 वीं कक्षा को हिन्दी पढ़ाते समय अध्यापकको चाहिए कि वह हिन्दी माध्यम से ही पढ़ाए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	235	22	5	262
प्रतिशत्	89·64	8·40	1·91	100

235 अध्यापकों का यह सुझाव है कि 8 वीं कक्षा को हिन्दी की शिक्षा हिंदी माध्यम से देना चाहिए । इनका प्रतिशत 89·69 है । 22 अध्यापकों ने इसको स्वीकार नहीं किया है उनका प्रतिशत 8·40 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 5 हैं और उनका प्रतिशत 1·91 है ।

149 8 वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी ध्वनियों से परिचय देकर उन्हें सस्वर-वाचन का अभ्यास कराना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	257	4	1	262
प्रतिशत्	98·09	1·53	0·38	100

प्रश्न संख्या 149 में कुल 262 अध्यापकों में 257 अध्यापकों के मतानुसार छात्रों को हिन्दी ध्वनियों से अच्छा परिचय देकर उन्हें सस्वर वाचन का अभ्यास कराना चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 98·09 है । इसके विपरीत में 4 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 1·53 है । एक अध्यापक ने इस संदर्भ में अपनी संदिग्धता प्रकट की है जिनका प्रतिशत् 0·38 है ।

150 8 वीं कक्षा के छात्रों को लेखन-कौशल में प्रवीण बनाने के लिए हिन्दी वाक्य रचना एवं व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	252	8	2	262
प्रतिशत्	96·19	3·05	0·76	100

कुल संख्या में 252 अध्यापकों का यह मत है कि छात्रों को लेखन कौशल में कुशल बनाने के लिए हिन्दी वाक्य-रचना एवं व्यवहारिक व्याकरण का ज्ञान देना चाहिए । इन अध्यापकों उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 96·19 है । 8 अध्यापकों ने इसके विरूद्ध में अपना विचार प्रकट किया है उनका प्रतिशत् 3·05 है । संदिग्ध विचार रखनेवाले अध्यापकों की संख्या 2 और उनका प्रतिशत 0·76 है ।

151 मातृभाषा के प्रभाव के कारणों को जानकर छात्रों को सुचारु रूप से द्वितीय भाषा शिक्षण देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	256	1	5	262
प्रतिशत्	97·71	0·38	1·91	100

कुल संख्या में 256 अध्यापकों ने यह विचार प्रकट किया है कि मातृभाषा के प्रभाव के कारणों को जानकर छात्रों को सुचारु रूप से द्वितीय भाषा शिक्षण देना चाहिए । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 97·71 है । इसके विरोध में 1 अध्यापक ने अपना विचार प्रकट किया है । इनका प्रतिशत् 0·38 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 5 हैं और इनका प्रतिशत 1·91 है ।

152 तेलुगु भाषा-भाषियों को हिन्दी संयुक्ताक्षर सिखाने में हिन्दी अध्यापक जागरूक रहे ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या	240	21	1	262
प्रतिशत	91·60	8·02	0·38	100

कुल संख्या में 240 अध्यापकों का यह मत है कि हिन्दी अध्यापक तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी का संयुक्ताक्षर सिखाने में जागरूक रहना चाहिए । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 91·60 है और इस मत का विरोध 21 अध्यापकों ने किया जिनका प्रतिशत् 8·02 है । एक अध्यापक ने अपनी संदिग्धता प्रकट की है उनका प्रतिशत् 0·38 है ।

153 तेलुगु छात्रों को हिन्दी की लिंग व्यवस्था का सही ज्ञान देना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	243	13	6	262
प्रतिशत्	92·75	4·96	2·29	100

243 उत्तरदाताओं ने यह मत दिया है कि हिन्दी की लिंग व्यवस्था का ठीक ज्ञान तेलुगु छात्रों को देना चाहिए । इसका सही ज्ञान न होने के कारण लिंग का प्रयोग तेलुगु छात्रों के लिए एक समस्या बन गई है । इनका प्रतिशत 92·75 है । इसके बाद 13 उत्तरदाताओं ने इस सुझाव का विरोध किया है जिनका प्रतिशत 4·96 है । 6 अध्यापकों ने इस संबंध में अपने संदिग्ध विचार प्रकट किये हैं उनका प्रतिशत 2·29 है ।

154 हिन्दी के 'ने' प्रत्यय को निकाल देना चाहिए । इसका प्रयोग तेलुगु भाषा-भाषियों को समस्याजनक है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	146	103	13	262
प्रतिशत्	55·73	39·31	4·96	100

226 अध्यापकों में से 146 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि हिन्दी से 'ने' प्रत्यय को निकाल देना चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 55·73 है । 103 अध्यापकों ने इसके प्रति अपना विरोध प्रकट किया है जिनका प्रतिशत् 39·31 है । संदिग्ध उत्तरदाताओं की संख्या 13 और उनका प्रतिशत् 4·96 है ।

155 छात्रों को हिन्दी वाक्य-रचना एवं मिश्र वाक्यों का प्रयोग ठीक ढंग से सिखाना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	247	11	4	262
प्रतिशत् :	94·27	4·20	1·53	100

कुल संख्या में 247 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि हिन्दी वाक्य रचना और मिश्र वाक्यों का प्रयोग ठीक ढंग से सिखाना चाहिए । इनमें तेलुगु की वाक्य रचना की सहायता लेनी चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 94·27 है । 11 अध्यापकों ने इसका विरोध किया है जिनका प्रतिशत् 4·20 है । 4 अध्यापकों ने अपनी संदिग्धता प्रकट की है । जिनका प्रतिशत् 1·53 है ।

156 तेलुगु तथा हिन्दी भाषा की प्रकृति से परिचय कराने के लिए छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी समानताओं एवं असमानताओं से परिचय कराना चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	241	13	8	262
प्रतिशत् :	91·99	4·96	3·05	100

कुल संख्या 262 में विश्लेषण-सूची के अनुसार 241 अध्यापकों ने यह मत दिया है कि अध्यापक छात्रों को हिन्दी की भाषा-प्रकृति से परिचय कराने में तेलुगु और हिन्दी भाषा की समानताओं एवं असमानताओं से परिचय कराना चाहिए । इस सुझाव का विरोध 13 अध्यापकों ने किया जिनका प्रतिशत् 4·96 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 8 है और उनका प्रतिशत् 3·05 है ।

157 वर्तमान भाषागत परीक्षाओं में कौशल आदि से संबंधित प्रश्न पूछने चाहिए ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	247	9	6	262
प्रतिशत् :	94·27	3·44	2·29	100

प्रश्न संख्या 157 में कुल संख्या 262 में 247 अध्यापकों ने यह सुझाव दिया है कि वर्तमान भाषागत परीक्षाओं में अध्यापक भाषा कौशल से संबंधित प्रश्न पूछने चाहिए । इन अध्यापकों का प्रतिशत् 94·27 है । दूसरा स्थान उन अध्यापकों का है जिन्होंने इस विचार के प्रति अपनी असम्मति प्रकट की है । इनका प्रतिशत् 3·44 है । संदिग्ध अध्यापकों की संख्या 6 और उनका प्रतिशत् 2·19 है ।

158 भाषा अध्यापकों को भाषा-संबंधी विशेष सुझाव देने के लिए हिन्दी निरीक्षणाधिकारियों की आवश्यकता है ।

	हाँ	नहीं	संदिग्ध	योग
संख्या :	256	4	2	262
प्रतिशत् :	97.71	1.53	0.76	100

कुल संख्या में विश्लेषण-सूची के अनुसार 256 अध्यापकों ने यह मत प्रकट किया है कि सरकार की ओर से भाषा अध्यापकों को विशेष सुझाव देने के लिए भाषा निरीक्षणाधिकारियों की आवश्यकता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत् 97.71 है । इस प्रश्न के विरोध में 4 अध्यापकों ने अपना मत प्रकट किया है उनका प्रतिशत् 1.53 है । संदिग्ध उत्तरदाताओं की संख्या 2 और उनका प्रतिशत् 0.76 है ।

**

उपलब्धि-परीक्षण का विश्लेषण

व्यक्ति अपने अध्ययन के सिल सिले में कुछ विशेष विषयों का अध्ययन स्कूल एवं कालेज में करता है । एक निश्चित समय तक वह इन विषयों को पढ़ता है और उसमें कुछ हदतक योग्यता प्राप्त करता है । इसे उपलब्धि कहते हैं । बाद में वह आगे चलकर कोई खास ज्ञान एवं कुशलता प्राप्त करता है । अतः उपलब्धि परीक्षण में इसी खास ज्ञान एवं कुशलता को मापन होता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य में उपलब्धि परीक्षण एक साधन है इसके द्वारा शोध-कर्ता ने 960 नगरीय एवं ग्रामीय पाठशालाओं में पढ़नेवाले आठवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की भाषा उपलब्धि परीक्षण लिया है । यह परीक्षण छात्रों की द्वितीय भाषा हिन्दी पुस्तक पर आधारित है । इसमें छात्रों की भाषा संबंधी कौशलों का परीक्षण किया गया है ।

इस परीक्षण के द्वारा शोधकर्ता ने यह जानना चाहा कि 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी सीखने में क्यों कमज़ोर हैं ? प्रस्तुत उपलब्धि परीक्षण से छात्रों के भाषा अधिगम संबंधी कई कमज़ोरियाँ प्रकाश में आई हैं । इससे शोधकर्ता को छात्रों की समस्याओं एवं कठिनाइयों को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए निर्मित यह परीक्षण निर्माण एवं मूल्यांकन की दृष्टि से भी प्रमाण इसलिए है कि प्रश्न पत्र का निर्माण, मूल्यांकन शोधकर्ता ने स्वयं नियमों (   ) को ध्यान में रखकर किया है और अनुचित लाभ से वंचित करने हेतु स्वयं निरीक्षक का काम भी किया है । इसको चित्र संख्या (1) में देखा जा सकता है । इस दृष्टि से शोधकर्ता ने इसको प्रमाण माना है ।

उपलब्धि परीक्षण का वैज्ञानिक शोधपूर्ण विश्लेषण आगामी पृष्ठों में किया गया है ।

चित्र संख्या - 1

उपलब्धि परीक्षण का व्यक्तिगत निरीक्षण

चित्र संख्या - 2

हिन्दी अध्यापक के छात्र की लेखन त्रुटि बताना

		नगरीय				ग्रामीण			
		छात्र (240)		छात्राएँ (240)		छात्र (240)		छात्राएँ (240)	
प्रश्न संख्या	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×8 / 2880	1082	37·57	1052	36·53	984	34·17	924	32·08
2	300×8 / 2400	324	13·50	236	9·83	220	9·17	169	7·04
3	300×8 / 2400	25	1·04	9	0·38	8	0·33	7	0·29
4 (अ)	150×8 / 1200	533	44·42	520	43·33	433	36·08	487	40·58
(आ)	300×8 / 2400	250	10·42	235	9·79	212	8·83	198	8·25
(इ)	240×8 / 1920	411	21·41	383	19·95	373	19·43	299	15·57
(ई)	240×8 / 1920	448	23·33	491	25·57	394	20·52	404	21·04
(उ)	300×8 / 2400	23	0·96	23	0·96	22	0·92	18	0·75
5	240×8 / 1920	258	13·44	211	10·99	208	10·83	168	8·75
6	120×8 / 960	858 601	62·60	559	58·23	506	52·71	542	56·46
7	450×8	202	5·61	189	5·25	164	4·56	143	3·97

कुल छात्रों की संख्या = 960

कुल छात्रों के प्राप्त अंक = 15084

कुल छात्रों का औसत प्रतिशत् : 15·71

...

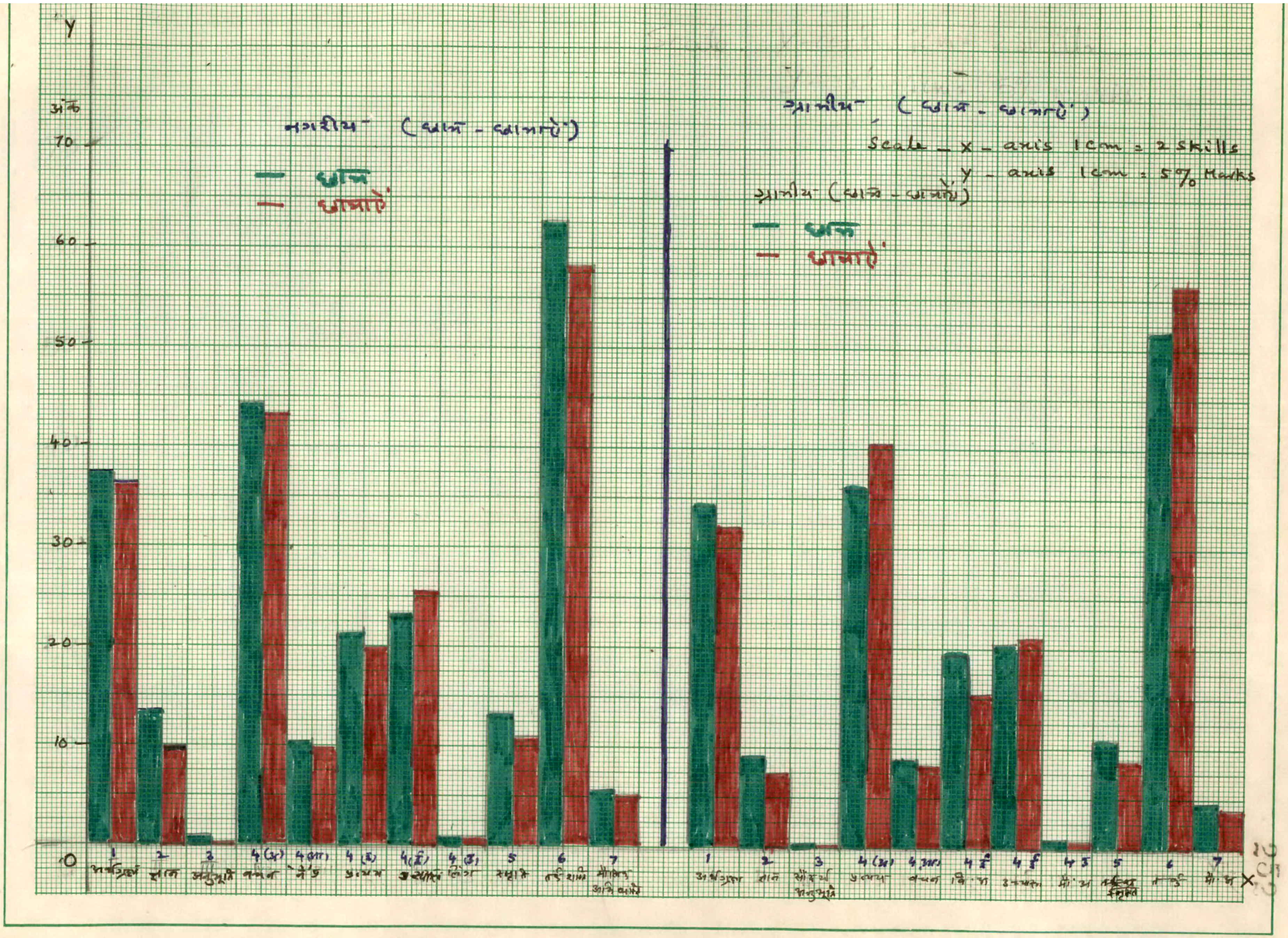

नगरीय (छात्र - छात्राएं)
ग्रामीण (छात्र - छात्राएं)
Scale – x – axis 1cm = 2 skills
y – axis 1cm = 5% Marks
छात्र
छात्राएं
अंक
Y
X
0
10
20
30
40
50
60
70

आन्ध्र प्रान्त के संपूर्ण छात्रों का उपलब्धि-विवरण

यह विवरण 8 वीं कक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले 960 छात्रों का है । इसमें छात्रों से प्राप्त कुल अंकों को प्रतिशत् में परिवर्तन करके उन छात्रों की उपलब्धि की आलोचना की गई है । प्रस्तुत उपलब्धि-परीक्षण में छात्रों ने कुल योग 15084 अंक प्राप्त किये हैं और जिनका ध्र औसत प्रतिशत 15·71 है । इससे स्पष्ट होता है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी अंक 20% से भी कम है । प्रस्तुत उपलब्धि विवरण में यह देखा जाता है कि 8 वीं कक्षा के ये छात्र भाषा के किन किन क्षेत्रों में कमजोर है ।

संपूर्ण उपलब्धि-सूची में 960 छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि की तुलना के साथ साथ यह भी बताया गया है कि अधिकतम छात्र भाषा के किन किन क्षेत्रों में कमज़ोर हैं ।

प्रस्तुत प्रतिचयन (Sampling) में कुल 960 छात्रों का परीक्षण किया गया है । जिसमें 480 छात्र तथा छात्राओं को नगरीय पाठशालाओं से और 480 छात्र तथा छात्राओं को ग्रामीय पाठशालाओं से लिया गया है । ये सभी छात्र तथा छात्राएँ आन्ध्र प्रान्त के 8 जिलों में पढ़नेवाले हैं और जिनकी मातृभाषा तेलुगु तथा द्वितीय भाषा हिन्दी है ।

(1) इस प्रश्न के कुल अंक 2880 में से नगरीय छात्रों को 1082 अंक प्राप्त हुए और उनका प्रतिशत 37·57 है । छात्राओं को 1052 अंक प्राप्त हुए और उनका प्रतिशत 36·53 है । इसी प्रकार इस प्रश्न में ग्रामीण छात्रों को 984 अंक मिले और उनका प्रतिशत 34·17 हैं और छात्राओं का प्रतिशत 32·08 और अंक 924 है । इस प्रश्न में नगरीय छात्र छात्राओं से केवल 1·04 प्रतिशत अंक अधिक प्राप्त किये गये हैं और ग्रामीण छात्राओं के अंक छात्रों से 2·09 प्रतिशत कम है ।

इससे यह पता चलता है कि अर्थग्रहण की शक्ति छात्राओं में छात्रों से अधिक है । औसत प्रतिशत की तुलना से यह पता चलता है कि इस प्रश्न में छात्रों का स्तर ठीक ही है । आन्ध्र सरकार से निर्धारित 20% अंकों की तुलना से भी यह प्रतिशत अधिक होने के कारण निस्संदेह यह कहा जाता है कि अर्थग्रहण में कुल छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत स्तरानुकूल है ।

प्रश्न 2 : यह प्रश्न छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान की जाँच करने के लिए दिया गया है । इसके अंतर्गत तीन प्रश्न दिये गये हैं । छात्रों को उनमें से दो प्रश्न करने हैं । इन प्रश्नों के लिए कुल अंक 2400 निर्धारित हैं जिसमें नगरीय छात्रों ने 324 अंक प्राप्त किया है जिसका प्रतिशत 13·50 और छात्राओं ने 236 अंक प्राप्त किये जिसका प्रतिशत 9·83 है । इन दोनों नगर छात्र तथा छात्राओं के प्रतिशत का अन्तर केवल 3·67 प्रतिशत है । इस प्रश्न में ग्रामीण छात्रों ने 220 अंक और छात्राओं ने 169 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 9·17 और 7·04 है । इन दोनों में केवल 2·13 प्रतिशत का अन्तर है ।

तुलना की दृष्टि से भी ग्रामीण तथा नगरीय छात्रों के बीच अधिक अन्तर नहीं है । इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि छात्रों को पाठ्यपुस्तक से संबंधित ज्ञान कम है और वे पाठ्यपुस्तक को रुचि के साथ नहीं पढ़ते हैं । यह संभावित किया जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक का विषय वस्तु छात्रों के स्तर से बढ़कर है और इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं ।

संपूर्ण तालिका में इस प्रश्न के अंतर्गत प्राप्त अंक प्रतिशत औसत प्रतिशत 15·71 से भी कम है और आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित उत्तीर्ण अंक प्रतिशत 20% से भी कम होने के कारण हम निस्संदेह यह कह सकते हैं कि 8 वीं कक्षा के छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान स्तर से कम है और वे इस रूप में कमज़ोर हैं ।

प्रश्न 3 : छात्रों की समालोचना, अभिव्यक्ति तथा कवितागत सौन्दर्यानुभूति की जाँच करने के उद्देश्य से दिया गया है । इस प्रश्न के लिए कुल योग अंक 2400 है जिसमें से नगरीय छात्रों ने 25 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत् 1·04 है । नगरीय छात्राओं को 9 अंक मिले जिसका प्रतिशत 0·38 है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नगरीय छात्र छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न में बहुत ही कम है । इस प्रश्न में ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं के अंक 8 तथा 7 है और उनका प्रतिशत 0·33 एवं 0·29 होना उनकी निम्न उपलब्धि का परिचायक है ।

इस प्रश्न में छात्रों ने जिस प्रतिशत अंकों को प्राप्त किया है वह औसत अंक प्रतिशत 15·71 से बहुत ही कम है और आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% अंकों से भी कम होने के कारण यह विचार प्रकट किया जाता है कि छात्रों की उपलब्धि पुस्तकीय कविता पाठों में बहुत ही कम है । इसका कारण यह हो सकता है कि कविता में प्रयुक्त शब्द छात्रों के लिए नवीन एवं कठिन हैं । कविता में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा को समझने में छात्र असफल हैं । यह भी कह सकते हैं कि इस पुस्तक के कविता पाठ छात्रों के स्तर से बहुत ऊँचे हैं ।

प्रश्न 4 : (अ) के अंतर्गत पाँच मद (Items) हैं । इनके द्वारा 8 वीं कक्षा के छात्रों का भाषा ज्ञान, प्रयोग तथा प्रत्यय ज्ञान की जाँच की गई है । इस मद के लिए कुल योग अंक 1200 हैं । जिसमें नगरीय छात्रों को 533 अंक जिसका प्रतिशत 44·42 और छात्राओं को 520 अंक मिले जिसका प्रतिशत 43·33 है । इस मद में छात्रों का प्रतिशत छात्राओं के प्रतिशत से 1·09 प्रतिशत अधिक है । इसी प्रकार ग्रामीय छात्रों ने 433 अंक प्राप्त किये और उनका प्रतिशत 36·08 है । छात्राओं के अंक 487 और उनका प्रतिशत 40·58 है । ग्रामीय छात्राओं ने छात्रों से भी 4·50 प्रतिशत अंक अधिक प्राप्त किये हैं । यह उनके उच्च स्तर का परिचायक है ।

इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नगरीय छात्राओं ने शब्द प्रयोग तथा प्रत्यय प्रयोग ठीक ही किया है'।

इस प्रश्न की समालोचना करने से यह पता चलता है कि प्रत्यय, तथा शुद्ध वाक्यों को पहचानने में छात्रों का ज्ञान संतोषजनक है। परन्तु इन पाँच मदों की तुलना करने से यह ज्ञात होता है कि अधिकतम छात्रों ने 2 और 5 मद को स्पर्श नहीं किया है। इन प्रश्नों का उद्देश्य छात्रों के 'ने' प्रयोग तथा लिंग का प्रयोग की जाँच करने से संबंधित हैं। इस प्रश्न में छात्रों की भाषागत उपलब्धि वाँछित स्तर प्राप्त करने पर भी 'ने' प्रत्यय का प्रयोग तथा लिंग व्यवस्था का ज्ञान छात्रों को बहुत ही कम मालूम पड़ता है। संपूर्ण प्रश्न के (अ) भाग को दृष्टि में रखकर देखा जाये तो पता चलता है कि छात्रों की उपलब्धि इस भाग तक तृप्तिदायक है।

प्रश्न 4 (आ) इस प्रश्न को छात्रों के वचन संबंधी ज्ञान की जाँच करने की दृष्टि से दिया गया है। इसके लिए कुल योग अंक 2400 निर्धारित हैं। जिसमें नगरीय छात्रों को 250 और छात्राओं को 235 अंक मिले जिनका प्रतिशत 10·42 और 9·79 है। इसी प्रकार ग्रामीय छात्रों को 212 और छात्राओं को 198 अंक प्राप्त हुए जिनका प्रतिशत 8·83 तथा 8·25 है। प्रतिशत की तुलना से पता चलता है कि नगरीय छात्रों की उपलब्धि छात्राओं की उपलब्धि से केवल 0·63 प्रतिशत अधिक है और ग्रामीण छात्र ग्रामीण छात्राओं से 0·58 प्रतिशत अधिक है। तुलना की दृष्टि से यह प्रतिशत अप्रमुख है।

यहाँ पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि छात्रों को वचन प्रयोग का ज्ञान कम है और कुल छात्रों के औसत प्रतिशत 15·71 से प्रस्तुत प्रश्न के छात्रों का प्रतिशत की तुलना करना उतना उचित न होगा।

प्रश्न 4 (इ) : इस प्रश्न में छात्रों का विपरीत अर्थ के ज्ञान के साथ साथ उनके शब्द भण्डार की जाँच करने का उद्देश्य भी निहित है । इस प्रश्न के लिए कुल योग अंक 1920 निर्धारित हैं जिसमें नगरीय छात्रों को 411 और छात्राओं को 383 अंक मिले जिनका प्रतिशत 21·41 इ तथा 19. 95 है । इसी प्रकार ग्रामीण छात्रों को 373 और छात्राओं को 299 अंक मिलें जिनका प्रतिशत 19·43 तथा 15·57 है । प्रतिशत की तुलना में अधिक अन्तर दिखाई नहीं देता है परंतु इस प्रश्न में सभी छात्रों के अंक प्रतिशत औसत अंक प्रतिशत 15·71 से अधिक होने के कारण यह कह सकते हैं कि छात्र तथा छात्राओं को विपरीत शब्दों का ज्ञान है । इसका कारण यह भी हो सकता है कि अधिकतम संस्कृत के तत्सम हिन्दी शब्द तेलुगु में समानार्थ रखने के कारण छात्र अपनी मातृभाषा के ज्ञान से इन शब्दों को शुद्ध लिखे हैं । इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी हो सकते हैं ।

अतः इस प्रश्न के अंकों के प्रतिशत के आधार से यह कहा जा सकता है कि 8 वीं कक्षा के छात्र तथा छात्राओं को विपरीत अर्थों का ज्ञान स्तरानुकूल है ।

प्रश्न 4 (ई) : इस प्रश्न के अंतर्गत 8 वीं कक्षा के छात्रों के उच्चारण संबंधी ज्ञान की जाँच की गई है । इस प्रश्न के लिए कुल योग अंक 1920 हैं जिनमें नगरीय छात्रों ने 448 अंक और छात्राओं ने 491 अंक प्राप्त किये गये हैं उनका प्रतिशत 23·33 तथा 25·57 हैं । नगरीय छात्रों का उच्चारण संबंधी ज्ञान छात्र छात्राओं से 2·24 प्रतिशत कम है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि छात्राओं की पाठशालाओं में हिन्दी अध्यापक उच्चारण संबंधी शिक्षण के प्रति छात्रों की तुलना में अधिक अभ्यास कराते हैं । इसके अतिरिक्त शारीरिक विभिन्नता और स्वरयंत्र की कोमल तंत्रियों का स्पंदन भी एक कारण हो सकता है ।

इसी प्रकार ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं को 394 तथा 404 अंक मिले जिनका प्रतिशत 20·52 तथा 21·04 प्रतिशत हैं । उच्चारण में ग्रामीय प्रान्तों के छात्राओं का प्रतिशत छात्रों से अधिक होना दर्शनीय है ।

कुल छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत औसत प्रतिशत 15·71 से अधिक होने के कारण यहाँ पर इतना ही कहा जा सकता है कि उच्चारण कौशल में छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत तुलना की दृष्टि से स्तरानुकूल है ।

प्रश्न 4 (उ) : इस प्रश्न के अंतर्गत छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति कुशलता की जाँच की गई है । इस प्रश्न के अन्तर्गत चार मद हैं जिनके लिए कुल योग अंक 2400 है । संपूर्ण विश्लेषण सूची में इस प्रश्न के अंकों को गहन अध्ययन करने से यह पता चलता है कि छात्र तथा छात्राओं की मौलिक अभिव्यक्ति कुशलता निम्न स्तर की है । इसमें नगरीय छात्र-छात्राओं ने 23 अंक प्राप्त किये हैं जिसका प्रतिशत 0·96 है जिसमें दोनों का स्तर समान है । इसी प्रकार ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं को अंक 22 तथा 18 हैं और प्रतिशत 0·92 तथा 0·75 है । तुलना की दृष्टि से अधिक अंतर नहीं है इसलिए यहाँ इन अंक एवं प्रतिशत की तुलना करना उचित न होगा ।

8 वीं कक्षा के छात्र तथा छात्राओं की इस भाषागत उपलब्धि को दृष्टि में रखकर यह कहा जा सकता है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र लेखन कौशल में बहुत ही कमज़ोर हैं । वे लिखित रूप से अपने विचारों को प्रकट नहीं कर पाते हैं । अध्यापक छात्रों के लेखन कार्य की ओर ध्यान नहीं देना तथा प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण की ओर कम ध्यान देना भी एक कारण हो सकता है । इस प्रश्न में छात्रों का प्रतिशत इतना कम है कि जिसकी तुलना औसत प्रतिशत 15·71 से भी नहीं की जा सकती है ।

प्रश्न 5 : इस प्रश्न के अंतर्गत छात्रों की स्मरण शक्ति की जाँच पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर की गई है । इस प्रश्न के लिए कुल योग अंक 1920 हैं । जिनमें नगरीय छात्र 258 अंक छात्राओं ने 211 अंक प्राप्त किया जिनका प्रतिशत 13·44 तथा 10·99 है । छात्रों का प्रतिशत छात्राओं के प्रतिशत से 2·45 अधिक है । इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ

स्मरण शक्ति भी कम है । इसकी पूर्ति के लिए छात्रों से प्राप्त प्रश्न संख्या 2 के अंक प्रतिशत साक्षी है । इसी प्रकार ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं ने इस प्रश्न के अंतर्गत कुल अंकों में 208 तथा 168 प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 10•83 तथा 8•75 है । तुलना में इस प्रतिशत का अधिक महत्व नहीं है ।

कुल छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि औसत उपलब्धि 15•71 से बहुत कम है । आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी के अंक प्रतिशत से भी कम होने के नाते यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि छात्र पुस्तक को ध्यान से नहीं पढ़ते हैं । यहाँ पर यह बताना उचित ही होगा कि स्मरण शक्ति का संबंध छात्रों की रूचि से भी है । मनुष्य जिस विषय में रूचि रखता है उस विषय के प्रति अधिक ध्यान देता है । छात्रों के कम ध्यान देने के कई कारण हो सकते हैं । उन कारणों में से हिन्दी की सँविधान स्थिति, आन्ध्र प्रदेश सरकार की भाषा नीति, हिन्दी सीखने का प्रयोजन एस0 एस0 सी0 में हिन्दी अंकों को कुल अंकों में नहीं मिलाना आदि हो सकते हैं ।

प्रश्न 6 : इस प्रश्न के द्वारा छात्रों की तर्क एवं विचार शक्ति की जाँच की गई है । इस प्रश्न के लिए कुल योग 960 अंक निर्धारित हैं । इन अंकों में से नगरीय छात्र 601 और छात्राओं ने 559 प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 62•60 तथा 58•23 हैं । उसी प्रकार ग्रामीय छात्र 506 अंक और छात्राओं ने 542 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 52•71 तथा 56•46 है ।

प्रश्न 7 :- इसमें छात्रों का मौखिक-अभिव्यक्ति-कौशल का परीक्षण किया गया है। नगरीय छात्र तथा छात्राओं ने 5.61 तथा 5.25 अंक 4.56 तथा 3.97 ग्रामीण छात्रों/छात्राओं ने प्राप्त किये।

यह प्रतिशत औसत प्रतिशत 15•71 से अधिक हैं और आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% से भी अधिक होने के कारण यहाँ पर निस्संदेह यह बात कह सकते हैं कि 8 वीं कक्षा के छात्रों की तर्क एवं विचार शक्ति ठीक है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों में अगर रूचि हो तो अवश्य वे विषय को ग्रहण कर सकते हैं छात्रों में चिंतनशील प्रवृत्ति है जिसके लिए इस विश्लेषण सूची के अर्थग्रहण शक्ति में छात्रों के औसत अंक प्रतिशत उदाहरण है ।

निष्कर्ष :

8 वीं कक्षा के छात्रों से संबंधित इस भाषा उपलब्धि परीक्षण के आधार से शोधकर्ता ने निम्न उपलब्धियों को प्राप्त किया है ।

(1) आन्ध्र प्रान्त के 8 वीं कक्षा के छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति साधारण है ।

(2) छात्र पुस्तकीय ज्ञान में कमज़ोर है ।

(3) 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी कविता को समझ कर अपने शब्दों में भाव प्रकट नहीं कर सकते हैं । उनके पास शब्द भण्डार का अभाव है । छात्रों में समालोचना शक्ति का स्तर कम है ।

(4) छात्र 'का, के,' की' का प्रयोग कुछ हद तक जानते हैं परन्तु 'ने' प्रत्यय तथा लिंग संबंधी ज्ञान नहीं रखते हैं ।

(5) इस परीक्षण से पता चलता है कि छात्रों को वचन प्रयोग का ज्ञान है ।

(6) विपरीत अर्थवाले शब्दों के प्रयोग में छात्रों का ज्ञान साधारण है ।

(7) छात्र उच्चारण का साधारण ज्ञान रखते हैं ।

(8) छात्रों में मौलिक रचना का ज्ञान नहीं है और वे साधारण व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान नहीं रखते हैं । उनमें वाक्य संरचना का ज्ञान बहुत कम है ।

(9) 8 वीं कक्षा के छात्रों में स्मरण शक्ति का अभाव है । छात्रों में विषय के प्रति रुचि का न होना भी एक कारण हो सकता है ।

(10) छात्रों को वाक्य संरचना का ज्ञान नहीं है ।

(11) छात्र हिन्दी तथा तेलुगु संरचना का तुलनात्मक ज्ञान नहीं रखते हैं ।

.....

इस प्रश्न के अंक प्रतिशत उपलब्धि परीक्षण के सभी प्रश्नों के अंक प्रतिशत से अधिक होना द्रष्टव्य है । 8 वीं कक्षा के छात्रों की हिन्दी विषयसंबंधि संबंधी उपलब्धि औसत उपलब्धि से अत्यधिक होने के कारण इस प्रश्न में छात्रों का स्तर साधारण से अधिक है ।

प्रश्न 7 : यह प्रश्न छात्रों की अभिव्यक्ति, मौलिक वाक्य रचना, मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा हिन्दी का भाषा-ज्ञान आदि की जाँच करने हेतु दिया गया है । इस प्रश्न के लिए कुल योग अंक 3600 है । जिसमें नगरीय छात्र तथा छात्राओं को 202 तथा 189 अंक प्राप्त हुए जिनका प्रतिशत 5·61 तथा 5·25 है । छात्रों की उपलब्धि, छात्राओं की उपलब्धि से केवल 0·36 प्रतिशतअधिक है जो विचारणीय नहीं है । उसी प्रकार ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि प्रतिशत 4·56 तथा 3·97 है इनके अंक 164 तथा 143 हैं । इस प्रश्न के विश्लेषण सूची से यह पूर्णतः विदित होता है कि छात्र इस प्रश्न में बहुत ही कमज़ोर है । औसत प्रतिशत 15·71 से ही छात्रों ने इस प्रश्न में कम अंक प्राप्त किये हैं ।

इस प्रश्न के विश्लेषण अंकों के प्रतिशत से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति निम्न स्तर की है । छात्र हिन्दी तथा तेलुगु की वाक्य रचना का ज्ञान नहीं रखते हैं और अपने विचारों को हिन्दी भाषा में लिखित रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं ।

इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे छात्रों को व्यवहारिक व्याकरण का ज्ञान नहीं देना, तेलुगु तथा हिन्दी की वाक्य-रचना का ज्ञान नहीं होना, मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा की भाषा प्रवृत्तियों का ज्ञान न रहना और अध्यापक छात्रों को अनुवाद का शिक्षण नहीं देना भी एक कारण हो सकता है ।

अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों में लेखन कौशल की उपलब्धि निम्न स्तर की है ।

उपलब्धि विश्लेषण सूची - 1

नगर एवं ग्रामीण
(छात्र + छात्राएँ)

		नगरीय (छात्र + छात्राएँ)		ग्रामीय (छात्र + छात्राएँ)	
प्रश्न संख्या	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×16 5760	2134	37·05	1908	33·13
2	300×16 4800	560	11·67	389	8·10
3	300×16 4800	34	0·71	15	0·31
4 (अ)	150×16 2400	1053	43·88	920	38·33
(आ)	300×16 4800	485	10·10	410	8·54
(इ)	240×16 3840	794	20·68	672	17·50
(ई)	240×16 3840	939	24·45	798	20·78
(उ)	300×16 4800	46	0·96	40	0·83
5	240×16 3840	469	12·21	376	9·79
6	120×16 1920	1160	60·42	1048	54·58
7	450×16 7200	391	5·43	307	4·26
कुल संख्या एवं प्रतिशत :	48,000	8065	16·80	6883	14·34

नगरीय (छात्र+छात्राएँ)	ग्रामीय (छात्र+छात्राएँ)
संख्या : 480	संख्या : 480
प्राप्त अंक: 8065	प्राप्त अंक : 6883
प्रतिशत : 16·80	प्रतिशत : 14·34

..

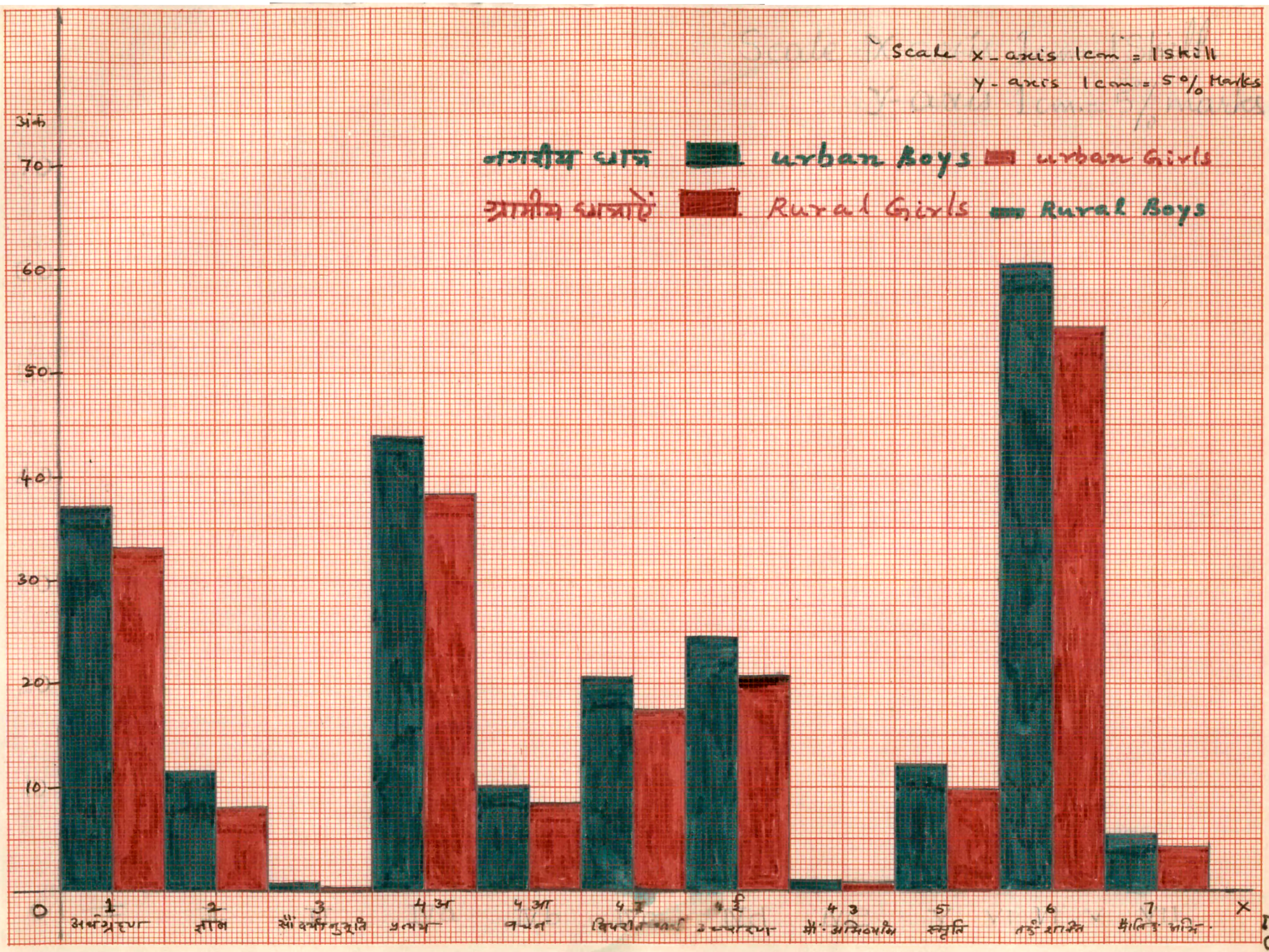
Scale X-axis 1cm = 1 skill
Y-axis 1cm = 5% Marks
नगरीय छात्र
urban Boys
urban Girls
ग्रामीण छात्राऐं
Rural Girls
Rural Boys
अंक
70
60
50
40
30
20
10
0
1 अर्थग्रहण
2 ज्ञान
3 सौंदर्यानुभूति
4 अ प्रत्यय
4 आ वचन
4 इ
4 ई
4 उ
5 स्मृति
6 तर्क शक्ति
7
X

विश्लेषण सूची संख्या - 1

प्रस्तुत विश्लेषण सूची से 8 वीं कक्षा के छात्रों की भाषा संबंधी उपलब्धि उनसे प्राप्त अंकों के आधार से स्पष्ट गोचर होती है । इस परीक्षण में कुल 960 छात्र सम्मिलित हुए जिनका औसत अंक 15084 है और प्रतिशत 15.71 हैं । आन्ध्र प्रदेश सरकार ने द्वितीय भाषा हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए 20 प्रतिशत अंकों का निर्धारण किया है । छात्रों का औसत प्रतिशत 15.71 से यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र के छात्रों का हिन्दी स्तर संतोषजनक नहीं है ।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोधकार्य में छात्रों की उपलब्धि की जाँच करने के लिए 100 अंकों का प्रश्न पत्र दिया है । छात्रों से प्राप्त अंकों को प्रतिशत में परिवर्तन किया गया है और उनकी उपलब्धि की तुलना प्रतिशत से की गई है ।

विश्लेषण सूची-1 में संपूर्ण नगरीय एवं ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि का विश्लेषण किया गया है । जिसके अनुसार प्रश्न-1 में छात्रों की अर्थ ग्रहण शक्ति की जाँच की गई है । छात्रों की उपलब्धि अंकों के प्रतिशत से तुलना करने से यह ज्ञात होता है कि नगरीय छात्र तथा छात्राओं ने इस प्रश्न के कुल अंकों में से 2134 अंक प्राप्त किये हैं, जिनका प्रतिशत 37.05 है और ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं ने 1908 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 33.13 है । कुल औसत प्रतिशत की दृष्टि से नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि अर्थग्रहण परीक्षण में संतोषजनक है । परंतु नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की तुलना में ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि नगरीय छात्रों से 3.92 कम है । ग्रामीय छात्रों पर नगरीय वातावरण का प्रभाव आदि का कम होने के कारण यह भेद स्पष्ट गोचर होता है ।

द्वितीय प्रश्न-2 में छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान की जाँच आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित पाठ्य-पुस्तक के आधार पर की गई है । इस प्रश्न में कुल नगरीय छात्रों तथा छात्राओं ने 560 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 11·67 है और ग्रामीय छात्र एवं छात्राओं ने 389 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 8·10 है । इस प्रश्न में कुल नगरीय छात्रों का औसत प्रतिशत, कुल छात्रों की औसत प्रतिशत से कम है । ग्रामीय छात्रों का औसत प्रतिशत 8·10 मात्र है । नगरीय एवं ग्रामीय छात्रों के प्रतिशत की तुलना में नगरीय छात्रों की उपलब्धि ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि से 3·57 प्रतिशत कम है । इससे यह पता चलता है कि हिन्दी में 8 वीं कक्षा के छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान का स्तर संतोषजनक नहीं है ।

प्रश्न-3 छात्रों की समालोचना, अभिव्यक्ति एवं सौन्दर्यानुभूति की जाँच करने के हेतु दिया गया है । इस प्रश्न में कुल नगरीय छात्रों ने केवल 34 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·71 है और ग्रामीय छात्रों के कुल अंक 15 और औसत प्रतिशत 0·31 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि नगरीय छात्रों की उपलब्धि इस प्रश्न में ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि से केवल 0·40 प्रतिशत अधिक है । परंतु नगरीय तथा ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत औसत प्रतिशत से बहुत ही कम है । इस प्रश्न से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों में भाषा संबंधी समालोचना शक्ति, सौन्दर्यानुभूति की शक्ति और मौलिक अभिव्यक्ति की शक्ति कम है । इससे यह पता चलता है कि पाठ्यपुस्तकों में कविताओं का संकलन छात्रों की मानसिक आयु से अधिक है । छात्र कविता को स्वयं नहीं समझ सके और अपनी भाषा में भाव को प्रकट करने में वे विफल हो गये हैं । इसके साथ ही साथ यह भी स्पष्ट होता है कि कविता की भाषा क्लिष्ट है और छात्र अलंकारिक प्रयोगों को समझने में विफल हुए हैं । इसीलिए इस प्रश्न में छात्रों की उपलब्धि बहुत ही कम है ।

प्रश्न - 4 के भाग (अ) के अंतर्गत 5 प्रश्न दिये गये हैं । इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों के लिंग, वचन, प्रत्यय की उपलब्धि की जाँच की गई है । प्राप्त अंकों के आधार से नगरीय छात्रों ने इस प्रश्न के निर्धारित अंकों में 43·88 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं और ग्रामीय छात्रों ने 38·33 अंक प्राप्त किये हैं । इस प्रश्न में नगरीय छात्रोंने, ग्रामीय छात्रों से 5·55 प्रतिशत अंक अधिक प्राप्त किये हैं । औसत प्रतिशत से तुलना करने पर यह मालूम होता है कि छात्रों की उपलब्धि इस प्रश्न के हद तक संतोषजनक है परंतु अधिकतर छात्रों ने (अ) भाग के मद (Item) 1, 3 और 4 को ही सही उत्तर दिये हैं । मद 2 और 5 को कुल संख्या में 730 छात्र नहीं कर सके हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्र छात्रायें छात्र 'ने' तथा लिंग संबंधी ज्ञान स्पष्ट रूप से नहीं रखते हैं ।

प्रश्न 4 का (आ) भाग छात्रों के वचन संबंधी ज्ञान की जाँच के लिए दिया गया है । कुल नगरीय छात्रों ने कुल अंकों में से इस भाग में 485 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 10·10 है और ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं ने 410 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 8·54 है । औसत प्रतिशत की तुलना में छात्र इस मद में कम ज्ञान रखते हैं । नगरीय छात्र, ग्रामीण छात्रों से 1·56 प्रतिशत अंक अधिक प्राप्त किये हैं । तुलना की दृष्टि से नगरीय छात्रों की उपलब्धि ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि से अधिक है । फिर भी संपूर्ण उपलब्धि की दृष्टि में छात्र वचन के प्रयोग में कमज़ोर हैं ।

प्रश्न 4 के (इ) अंश को छात्रों के शब्द भण्डार तथा वाक्य प्रयोग के ज्ञान की जाँच करने के लिये दिया गया है । इस अंश में छात्रों की उपलब्धि प्रतिशत से यह पता चलता है कि नगरीय छात्रों ने कुल अंकों में 794 अंक प्राप्त

किये हैं जिनका प्रतिशत 20·68 हैं और ग्रामीय छात्रों ने कुल अंक 672 अंक प्राप्त किये हैं । इनका प्रतिशत 17·50 है । स्पष्ट होता है कि विपरीत अर्थों का ज्ञान ग्रामीय छात्रों से नगरीय छात्र ठीक ढंग से रखते हैं । नगरीय वातावरण का प्रभाव इसका प्रधान कारण हो सकता है । औसत प्रतिशत की दृष्टि से भी छात्रों ने इस कौशल में संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त की है ।

प्रश्न 4(ई) भाग में छात्रों के उच्चारण संबंधी ज्ञान की जाँच करने के लिए दिया गया है । नगरीय छात्रों ने कुल अंकों में से 939 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 24·45 है और ग्रामीय छात्रों ने कुल अंकों में से 798 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 20·78 हैं । इस अंश में भी नगरीय छात्र ग्रामीय छात्रों से 3·67 प्रतिशत अधिक उपलब्धि रखते हैं । यह प्रतिशत छात्रों के औसत प्रतिशत से अधिक है । इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नगरीय वातावरण में छात्रों को हिन्दी भाषा का व्यवहार अधिक होने के कारण हिन्दी ध्वनियों से ठीक परिचय प्राप्त कर सके हैं । इसलिए छात्रों को सही उच्चारण ज्ञान है । ग्रामीय छात्र इस दृष्टि से कमजोर है परंतु औसत प्रतिशत की दृष्टि से इस अंश में छात्रों की उपलब्धि संतोषजनक हैं ।

प्रश्न 4 का भाग (उ) छात्रों को मौलिक अभिव्यक्ति एवं वाक्य प्रयोग ज्ञान की जाँच करने के लिए दिया गया है । इस प्रश्न के कुल 4800 अंकों में से नगरीय छात्रों ने केवल 46 अंक ही प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·96 है और ग्रामीय छात्रों ने 40 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·83 है । इन दोनों का प्रतिशत औसत प्रतिशत की तुलना में बहुत ही कम है । नगरीय एवं ग्रामीय छात्रों की तुलना में भी अधिक अंतर दिखाई नहीं पड़ता है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों में लेखन अभिव्यक्ति की कुशलता बहुत कम है । छात्र अपने विचारों को लिखित रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं । छात्र तथा छात्राओं को भाषा कौशल में लिखित कौशल का ज्ञान कम है ।

प्रश्न संख्या 5 छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान तथा स्मृति (Memory) की जाँच करने हेतु दिया गया है । इस प्रश्न में नगरीय छात्र तथा छात्राओं के कुल अंकों में से छात्रों ने 469 अंक प्राप्त किये जिसका प्रतिशत 12·21 है और ग्रामीण छात्रों ने 376 अंक प्राप्त किये और जिसका प्रतिशत 9·79 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि नगरीय छात्र तथा ग्रामीय छात्रों के अंकों का प्रतिशत कुल औसत प्रतिशत 15·71 से बहुत कम है । तुलना की दृष्टि से ग्रामीण छात्रों से नगरीय छात्रों का प्रतिशत 2·42 प्रतिशत अधिक है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र पुस्तकीय ज्ञान एवं स्मृति आदि क्षेत्रों में कमज़ोर है । स्मृति का संबंध रूचि एवं अभिप्रेरणा, से भी है जिस विषय में छात्रों की रूचि रहती है उसको छात्र अच्छी तरह याद रखते हैं । हिन्दी के प्रति कम रूचि रहने से छात्र इस विषयसे संबंधित विषय को याद नहीं रखते हैं । रूचि का संबंध अधिक मात्रा में विषय से भी रहता है ।

प्रश्न संख्या 6 : यह प्रश्न छात्रों की तर्कशक्ति, स्मरण शक्ति को दृष्टि में रखकर पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर दिया गया है । इस प्रश्न के कुल अंक 1920 में से नगरीय छात्रों ने 1160 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 60·42 है और ग्रामीय छात्रों ने 1048 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 54·58 है । कुल प्रतिशत से तुलना करने से यह पता चलता है कि छात्रों की तर्क शक्ति बहुत अच्छी है । इसीलिए इसमें छात्रों ने अधिक अंक प्राप्त किये हैं । ग्रामीण छात्रों से नगरीय छात्रों ने 5·84 प्रतिशत अंक अधिक प्राप्त किया है । यह प्रतिशत कुल औसत प्रतिशत से भी लगभग चार गुना अधिक है । उपलब्धि की दृष्टि से इस प्रश्न में छात्रों का प्रतिशत सबसे अधिक है । इस प्रश्न में छात्रों की उपलब्धि प्रतिशत से यह पता चलता है कि छात्रों में तर्क एवं स्मरण शक्ति ठीक है ।

प्रश्न 7 : यह प्रश्न छात्रों की मौलिकता, संरचना शक्ति, अर्थग्रहण, तथा तेलुगु तथा हिन्दी की तुलनात्मक संरचना के ज्ञान को जाँचने की दृष्टि से पूछा गया है ।

इस प्रश्न में नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों ने कुल 7200 अंक प्राप्त किये जिनमें से नगरीय छात्रों/ तथा छात्राओं ने 391 अंक और उनका प्रतिशत 5•43 है और ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं के अंक 307 और उनका प्रतिशत 4•26 है । नगरीय छात्र ग्रामीय छात्रों से 1•17 प्रतिशत अंक अधिक है । यह प्रतिशत तुलना की दृष्टि से बहुत ही कम है । छात्रों के उपलब्धि प्रतिशत से यह पता चलता है कि छात्र संरचना शक्ति, मौलिक अभिव्यक्ति, तेलुगु और हिन्दी के वाक्य निर्माण का ज्ञान आदि में कमज़ोर है ।/इससे यह भी पता चलता है कि छात्र अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं । लिखित अभिव्यक्ति में उनका स्तर ठीक नहीं है । यह स्थिति ग्रामीय छात्रों की भी है ।

निष्कर्ष :

विश्लेषण सूची संख्या-1 से आन्ध्र प्रान्त में रहनेवाले नगरीय एवं ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं की भाषा संबंधी उपलब्धि पर निम्न प्रकार के तथ्य हमारे सामने आये हैं –

(1) आन्ध्र प्रान्त के 8 वीं कक्षा के छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति संतोषजनक है । नगरीय छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति का प्रतिशत 37•05 है तो ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 33•13 है ।

(2) पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित इस प्रश्न से यह पता चलता है कि छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान बहुत कम है । इसमें नगरीय छात्रों का प्रतिशत 11•67 और ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 8•10 है । इसके आधार से शोधकर्ता ने इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि 8 वीं कक्षा का हिन्दी पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक संतोषजनक नहीं है ।

(3) तृतीय प्रश्न के विश्लेषण के आधार पर इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि 8 वीं कक्षा में जिन कविताओं का समावेश किया गया है उनका चयन ठीक नहीं है, स्तर छात्रों की मानसिक शक्ति से अधिक मालूम

होता है । इसलिए छात्र कविता का रसस्वादन करने में विफल हुए है । इस प्रश्न में नगरीय छात्र छात्राओं ने 0·71 प्रतिशत और ग्रामीय छात्र छात्राओं ने 0·31 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं ।

(4) इस प्रश्न के (अ) भाग से यह स्पष्ट होता है कि छात्र 'ने' का प्रयोग तथा 'लिंग' का ज्ञान स्पष्ट रूप से नहीं रखते हैं ।

(आ) भाग से पता चलता है कि 8 वीं कक्षा के छात्रों में वचन संबंधी ज्ञान का भी अभाव है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रों का प्रतिशत 10·10 और ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 20·68 और ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 17·50 है । यह औसत प्रतिशत से अधिक होने के नाते मान्य है ।

(ई) भाग में छात्रों की उपलब्धि से यह पता चलता है कि नगरीय छात्रों को उच्चारण संबंधी ज्ञान है । इनका प्रतिशत 24·45 है और ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 20·78 है । छात्रों के उच्चारण पर नगरीय वातावरण का प्रभाव होना संभव है ।

(उ) इस प्रश्न में छात्रों से प्राप्त क उपलब्धि प्रतिशत से यह पता चलता है कि छात्रों में मौलिक अभिव्यक्ति तथा लेखन कौशल का ज्ञान बहुत कम है । इस कौशल में नगरीय छात्रों का प्रतिशत 0·96 है और ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत 0·83 है ।

प्रश्न 5 के उपलब्धि के प्रतिशत से यह पता चलता है कि छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम है ।

(6) छात्रों की उपलब्धि प्रतिशत से यह पता चलता है कि छात्रों में तर्क एवं निर्णय शक्ति उनके उत्तर के आधार पर ठीक है ।

(7) इस प्रश्न में छात्रों से प्राप्त प्राप्तांक प्रतिशत से यह कह सकते हैं कि छात्र हिन्दी में मौलिक रचना नहीं कर सकते हैं । छात्र लेखन कौशल में कमजोर हैं ।

उपलब्धि विश्लेषण सूची - 2

		छात्र (नगरीय तथा ग्रामीय) संख्या : 480		छात्राएँ (नगरीय तथा ग्रामीय) संख्या : 480	
प्र0 सं0	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×16 5760	2066	35·87	1976	34·31
2	300×16 4800	544	11·33	405	8·44
3	300×16 4800	33	0·69	16	0·33
4 (अ)	150×16 2400	966	40·25	1007	41·96
(आ)	300×16 4800	462	9·63	433	9·02
(इ)	240×16 3840	784	20·42	582	15·16
(ई)	240×16 3840	842	21·93	895	23·31
(उ)	300×16 4800	45	0·94	41	0·85
5	240×16 3840	466	12·14	379	9·87
6	120×16 1920	1107	57·66	1101	57·34
7	450×16 7200	366	5·08	332	4·61
कुल संख्या एवं प्रतिशत	48,000	7861	16%	7167	14·93%

छात्र (नगरीय सर्व ग्रामीय)
संख्या : 480
प्राप्तांक : 7681
प्रतिशत : 16%

छात्राएँ (नगरीय तथा ग्रामीय)
संख्या : 480
प्राप्तांक : 7167
प्रतिशत : 14·93

...

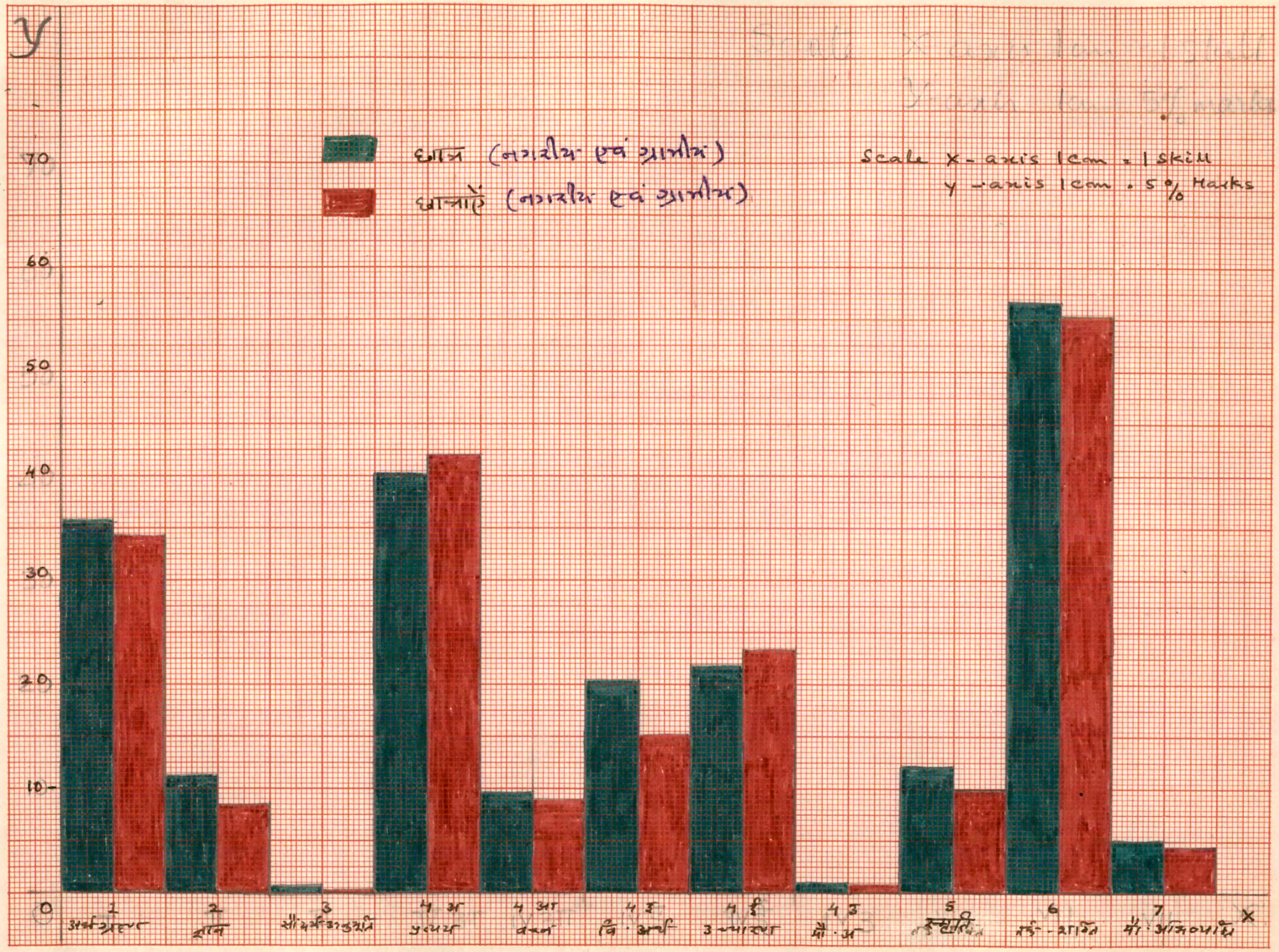
Y
X
छात्र (नगरीय एवं ग्रामीण)
छात्राएँ (नगरीय एवं ग्रामीण)
Scale X-axis 1cm = 1 Skill
Y-axis 1cm = 5% Marks
70
60
50
40
30
20
10
0
1 अर्थग्रहण
2 ज्ञान
3 सौंदर्यानुभूति
4 अ प्रत्यय
4 आ वर्णन
4 इ वि. अर्थ
4 ई व्याख्या
4 उ मौ. अ
5
6 तर्क-शक्ति
7 मौ. अभिव्यक्ति

विश्लेषण सूची - 2

यह विश्लेषण सूची 8 वीं कक्षा द्वितीय भाषा हिन्दी की उपलब्धि परीक्षण में सम्मिलित 960 छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि दर्शाती है । सूची संख्या-2 में शोधकार्य में सम्मिलित 8 आन्ध्र जिलों के छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि अंकों को जोड़कर प्रतिशत में दर्शाया गया है । कुल छात्रों का औसत प्रतिशत 15.71 है । यह प्रतिशत आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी अंकों से कम है । इस निम्न प्रतिशत को आधार लेकर यह नहीं कह सकते हैं कि छात्रों की उपलब्धि कम है । इस शोधकार्य का उद्देश्य यह भी है कि छात्र भाषा के किस किस पक्ष में कमज़ोर है और उनके सामने किस प्रकार की कठिनाइयाँ भाषा सीखते समय आती हैं और उन कठिनाइयों को कैसे दूर किया जा सकता है ।

इस सूची के द्वारा शोधकर्ता ने यह बताना चाहा कि कुल 480 छात्र और 480 छात्राओं की उपलब्धि हिन्दी में कैसी है और छात्र एवं छात्राएँ किस पक्ष में समर्थ है और किस पक्ष में कमज़ोर है ।

प्रश्न संख्या - 1 के अनुसार कुल 480 छात्रों ने इस प्रश्न में 2066 अंक प्राप्त किये हैं और उनका प्रतिशत 35.87 है और 480 छात्राओं ने 1976 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 34.31 है । उपलब्धि की दृष्टि से शोध परीक्षण के औसत अंक और प्रतिशत की दृष्टि से छात्रों की उपलब्धि ठीक है । आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी अंकों की तुलना में भी ठीक है । सूची के अनुसार छात्रों का प्रतिशत छात्राओं के प्रतिशत से अधिक है । इस प्रश्न को छात्रों के अर्थग्रहण की जाँच करने के लिए दिया गया है । इससे ज्ञात होता है कि छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति छात्राओं की अर्थग्रहण शक्ति से अधिक है ।

प्रश्न संख्या-2 के अनुसार कुल 480 छात्रों ने इस प्रश्न में 544 अंक प्राप्त किया है जिनका प्रतिशत 11·33 है । छात्राओं ने 405 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 8·44 है । यह प्रश्न छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान की जाँच करने के उद्देश्य से दिया गया है । विश्लेषण सूची से यह ज्ञात होता है कि छात्र तथा छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान निश्चित स्तर प्राप्त नहीं/किया है । इनका स्तर शोध के औसत प्रतिशत 15·71 और आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% अंकों से भी कम है । इससे यह ज्ञात होता है कि छात्र पाठ्यपुस्तकों को ध्यान से नहीं पढ़ते हैं और पाठ्यपुस्तक छात्रों की मानसिक आयु से अधिक है । पाठ्यक्रम के उद्देश्य अस्पष्ट है । छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान की उपलब्धि छात्राओं की पुस्तकीय ज्ञान की उपलब्धि से 2·89 प्रतिशत अधिक है । यह बहुत ही कम प्रतिशत है इसकी तुलना एवं समालोचना करना उतना तर्क संगत न होगा ।

प्रश्न-3 में छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि विश्लेषण सूची-2 के अनुसार निम्न प्रकार है । कविता में छात्रों की सौंदर्यानुभूति तथा अभिव्यक्ति की जाँच करने के उद्देश्य से यह प्रश्न दिया गया है । विश्लेषण सूची यह बताती है कि इसमें छात्रों की उपलब्धि बहुत ही कम है । कुल 480 छात्रों ने 33 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·69 है और छात्राओं ने 16 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·33 है । यह प्रतिशत छात्रों के औसत प्रतिशत तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% प्रतिशत अंकों से भी बहुत कम होने के कारण यह कहा जाता है कि छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि इस क्षेत्र में कम है । इससे यह पता चलता है कि प्रस्तुत 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक की कविताएँ छात्रों के स्तर के अनुकूल नहीं है । पाठ्यपुस्तक में प्राचीन कविताओं को स्थान देना उचित न होगा ।

प्रश्न 4(अ) यह प्रश्न छात्रों के प्रत्यय, लिंग, वचन आदि के मूल्यांकन

करने हेतु दिया गया है । छात्रों की उपलब्धि इस प्रश्न में ठीक रही है । परंतु प्रश्न के प्रत्येक अंश के अंकों को कुल अंक सूची के साथ अध्ययन करने से यह मालूम पड़ता है कि अधिकतर छात्रों ने प्रश्न 2 और प्रश्न 5 को छोड़ दिया है । इससे यह स्पष्ट होता है छात्रों को 'ने' तथा लिंग व्यवस्था को पहचानने में विफल हुए हैं ।

छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि की तुलना से यह पता चलता है कि इस प्रश्न में छात्रों का प्रतिशत 40·25 है और छात्राओं का 41·96 है । इससे यह पता चलता है कि छात्राओं का प्रत्यय ज्ञान छात्रों से अधिक है । यह अनुमान किया जा सकता है कि व्याकरण संबंधी बातों की ओर छात्राएँ अधिक ध्यान देती हैं ।

प्रश्न 4 (आ) यह प्रश्न छात्रों के वचन संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन करने हेतु दिया गया है । विश्लेषण सूची-2 के अनुसार यह पता चलता है कि छात्रों ने इस प्रश्न में कुल 462 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 9·63 है और छात्राओं ने 433 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 9·02 है । इस प्रश्न के हद तक छात्र तथा छात्राओं के प्रतिशत में अधिक अंतर नहीं है । परंतु इतना कहा जा सकता है कि छात्र तथा छात्राओं का स्तर बहुत ही कम है । शोध का औसत प्रतिशत 15·71 और आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्दिष्ट प्रतिशत 20% से भी कम है ।

इससे यह ज्ञात होता है कि छात्र तथा छात्राओं को वचन संबंधी ज्ञान बहुत ही कम है ।

प्रश्न 4(इ) इस प्रश्न के अंतर्गत छात्रों के शब्द भण्डार का ज्ञान तथा वाक्य प्रयोग की जाँच की गई है । कुल अंकों में से छात्रों ने 784 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 20·42 है और छात्राओं ने 582 अंक प्राप्त किये हैं ।

उनका प्रतिशत 15·16 है । इस प्रश्न में छात्रों की उपलब्धि ठीक है परंतु प्रतिशत की दृष्टि से छात्राओं की उपलब्धि संतोषजनक नहीं है । इसका कारण यह भी हो सकता है कि छात्राओं को हिन्दी सुनने का मौका कम मिलता है । लोगों से इनका सम्पर्क कम होना भी इसका प्रधान कारण हो सकता है ।

प्रश्न 4(ई) उच्चारण का मूल्यांकन करना इस प्रश्न का मूल उद्देश्य है । कुल 480 छात्रों के अंक 842 और उनका प्रतिशत 21·93 है । इनकी तुलना में छात्राओं के अंक 895 और प्रतिशत 23·31 है । इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि छात्राएँ पाठ को सुनते समय अध्यापक के शब्दोच्चारण पर अधिक ध्यान देती हैं । औसत प्रतिशत की तुलना में दोनों की उपलब्धि ठीक ही है ।

प्रश्न 4(उ) में भाषा संबंधी मौलिकता, संरचना आदि की जाँच करने हेतु यह प्रश्न दिया गया है । इस प्रश्न में छात्रों की उपलब्धि प्रतिशत 0·94 और छात्राओं की उपलब्धि प्रतिशत 0·85 होने के नाते यह स्पष्ट है कि 8 वीं कक्षा के छात्र तथा छात्राओं में लिखित अभिव्यक्ति कौशल का अभाव है । इससे यह भी संभावित कर सकते हैं कि अध्यापक छात्रों को लिखित कार्य देते हैं परंतु लिखित कार्य को जाँचने का कष्ट नहीं लेते हैं ।

प्रश्न (5) छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान एवं स्मरण शक्ति का मूल्यांकन करना इस प्रश्न का उद्देश्य है ।

विश्लेषण सूची-2 के अनुसार छात्रों ने कुल 3840 अंकों में से 466 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 12·14 है और छात्राओं ने 379 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 9·87 है । छात्रों की तुलना में छात्राओं का 2·27 प्रतिशत

कम है । इससे यह पता चलता है कि इन दोनों का प्रतिशत औसत प्रतिशत से भी कम है । पुस्तकीय ज्ञान तथा स्मरण शक्ति में इनकी उपलब्धि कम है । इससे यह पता चलता है कि छात्र पुस्तक का अध्ययन रुचि के साथ नहीं करते हैं इसलिए वे विषय के अंतर्गत निहित सूक्ष्म बातों पर ध्यान नहीं देते हैं ।

प्रश्न 6 : इस प्रश्न को पूछने का उद्देश्य छात्रों की तर्क शक्ति तथा स्मरण शक्ति का मूल्यांकन करना है । विश्लेषण सूची-2 के अनुसार छात्र तथा छात्राओं की तर्क तथा स्मरण शक्ति ठीक है । इसमें छात्रों का प्रतिशत 57·66 तथा छात्राओं का प्रतिशत 57·34 है । इससे यह बात स्पष्ट होती है कि छात्र तथा छात्राओं की तुलना में केवल 0·32 प्रतिशत का अन्तर है इसलिए इन दोनों की वैज्ञानिक तुलना यहाँ पर करना उचित न होगा । औसत तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित अंकों के प्रतिशत से भी छात्रों की उपलब्धि संतोषजनक है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों में स्मरण तथा तर्कशक्ति के होने पर भी सही प्रोत्साहन तथा रुचि नहीं मिलने के कारण 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी सीखने में कमज़ोर है ।

प्रश्न - 7 इस प्रश्न में छात्रों की मौलिकता, वाक्य संरचना का ज्ञान, तेलुगु तथा हिन्दी का तुलनात्मक ज्ञान की जाँच करने का उद्देश्य है ।

इसमें कुल छात्रों की उपलब्धि प्रतिशत 5·08 और छात्राओं का 4·61 है । इससे यह बात स्पष्ट होती है कि छात्राओं की उपलब्धि छात्रों की उपलब्धि से केवल 0·47 प्रतिशत कम है । तुलना की दृष्टि से इसका अधिक महत्व नहीं है । परंतु यह बता सकते हैं कि आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा हिन्दी के छात्र लेखन कौशल में बहुत कमज़ोर हैं । वे अपने विचारों को लिखित रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं ।

निष्कर्ष :

विश्लेषण सूची-2 से निम्नांकित तथ्य प्रकाश में आये हैं ।

(1) छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति छात्राओं की अर्थग्रहण शक्ति से अधिक है ।

(2) छात्र तथा छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान का स्तर ठीक नहीं है ।

(3) कविता की सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति में दोनों का स्तर निम्न है । पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-पुस्तकों का दोषपूर्ण होना भी एक कारण हो सकता है ।

(4) छात्र तथा छात्राएँ 'ने' प्रत्यय तथा लिंग निर्धारण में कमज़ोर हैं । उनका का, कि, के प्रत्यय ज्ञान ठीक है ।

(5) छात्र तथा छात्राएँ हिन्दी वचन का प्रयोग नहीं जानते हैं ।

(6) विपरीत शब्दों का प्रयोग छात्र ठीक ढंग से जानते हैं परंतु छात्राओं का स्तर संतोषजनक नहीं है ।

(7) उच्चारण क्षेत्र में छात्राओं का स्तर छात्रों के स्तर से ऊँचा है ।

(8) छात्र तथा छात्राएँ लिखित अभिव्यक्ति कौशल में कमज़ोर हैं ।

(9) छात्र तथा छात्राओं में तर्क तथा स्मरण शक्ति का अभाव नहीं हैं ।

(10) 8 वीं कक्षा के छात्र पुस्तक पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं ।

(11) इन छात्रों को हिन्दी पढ़ने का प्रोत्साहन नहीं मिलता है ।

(12) छात्रों को हिन्दी तथा तेलुगु वाक्य संरचना का तुलनात्मक ज्ञान नहीं है ।

(13) 8 वीं कक्षा के छात्र लिखित अभिव्यक्ति में कमज़ोर हैं ।

....

उपलब्धि विश्लेषण सूची-3

		छात्र (नगरीय) संख्या : 240		छात्र (ग्रामीय) संख्या : 240	
प्रश्न संख्या	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×8 2880	1082	37·57	984	34·17
2	300×8 2400	324	13·50	220	9·17
3	300×8 2400	25	1·04	8	0·33
4 (अ)	150×8 1200	533	44·42	433	36·08
(आ)	300×8 1200	250	10·42	212	8·83
(इ)	240×8 1920	411	21·41	373	19·43
(ई)	240×8 1920	448	23·33	394	20·52
(उ)	300×8 2400	23	0·96	22	0·92
5	240×8 1920	258	13·44	208	10·83
6	120×8 960	601	62·60	506	52·71
7	450×8 3600	202	5·61	164	4·56
	24,000	4157	17·32%	3524	14·68

छात्र (नगरीय)	छात्र (ग्रामीय)
संख्या : 240	संख्या : 240
प्राप्तांक : 4157	प्राप्तांक : 3524
प्रतिशत : 17·32%	प्रतिशत : 14·68%

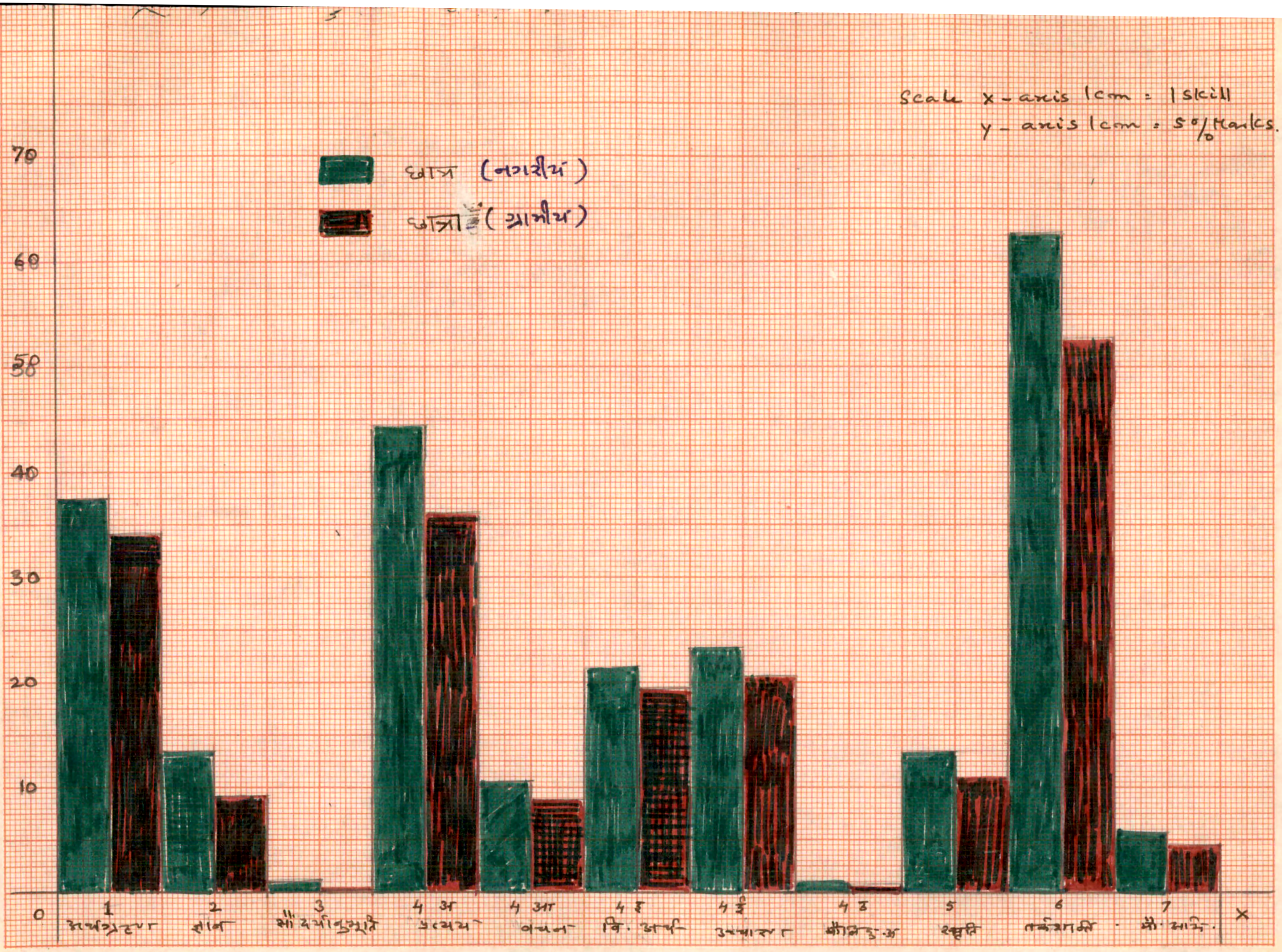
Scale x - axis 1cm = 1 skill
y - axis 1cm = 5% Marks.
छात्र (नगरीय)
छात्रा (ग्रामीय)
70
60
50
40
30
20
10
0
1
2
3
4 अ
प्रत्यय
4 आ
वचन
4 इ
4 ई
4 उ
5
स्मृति
6
7
x

आठवीं कक्षा के नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की
उपलब्धि विश्लेषण सूची-3

विश्लेषण सूची-3 में कुल 960 छात्रों में से कुल 240 नगरीय तथा 240 ग्रामीय छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का विश्लेषण किया गया है । यह विश्लेषण कुल अंकों को प्रतिशत में परिवर्तन करके छात्रों से प्राप्त अंक प्रतिशत से तुलना की गई है ।

प्रश्न-1 में नगरीय छात्रों ने 1082 अंक प्राप्य किये हैं उनका प्रतिशत 37·57 है और ग्रामीय छात्रों के अंक 984 है और उनका प्रतिशत 34·17 है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रों की उपलब्धि ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि से 3·40 प्रतिशत अधिक है । इस प्रश्न में निहित उद्देश्य के अनुसार नगरीय छात्रों की अर्थ-ग्रहण शक्ति ग्रामीय छात्रों से अधिक है । नगरीय वातावरण, विभिन्न भाषा-भाषियों से छात्रों का सम्पर्क इसके कारण हो सकते हैं ।

शैक्षिक उपलब्धि की दृष्टि से नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि संतोषजनक है । आन्ध्र प्रदेश सरकार से आठवीं कक्षा के लिए निर्धारित उत्तीर्णांक 20% से भी इस परीक्षा में प्राप्त छात्रों के अंक अधिक होने के कारण यह निर्विवादांश है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि संतोषजनक है ।

प्रश्न संख्या-2 में पाठ्यपुस्तक के आधार पर छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान का मूल्यांकन करने का उद्देश्य है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रों ने 2400 अंकों में से 324 अंक प्राप्त किया हैं उनका प्रतिशत 13·50 है और ग्रामीय छात्रों ने केवल 220 अंक प्राप्त किये हैं, उनका प्रतिशत 9·17 है । नगरीय छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान ग्रामीय छात्रों से 4·33 प्रतिशत अधिक है । वास्तव में देखा जाय तो यह प्रतिशत शोध कार्य के औसत प्रतिशत तथा सरकार से निर्धारित औसत

प्रतिशत से बहुत कम होने के कारण यह कहा जाता है कि कुल छात्र तथा छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम स्तर का है । उपलब्धि की दृष्टि से इनका स्तर संतोषजनक नहीं है ।

प्रश्न संख्या-3 में छात्रों की कवितागत कल्पना, सौन्दर्य रसस्वादन एवं अभिव्यक्ति की शक्ति का मूल्यांकन करने का उद्देश्य निहित है । विश्लेषण सूची संख्या-3 के अनुसार नगरीय छात्रों के अंक 25 और प्रतिशत 1·04 है और ग्रामीय छात्रों के अंक 8 और प्रतिशत 0·33 है । इन दोनों की उपलब्धि प्रतिशत से यह ज्ञात होता है कि छात्र कविता के भाव प्रकाशन में विफल हैं । इनका प्रतिशत औसत प्रतिशत 15·71 से बहुत कम है ।

प्रश्न संख्या-4 (अ) छात्रों का प्रत्यय, लिंग, आदि के मूल्यांकन के लिए दिया गया है । कुल अंक अंकों में से नगरीय छात्र 533 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 44·42 है और ग्रामीय छात्रों ने 433 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 36·08 है । इससे यह बात स्पष्ट है है कि नगरीय छात्रों की उपलब्धि इस प्रश्न में ग्रामीय छात्रों से 8·34 प्रतिशत अधिक है । परंतु ग्रामीय छात्रों का प्रतिशत भी कुल औसत प्रतिशत की तुलना में अधिक है । परंतु इस प्रश्न के प्रत्येक अंश की तुलना से यह ज्ञात होता है कि मद संख्या-2 और 5 का उत्तर कम संख्यांक छात्रों ने दिया है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र इस प्रश्न के अंतर्गत निहित 'ने' प्रत्यय का प्रयोग तथा लिंग व्यवस्था का व्यावहारिक ज्ञान से परिचित नहीं है ।

प्रश्न संख्या-4 (आ) में छात्रों का वचन संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । सूची विश्लेषण-3 के अनुसार यह पता चलता है कि आठवीं के छात्रों ने वचन का सही ज्ञान नहीं रखते हैं । नगरीय छात्रों के कुल अंक 250 और उनका

प्रतिशत 10·42 है और ग्रामीय छात्रों के अंक 212 और प्रतिशत 8·83 है । तुलना की दृष्टि से नगरीय छात्रों का प्रतिशत ग्रामीय छात्रों के प्रतिशत से 1·59 अधिक होने पर भी कुल उपलब्धि दोनों प्रान्तों के छात्रों का ठीक नहीं है ।

4(इ) : इस प्रश्न में 8 वीं कक्षा के छात्रों के विरोध शब्द के ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । इस मूल्यांकन में शब्द भण्डार की परीक्षण भी निहित है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रों ने ग्रामीय छात्रों से 1·98 अंक अधिक प्राप्त किये हैं । यह विरोध शब्दों के ज्ञान को जाँचने के उद्देश्य से दिया गया है । औसत प्रतिशत की दृष्टि से छात्र एंव छात्राओं की उपलब्धि ठीक है परंतु आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% प्रतिशत की दृष्टि से ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि कम है ।

4(ई) : यह प्रश्न छात्रों के उच्चारण संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए दिया गया है । इस प्रश्न के लिए निर्धारित कुल अंक 1920 में नगरीय छात्रों ने 448 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 23·33 है और ग्रामीय छात्रों ने 394 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 20·52 है । नगर तथा ग्रामीय छात्रों की औसत उपलब्धि प्रतिशत ठीक ही है । दोनों क्षेत्रों के छात्रों की तुलना में अधिक अन्तर दिखाई नहीं पड़ता हैं ।

4 (उ) : इस प्रश्न के अंतर्गत लिखित अभिव्यक्ति, मौलिकता तथा शब्द भण्डार का मूल्यांकन करने का उद्देश्य निहित है । इस प्रश्न में छात्रों के प्राप्तांक के आधार से कह सकते हैं कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि में अधिक अन्तर नहीं है परंतु दोनों क्षेत्रों के छात्र बहुत ही कमज़ोर हैं । इन दोनों क्षेत्रों के छात्रों का प्रतिशत एक से कम होना चिंताजनक है ।

प्रश्न - 5 : विश्लेषण सूची-3 के अनुसार इस प्रश्न के द्वारा 8 वीं कक्षा के छात्रों के हिन्दी पाठ्यपुस्तक का ज्ञान, स्मरण शक्ति आदि का परीक्षण किया गया है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रों ने कुल 1920 अंकों में से 258 अंक प्राप्त किये हैं और उनका प्रतिशत 13·44 है और ग्रामीय छात्रों ने 208 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 10·83 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान तथा स्मरण शक्ति संभावित स्तर का नहीं है । रुचि का अभाव, निर्धारित पुस्तक का दोष पूर्ण होना आदि इसके कारण हो सकते हैं ।

प्रश्न - 6 : इस प्रश्न में आठवीं कक्षा के छात्रों के तर्क एवं स्मरण शक्ति का मूल्यांकन किया गया है । प्राप्त सामग्री के अनुसार यह पता चलता है कि नगरीय एवं ग्रामीय छात्रों की संख्या एवं प्रतिशत की दृष्टि से उपलब्धि स्तरानुसार दिखाई देती है । 240 नगरीय छात्रों ने कुल 960 अंकों में से 601 अंक और ग्रामीय छात्रों ने 506 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 52·71 है । कुल औसत का प्रतिशत तथा सरकार से निर्धारित 20% प्रतिशत की तुलना में छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि स्तरानुसार है ।

प्रश्न-7 : भाषा मूल्यांकन की दृष्टि से इस प्रश्न का प्रमुख स्थान है । इस प्रश्न के द्वारा आठवीं कक्षा द्वितीय भाषा हिन्दी छात्रों के हिन्दी तेलुगु वाक्य संरचना के ज्ञान का ~~मूल्यांकन~~ मूल्यांकन किया गया है । परीक्षण के प्राप्तांकों यह ज्ञात होता है कि नगरीय तथा ग्रामीण छात्रों की उपलब्धि ठीक नहीं है । नगरीय छात्रों ने कुल अंकों में से 202 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 5·61 है । ग्रामीय छात्रों ने कुल अंकों में से 164 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 4·56 हैं । यह प्रतिशत कुल औसत प्रतिशत से बहुत कम है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र वाक्य-संरचना का ज्ञान नहीं रखते हैं और वे लिखित अभिव्यक्ति में कमज़ोर हैं ।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण सूची संख्या-3 से 8 वीं कक्षा के छात्रों के हिन्दी विषयक उपलब्धि का स्पष्ट ज्ञान मिलता है । सूची के अनुसार निम्नांकित उपलब्धियाँ विचारणीय हैं ।

(1) नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों में अर्थ-ग्रहण शक्ति ठीक ही है ।

(2) छात्रों में पुस्तकीय ज्ञान का अभाव है जिसके कारण पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तक, शिक्षण-विधि, सहायक सामग्री तथा हिन्दी अध्यापकों के साथ साथ अन्य गौण कारण भी हो सकते हैं ।

(3) छात्रों में 'कल्पना, अभिव्यक्ति तथा सौन्दर्यानुभूति जैसी शक्तियों का अभाव है । छात्र कविता के भाव प्रकाशन में विफल हुए हैं । यह नगरीय तथा ग्रामीय क्षेत्रों के छात्रों की स्थिति है ।

(4) 'ने' प्रत्यय तथा लिंग निर्णय का ज्ञान छात्रों को नहीं है ।

(5) नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों को वचन संबंधी ज्ञान कम है ।

(6) उच्चारण संबंधी ज्ञान ठीक ही मालूम होता है ।

(7) छात्रों में मौलिक अभिव्यक्ति एवं लेखन-कौशल का अभाव है ।

(8) नगरीय तथा ग्रामीय छात्रों में स्मरण शक्ति का अभाव है ।

(9) दोनों क्षेत्रों के छात्रों की तर्क शक्ति ठीक ही मालूम पड़ती है ।

(10) दोनों क्षेत्रों के छात्रों का लिखित अभिव्यक्ति तथा वाक्य संरचना का ज्ञान बहुत ही कम है ।

....

उपलब्धि विश्लेषण सूची-4

छात्राएँ (नगरीय) = 240 छात्राएँ (ग्रामीय) = 240

प्र0 सं0	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	$\frac{360\times8}{2880}$	1052	36·53	924	32·08
2	$\frac{300\times8}{2400}$	236	9·83	169	7·04
3	$\frac{300\times8}{2400}$	9	0·38	7	0·29
4 (अ)	$\frac{150\times8}{1200}$	520	43·33	487	40·58
(आ)	$\frac{300\times8}{2400}$	235	9·79	198	8·25
(इ)	$\frac{240\times8}{1920}$	383	19·95	299	15·57
(ई)	$\frac{240\times8}{1920}$	491	25·57	404	21·04
(उ)	$\frac{300\times8}{2400}$	23	0·96	18	0·75
5	$\frac{240\times8}{1920}$	211	10·99	168	8·75
6	$\frac{120\times8}{960}$	559	58·23	542	56·46
7	$\frac{450\times8}{3600}$	189	5·25	143	3·97
	24000	4108	17·12%	3359	14%

छात्राएँ (नगरीय)
संख्या : 240
प्राप्तांक : 4108
प्रतिशत : 17·12%

छात्राएँ (ग्रामीय)
संख्या : 240
प्राप्तांक : 3359
प्रतिशत : 14%

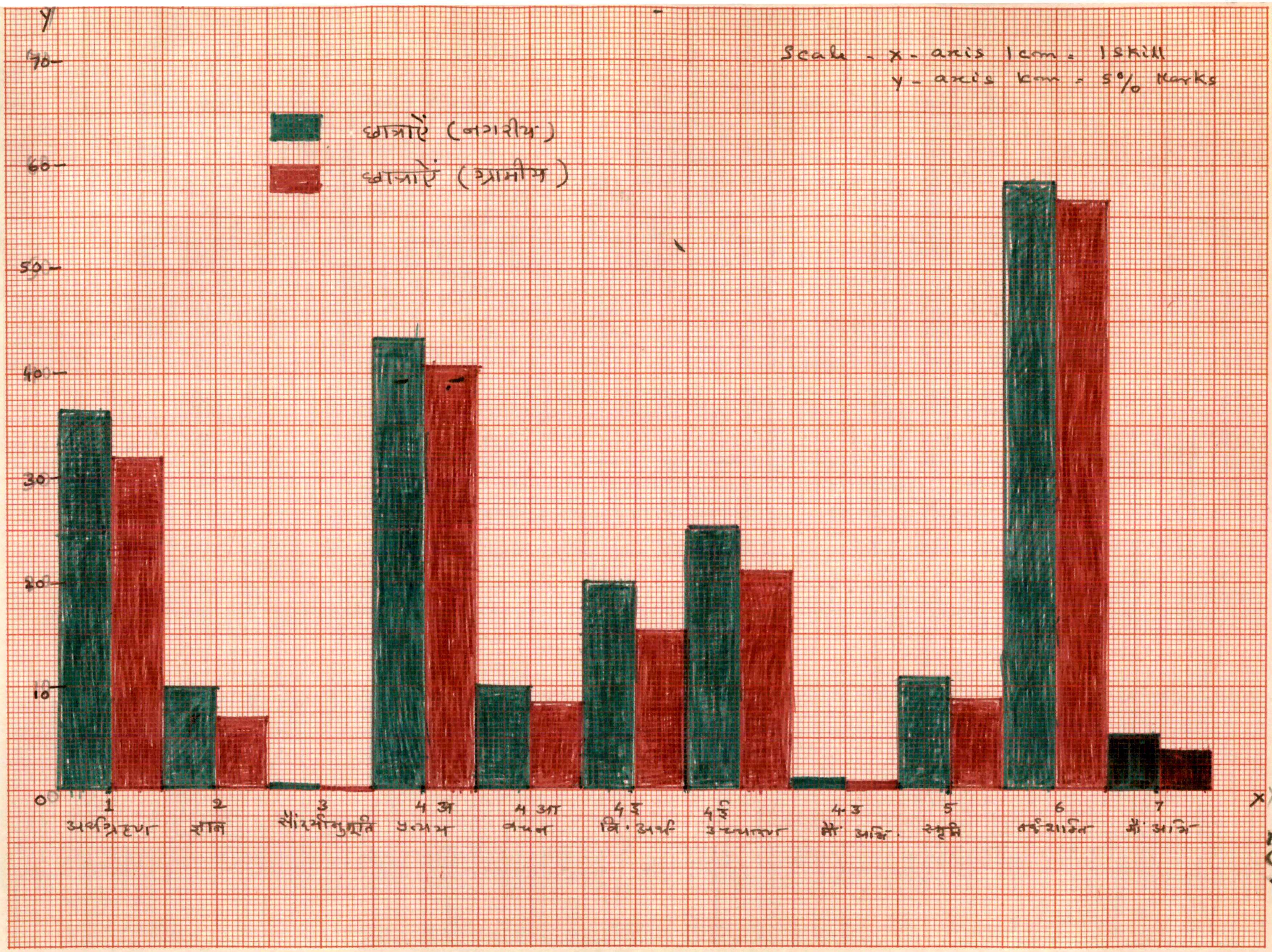
Scale - x - axis 1cm = 1 skill
y - axis 1cm = 5% Marks
छात्राऐं (नगरीय)
छात्राऐं (ग्रामीण)
Y
X
0
10
20
30
40
50
60
70
1
2
3
4 अ
4 आ
4 इ
4 ई
4 उ
5
6
7

विश्लेषण विवरण - 4

विश्लेषण सूची-4 में आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि का विवरण दिया गया है । इस शोधकार्य के क्षेत्र में 240 नगरीय छात्राएँ तथा 240 ग्रामीय छात्राएँ सम्मिलित हैं ।

प्रश्न संख्या-1 में नगरीय छात्राओं ने 1052 अंक प्राप्त किये हैं और उनका प्रतिशत 36·53 हैं और ग्रामीय छात्राओं ने 924 अंक प्राप्त किये हैं और उनका प्रतिशत 32·08 हैं । उक्त विश्लेषण प्रतिशत से यह विदित होता है कि ग्रामीय छात्राओं से नगरीय छात्राओं का अर्थग्रहण शक्ति 4·45 प्रतिशत अधिक है । नगरीय वातावरण आदि के कारण छात्राओं की प्रगति इस क्षेत्र में अधिक हैं । नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं का औसत प्रतिशत कुल 960 छात्रों के औसत प्रतिशत 15·71 से और सरकार से निर्धारित हिन्दी अंकों के प्रतिशत से अधिक होने के कारण यह कहा जा सकता है कि इन दोनों क्षेत्रों के छात्राओं की उपलब्धि अर्थग्रहण में ठीक है ।

प्रश्न संख्या-2 में नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की भाषा उपलब्धि कमज़ोर हैं । नगरीय छात्राओं ने कुल 2400 अंकों में से 236 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 9·83 है और ग्रामीय छात्राओं के अंक 169 और प्रतिशत 7·04 है । इस प्रश्न से छात्राओं की पुस्तकीय ज्ञान की जाँच की जाती है । नगरीय छात्राओं का प्रतिशत ग्रामीय छात्राओं से 2·79 प्रतिशत अधिक है । साधारणतः नगरीय छात्राओं तथा ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि में अधिक अन्तर नहीं है । छात्राओं की उपलब्धि पुस्तकीय ज्ञान में निम्न स्तर की है ।

प्रश्न संख्या-3 में छात्रों की कल्पना, अभिव्यक्ति तथा सौन्दर्यानुभूति का मूल्यांकन किया गया है । विश्लेषण-सूची-4 की उपलब्धि के अनुसार यह पता चलता है कि नगरीय छात्राओं ने 9 अंक प्राप्त किये और उनका प्रतिशत 0.38 है और ग्रामीय छात्राओं ने 7 अंक प्राप्त किये और उनका प्रतिशत 0.29 है । नगरीय छात्राओं का प्रतिशत ग्रामीय छात्राओं से अधिक है इसलिए यह तुलना का अंश नहीं है । यहाँ पर यह कहना उचित ही जान पड़ता है कि आन्ध्र प्रान्त के सभी छात्रों की उपलब्धि इस प्रश्न के संबंध में संतोषजनक नहीं है । इसलिए कवितायन में छात्रों की मानसिक आयु के साथ साथ उनके हिन्दी के स्तर को भी ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है ।

प्रश्न संख्या-4 (अ) में नगरीय छात्राओं ने 520 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 43.33 है और ग्रामीय छात्राओं ने 487 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 40.58 हैं । नगरीय छात्राओं का प्रतिशत ग्रामीय छात्राओं की तुलना में केवल 2.75 प्रतिशत अधिक है । यह प्रतिशत तुलना की दृष्टि से कोई विशेष महत्व नहीं रखता । इस प्रश्न में छात्राओं के प्रत्यय, लिंग, ज्ञान का मूल्यांकन करने का उद्देश्य है । इस प्रश्न की उपलब्धि की एक विशेषता यह है कि छात्राओं का ज्ञान 'ने' प्रत्यय के प्रयोग, लिंग का निर्धारण आदि में कम है । इसका प्रधान कारण यह है कि उपलब्धि परीक्षण तेलुगु मातृभाषा-भाषियों का लिया गया है । हिन्दी के 'ने' प्रत्यय से मिलता जुलता प्रत्यय तेलुगु में नहीं है और तेलुगु में केवल दो ही लिंग होने के नाते तेलुगु छात्र, तेलुगु के नपुंसक लिंग का लिंग निर्धारण हिन्दी में नहीं कर पाते हैं । इस उपलब्धि परीक्षण में यह बात स्पष्ट हो गयी है । औसत शोध प्रतिशत तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी अंकों की तुलना में छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न के हद तक ठीक ही मालूम पड़ती है ।

प्रश्न 4(आ) में वचन संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । नगरीय छात्राओं से प्राप्त अंकों से यह विदित होता है कि कुल 240 छात्राओं ने कुल 2400 अंकों में से केवल 235 अंक प्राप्त किये हैं । उनका प्रतिशत 9·79 है और ग्रामीय छात्राओं ने 198 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 8·25 हैं । ग्रामीय छात्राओं की तुलना में नगरीय छात्राओं का प्रतिशत 1·54 अधिक है । कुल प्रश्नों में छात्राओं की उपलब्धि बहुत ही कम है । शोध कार्य के औसत प्रतिशत की दृष्टि से तुलना करें तो यह मालूम होता है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न में संतोषजनक नहीं है ।

प्रश्न-4 (इ) यह प्रश्न छात्राओं का शब्द भण्डार तथा विपरीत शब्दों के ज्ञान की जाँच करने के लिए दिया गया है । प्राप्त अंकों से यह विदित होता है कि कुल 1920 अंकों में से नगरीय छात्राओं ने 383 अंक प्राप्त किये हैं और ग्रामीय छात्राओं ने अंक 299 प्राप्त किये हैं । इनका प्रतिशत 19·95 तथा 15·57 है । इन दोनों क्षेत्रों की छात्राओं का प्रतिशत आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% प्रतिशत से कम होने के कारण यह कहा जाता है कि छात्राओं का शब्द भण्डार इतना कम है कि वे साधारण शब्दों के विपरीत शब्द लिखने में विफल हुए हैं ।

प्रश्न 4(ई) भाषा उपलब्धि परीक्षण के उच्चारण प्रतिशत 25·57 तथा 21·04 को ध्यान में रखकर यह कहा जाता है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं का हिन्दी उच्चारण ठीक है । संभवतः 8 वीं कक्षा में पढ़नेवाले इन नगरीय छात्राओं पर नगरीय वातावरण का प्रभाव कारण हो सकता है और ग्रामीय छात्राओं के उच्चारण ठीक रहने का कारण उन प्रान्तों के हिन्दी अध्यापकों का शुद्ध उच्चारण एवं योगदान भी एक कारण हो सकता है । इन दो क्षेत्रों की छात्राओं की उपलब्धि का प्रतिशत शोधकार्य की औसत उपलब्धि प्रतिशत से अधिक है ।

4(उ) इस प्रश्न के अंक प्रतिशत से यह ज्ञात होता है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि ठीक नहीं है । नगरीय छात्राओं ने कुल 2400 अंकों में केवल 23अंक और ग्रामीय छात्राओं ने 18 अंक प्राप्त किये हैं । उनका प्रतिशत 0·96 तथा 0·75 है । इस प्रश्न के अंतर्गत छात्रों का शब्द भण्डार तथा मौलिक लेखन शक्ति का मूल्यांकन करने का उद्देश्य निहित है । प्राप्त उपलब्धि से यह पता चलता है कि नगरीय तथा ग्रामीण छात्राओं का लेखन कौशल संतोषजनक नहीं है । व्याकरण तथा संरचना का ज्ञान न होना भी एक कारण हो सकता है ।

प्रश्न-5 : इस प्रश्न में छात्रों की स्मरण शक्ति तथा शब्दों का उचित प्रयोग जाँचने का उद्देश्य निहित है । नगरीय छात्राओं की उपलब्धि प्रतिशत 10·99 है और उनके अंक 211 है । ग्रामीय छात्राओं के अंक 168 हैं और उनका प्रतिशत 8·75 है । नगरीय छात्राओं की उपलब्धि ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि से केवल 2·24 प्रतिशत अधिक है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं में स्मरण शक्ति आदि प्रतिभा कम है ।

प्रश्न 6 :- इस प्रश्न के अंतर्गत छात्राओं की तर्कशक्ति एवं पुस्तकीय विषय से संबंधी सूक्ष्म ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । इस प्रश्न के लिए कुल 559 अंक निर्धारित हैं जिसमें नगरीय छात्राओं ने 559 अंक प्राप्त किये । उनका प्रतिशत 58·23 है और ग्रामीय छात्राओं को 542 अंक मिले उनका प्रतिशत 56·46 है । इस प्रश्न में नगरीय छात्राओं का प्रतिशत ग्रामीय छात्राओं के प्रतिशत से 1·77 अधिक है । शोध औसत प्रतिशत से यह प्रतिशत अधिक होने के कारण यह कहा जा सकता है कि इस प्रश्न में छात्राओं की उपलब्धि तृप्तिदायक है । विश्लेषण सूची के अन्य प्रश्नों के उपलब्धि प्रतिशत की तुलना से भी यह जान पड़ता है कि छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न में ठीक रहा है ।

प्रश्न संख्या 7 में छात्राओं की मौलिक अभिव्यक्ति, वाक्य संरचना, तेलुगु तथा हिन्दी वाक्य संरचना आदि कौशलों का मूल्यांकन करने का उद्देश्य रहा है । कुल 3600 अंकों में से नगरीय छात्राओं को 189 अंक और ग्रामीय छात्राओं का 143 अंक प्राप्त हुए । उनका प्रतिशत 5·25 और 3·97 रहा है । यह प्रतिशत इस शोध कार्य के कुल छात्रों के औसत प्रतिशत से बहुत ही कम होने के नाते यह कहा जा सकता है कि नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न में निम्न स्तर का है ।

<u>निष्कर्ष :</u>

उपर्युक्त विश्लेषण सूची-4 के विवरण से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि :

(1) नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं की अर्थ-ग्रहण शक्ति ठीक है ।

(2) नगरीय तथा ग्रामीय छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान निम्न स्तर का है ।

(3) छात्राओं में भावाभिव्यक्ति तथा सौन्दर्यानुभूति ~~निम्न स्तर का है~~ की शक्ति कम है । इस विषय पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि 8 वीं कक्षा हिन्दी पुस्तक का कविता चयन ठीक नहीं है ।

(4) छात्राओं को 'ने' प्रत्यय का प्रयोग, लिंग व्यवस्था की कठिनाई है ।

(5) छात्राओं को वचन संबंधी ज्ञान कम है ।

(6) छात्राओं को हिन्दी शब्द भण्डार से परिचय बहुत कम है ।

(7) शोधकार्य से उपलब्ध छात्राओं के अंक प्रतिशत के आधार से यह कहा जा सकता है कि छात्राओं का उच्चारण ठीक है ।

(8) छात्राओं में व्याकरण का ज्ञान तथा मौलिक अभिव्यक्ति की शक्ति का अभाव है ।

(9) छात्राओं की स्मरण शक्ति पुस्तकीय विषय के आधार पर संतोषजनक नहीं है ।

(10) छात्राओं को पुस्तक पढ़ने में कम प्रोत्साहन मिलने का आभास होता है ।

(11) छात्र मौलिक अभिव्यक्ति तथा लेखन-कौशल में कमज़ोर है । उनको तेलुगु तथा हिन्दी की वाक्य-संरचना का ज्ञान बहुत कम है ।

* *

उपलब्धि विश्लेषण सूची-5

		छात्र (नगरीय) = 240		छात्राएँ (नगरीय) = 240	
प्र0 सं0	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×8 / 2880	1082	37·57	1052	36·53
2	300×8 / 2400	324	13·50	236	9·83
3	300×8 / 2400	25	1·04	9	0·38
4 (अ)	150×8 / 1200	533	44·42	520	43·33
(आ)	300×8 / 2400	250	10·42	235	9·79
(इ)	240×8 / 1920	411	21·41	383	19·95
(ई)	240×8 / 1920	448	23·33	491	25·57
(उ)	300×8 / 2400	23	0·96	23	0·96
5	240×8 / 1920	258	13·44	211	10·99
6	120×8 / 960	601	62·60	559	58·23
7	450×8 / 3600	202	5·61.	189	5·25

छात्र (नगरीय)	छात्राएँ (नगरीय)
संख्या : 240	संख्या : 240
प्राप्तांक : 4157	प्राप्तांक : 3998
प्रतिशत : 17·32	प्रतिशत : 16·66

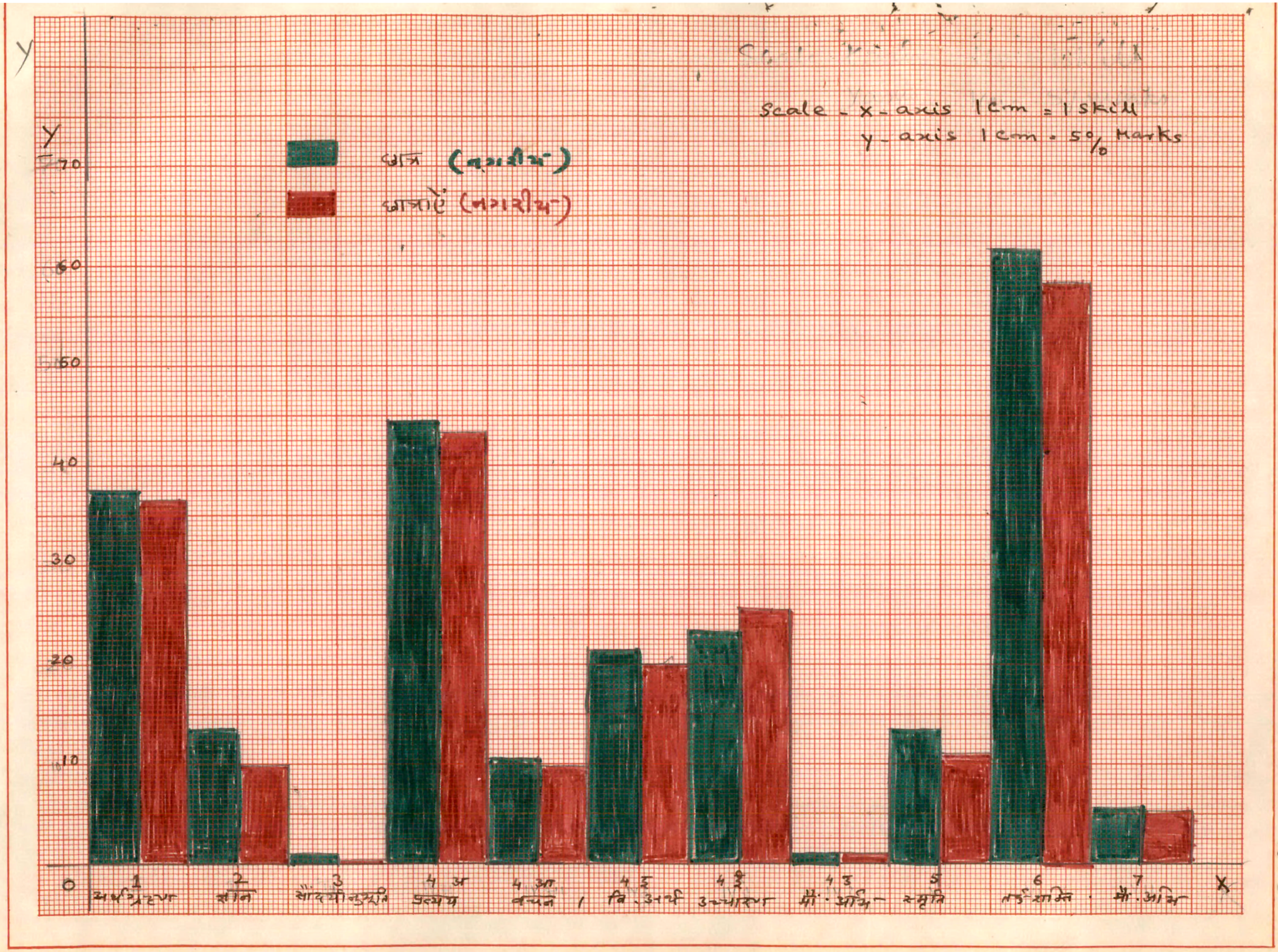

Scale - X-axis 1cm = 1 skill
Y-axis 1cm = 5% Marks
छात्र (नगरीय)
छात्राएं (नगरीय)

विश्लेषण सूची-5 का विवरण

विश्लेषण सूची-5 के अनुसार इसमें नगरीय छात्र एवं छात्राओं की भाषा संबंधी उपलब्धि की तुलना की गई । प्रश्न-संख्या-1 में नगरीय छात्र और छात्राओं की उपलब्धि में अधिक अन्तर नहीं है । इस प्रश्न में कुल अकों में से छात्रों ने 1082 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 37·57 है और छात्राओं ने 1052 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 36·53 है । नगर छात्रों और छात्राओं की उपलब्धि में 1·04 प्रतिशत का अन्तर है । इस प्रश्न से यह मालूम होता है कि अर्थ-ग्रहण शक्ति में 8वीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि ठीक ही है । शोधकार्य का औसत प्रतिशत 15·71 एवं आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित प्रतिशत 20% से भी इनका प्रतिशत कम नहीं होने के कारण यह कह सकते हैं कि नगरीय छात्र तथा छात्राओं की अर्थ-ग्रहण सम्बन्धी उपलब्धि ठीक ही है ।

प्रश्न संख्या-2 के अनुसार नगरीय छात्रों ने इस प्रश्न में 324 अंक प्राप्त किया है और उनका प्रतिशत 13·50 है और ग्रामीय छात्रों के अंक 236 और उनका प्रतिशत 9·83 है । यह प्रश्न छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से दिया गया है । प्राप्त नगरीय छात्रों के अंकों से यह पता चलता है कि पुस्तकीय ज्ञान में वे कमज़ोर हैं उनका प्रतिशत 15·71 से भी कम है । इसी प्रकार नगरीय छात्राओं के अंक इस प्रश्न में 236 है और उनका प्रतिशत 9·83 है जो नगरीय छात्रों से 3·67 प्रतिशत कम है ।

प्रतिशत की तुलना से यह जान पड़ता है कि नगरीय छात्रों का पुस्तकीय ज्ञान छात्राओं से कुछ मात्रा में अधिक ही है । कुल औसत

शोध प्रतिशत 15.71 की तुलना में इन दोनों का पुस्तकीय ज्ञान निम्न स्तर का है । इससे यह मालूम होता है कि आठवीं कक्षा का पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल नहीं है । हिन्दी शिक्षण विधियों का स्पष्टीकरण न होना भी एक कारण माना जाता है ।

प्रश्न संख्या-3 में कविता सम्बन्धी अभिव्यक्ति, सौन्दर्यानुभूति तथा कल्पना का उद्देश्य निहित है । विश्लेषण सूची संख्या-5 से यह पता चलता है कि कुल 240 छात्रों ने इस प्रश्न में 25 अंक प्राप्त किया है जिसका प्रतिशत 1.04 है । यह प्रतिशत इतना कम है कि इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कविता पाठन की ओर हिन्दी अध्यापकों का ध्यान बिलकुल नहीं रहा है । उसी प्रकार नगरीय छात्राओं की स्थिति भी है । इनका कुल अंक 9 और प्रतिशत 0.38 है जो निम्न स्तर का परिचय देता है । नगरीय छात्र तथा छात्राओं का यह स्तर निम्न कोटि का है । यह स्तर औसत शोध प्रतिशत से भी कम है ।

प्रश्न संख्या 4 के (अ) भाग में नगरीय छात्र तथा छात्राओं का उपलब्धि प्रतिशत ठीक है । यह प्रश्न व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान की जाँच करने के हेतु दिया गया है । इस प्रश्न में छात्रों को 'का', 'के', तथा 'की ' का प्रयोग आदि प्रश्न दिये गये हैं । छात्र तथा छात्राएँ ' ने' प्रत्यय संबंधी ज्ञान तथा लिंग निर्णय में कमजोर हैं । औसत शोध प्रतिशत की दृष्टि से भी इनकी भाषा उपलब्धि इस प्रश्न में ठीक ही है ।

प्रश्न संख्या 4 के भाग (आ) में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि संतोषजनक

नहीं है । यह प्रश्न नगरीय छात्र तथा छात्राओं के वचन सम्बन्धी ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए दिया गया है । इस प्रश्न में नगरीय छात्रोंका प्रतिशत 10·42 है और छात्राओं का प्रतिशत 9·79 है । यह उपलब्धि शोधकार्य की औसत उपलब्धि से भी कम है । इससे यह स्पष्ट होता है कि 8वीं कक्षा में पढ़नेवाले नगरीय छात्र तथा छात्राओं को हिन्दी वचन सम्बन्धी ज्ञान कम है । भाषा के व्यवहार में इसका बड़ा महत्व है । इससे यह पता चलता है कि छात्र तथा छात्राएँ अपने भावों को मौखिक भाषा में प्रकट नहीं कर सकते हैं ।

प्रश्न संख्या 4 के (इ) भाग में नगरीय छात्र तथा छात्राओं से प्राप्त अंक प्रतिशत से यह ज्ञात होता है कि इसको विपरीत अर्थवाले शब्दों का ज्ञान है। यह ज्ञान नगरीय छात्राओं से अधिक छात्रों को है । छात्रोंका प्रतिशत 21·41 है और छात्राओं का 19·95 है । यह प्रतिशत शोध के औसत प्रतिशत से अधिक होने के कारण इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस प्रश्न में छात्रों की उपलब्धि ठीक है ।

प्रश्न 4 के (ई) भाग में प्राप्त नगरीय छात्र तथा छात्राओं के अंकों के प्रतिशत से यह स्पष्ट होता है कि नगरीय छात्र तथा छात्राओं का उच्चारण ज्ञान का प्रतिशत शोधकार्य के औसत प्रतिशत से अधिक होने के कारण यह कह सकते हैं कि नगरीय वातावरण तथा हिन्दी अध्यापक के उच्चारण का प्रभाव छात्र तथा छात्राओं पर अच्छा रहा है । छात्र उच्चारण को ठीक रूप से जानने का अर्थ यह नहीं होता है कि वे हिन्दी में वार्तालाप कर सकते हैं इसका यही अर्थ है कि छात्र तथा छात्राओं को हिन्दी ध्वनियों का परिचय है ।

प्रश्न संख्या 4 के भाग(उ) में छात्रों की मौलिक लिखित अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया गया है । इस प्रश्न के लिए निर्धारित कुल अंकों में से नगरीय छात्र तथा छात्राओं ने इस कौशल में केवल 23 अंक प्राप्त किया है उनका प्रतिशत 0·76 है । यह प्रतिशत शोध के औसत प्रतिशत से बहुत ही कम है ।

इस प्रश्न से यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र के 8वीं कक्षा में पढ़नेवाली नगरीय छात्र तथा छात्राओं की लेखन शक्ति का स्तर निम्न कोटि का है । छात्र अपने विचारों को लिखित रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं ।

प्रश्न 5 में नगरीय छात्र तथा छात्राओं की स्मरणशक्ति का मूल्यांकन किया गया है । प्राप्तांक तथा प्रतिशत के आधार से यह पता चलता है कि नगरीय छात्रों तथा छात्राओं की स्मरण शक्ति ठीक नहीं है वे पुस्तकीय अंशों को पढ़ने में रूचि नहीं लेते हैं । इस प्रश्न में छात्रों ने 258 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 13· 44 है और छात्राओं के अंक 211 है और उनका प्रतिशत 10·99 है ।

प्रश्न संख्या 6 में नगरीय छात्र तथा छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर उनकी तर्क शक्ति तथा निर्णय शक्ति का मूल्यांकन किया गया है । कुल अंकों में से छात्रों ने 62·60 प्रतिशत अंक प्राप्त किया है और नगरीय छात्राओं को अंक 559 और प्रतिशत 58·23 है । नगरीय छात्रों का प्रतिशत छात्राओं के प्रतिशत से 4·37 अधिक है । कुल नगरीय छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत अन्य प्रश्नों के प्रतिशत की तुलना करके यह कह सकते हैं कि इस प्रश्न में छात्र तथा छात्राओं का साधारण ज्ञान तृप्तिदायक है । औसत शोध प्रतिशत 15·71 से भी इनकी उपलब्धि का प्रतिशत अधिक एवं संतोषजनक है ।

प्रश्न संख्या 7 से छात्रों की संरचना शक्ति तथा तेलुगु हिन्दी का तुलनात्मक संरचना ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । इस प्रश्न में नगरीय छात्र तथा छात्राओं की संरचना संबंधी उपलब्धि बहुत कम है । इन दोनों का प्रतिशत 5·61 तथा 5·25 है । यह शोध प्रतिशत से बहुत कम होने के कारण विचारणीय नहीं है ।

निष्कर्ष :

विश्लेषण सूची - 5 के आधार पर निम्नांकित उपलब्धियाँ प्राप्त हैं ।

(1) नगरीय छात्र तथा छात्राओं की अर्थग्रहण शक्ति ठीक है ।

(2) पुस्तकीय ज्ञान में इन दोनों प्रकार के छात्र कमज़ोर है ।

(3) कविता की अभिव्यक्ति, कल्पना तथा सौंदर्यानुभूति की शक्ति से छात्र परिचित नहीं है ।

(4) प्रत्यय संबंधी ज्ञान ठीक रहने पर भी 'ने' प्रत्यय का प्रयोग तथा लिंग निर्णय में छात्र कमज़ोर हैं ।

(5) छात्र तथा छात्राओं का वचन संबंधी ज्ञान बहुत कम है ।

(6) नगरीय छात्र तथा छात्राओं को विपरीत अर्थ संबंधी ज्ञान है ।

(7) छात्रों को हिन्दी ध्वनियों का स्पष्ट ज्ञान है । वे हिन्दी के शब्दों को स्पष्ट रूप से उच्चरित कर सकते हैं ।

(8) 8 वीं कक्षा के नगरीय छात्र तथा छात्राओं को लेखन संबंधी ज्ञान बहुत कम है । वे अपने विचारों का आदान प्रदान लिखित रूप से नहीं कर सकते हैं ।

(9) छात्र एवं छात्राएँ पुस्तक को ध्यान से नहीं पढ़ते हैं । इसीलिए पुस्तकीय सूक्ष्म अंशों पर उनका ध्यान ठीक नहीं है ।

(10) छात्र तथा छात्राओं में 'हिन्दी पढ़ने की रुचि नहीं है ।

(11) छात्रों में हिन्दी का साधारण ज्ञान नहीं है ।

(12) छात्र हिन्दी तथा तेलुगु की वाक्य संरचना एवं इन भाषाओं की मूल प्रकृति का ज्ञान नहीं रखते हैं ।

....

उपलब्धि विश्लेषण सूची-6

		छात्र (ग्रामीण) = 240		छात्राएँ (ग्रामीण) = 240	
प्र0 सं0	कुल अंक	अंक	प्रतिशत	अंक	प्रतिशत
1	360×8 / 2880	984	34·17	924	32·08
2	300×8 / 2400	220	9·17	169	7·04
3	300×8 / 2400	8	0·33	7	0·29
4 (अ)	150×8 / 1200	433	36·08	487	40·58
(आ)	300×8 / 2400	212	8·83	198	8·25
(इ)	240×8 / 1920	~~38~~ 373	19·43	299	15·57
(ई)	240×8	394	20·52	~~3~~ 404	21·04
(उ)	300×8 / 2400	22	0·92	18	0·75
5	240×8 / 1920	208	10·83	168	8·75
6	120×8 / 960	506	52·71	542	56·46
7	450×8 / 3600	164	4·56	143	3·97
	24000	3524	14·68%	3359	14·00%

छात्र : (ग्रामीय)
संख्या : 240
प्राप्तांक : 3524
प्रतिशत : 14·68%

छात्राएँ (ग्रामीय)
संख्या : 240
प्राप्तांक : 3359
प्रतिशत : 14%

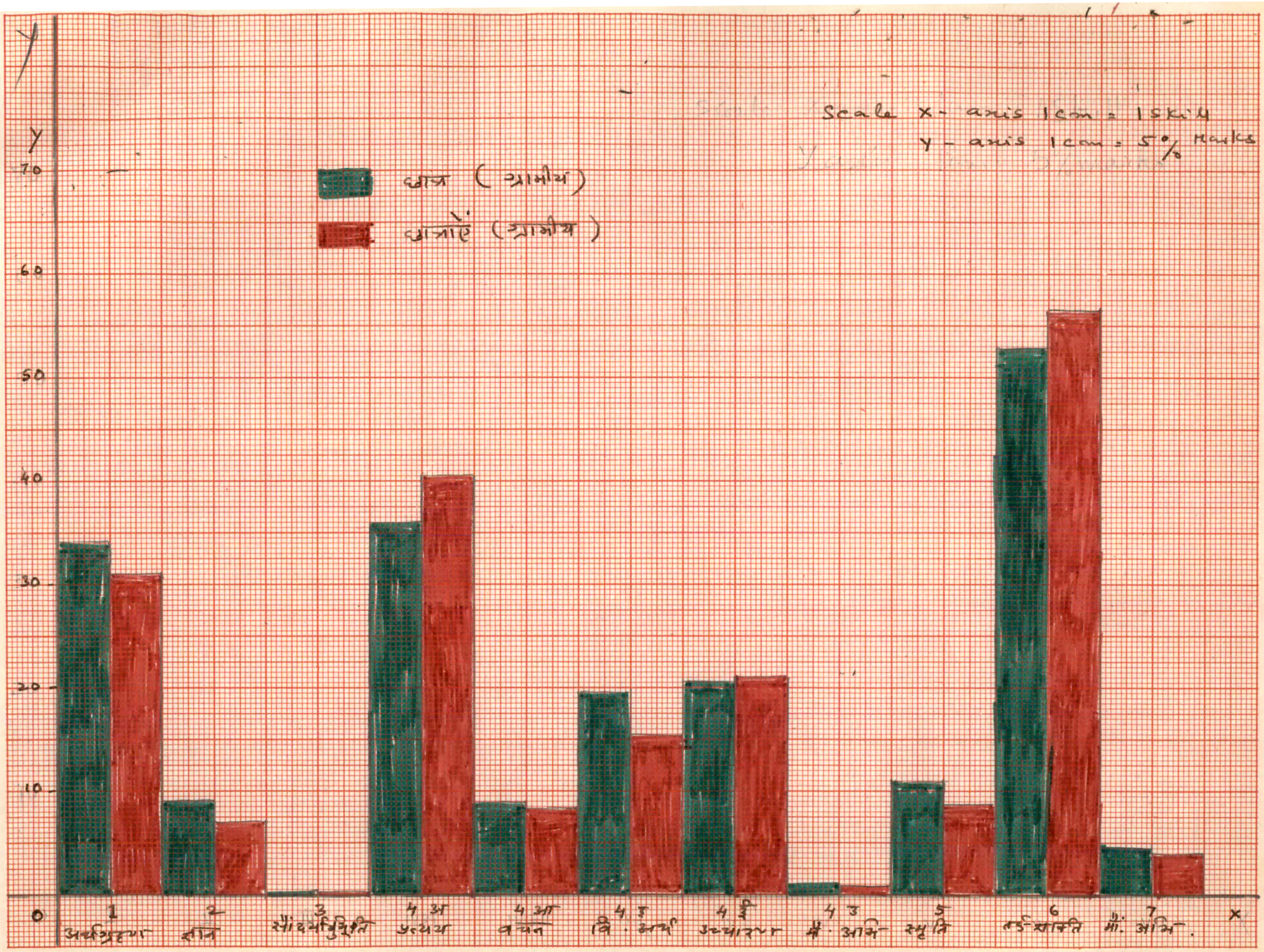
Scale X - axis 1cm = 1 Skill
Y - axis 1cm = 5% Marks
छात्र (ग्रामीय)
छात्राऐं (ग्रामीय)
Y
X
0
10
20
30
40
50
60
70
1 अर्थग्रहण
2 ज्ञान
3 सौंदर्यानुभूति
4 अ प्रत्यय
4 आ वचन
4 इ वि. अर्थ
4 ई उच्चारण
4 उ मौ. अभि.
5 स्मृति
7 मौ. अभि.

विश्लेषण विवरण सूची -6

विश्लेषण सूची-6 में ग्रामीय और छात्राओं की उपलब्धि का विवरण प्रस्तुत किया गया है । यह विवरण 240 ग्रामीण छात्रों, तथा 240 ग्रामीण छात्राओं का है । इन ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि की तुलना शोध कार्य की औसत उपलब्धि प्रतिशत तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित उत्तीर्ण प्रतिशत 20% से की गई है । शोधकार्य का औसत उत्तीर्ण प्रतिशत 15·71 है ।

प्रश्न संख्या-1 में ग्रामीय छात्रों ने कुल अंक 2880 में से 984 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 34·17 है और छात्राओं ने 924 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 32·08 है । यह प्रश्न छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति का मूल्यांकन करने के लिए दिया गया है । उपलब्ध प्रतिशत को औसत शोध प्रतिशत की तुलना करके यह कहा जाता है कि ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि इस प्रश्न में ठीक है । अर्थात् 8 वीं कक्षा में पढ़नेवाले इन छात्र तथा छात्राओं की अर्थग्रहण शक्ति ठीक मालूम होती है ।

प्रश्न संख्या 2 में ग्रामीय छात्र एवं छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान कम मालूम पड़ता है । इस प्रश्न में छात्रों के पुस्तकीय ज्ञान का मूल्यांकन किया गया है । ग्रामीय छात्रों ने कुल 220 अंक ~~प्रतशत~~ प्राप्त किये हैं और छात्राओं ने 169 अंक प्राप्त किये जिनका प्रतिशत 9·17 तथा 7·04 है । ग्रामीय छात्रों की उपलब्धि छात्राओं की उपलब्धि से 2·13 प्रतिशत अधिक है । परंतु यह प्रतिशत शोधकार्य के औसत प्रतिशत से बहुत ही कम है ।

प्रश्न संख्या 3 से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं ने कविता गत अभिव्यक्ति, कल्पना तथा समालोचना आदि शक्तियों में कमज़ोर हैं । छात्रों के कुल

8 उनका प्रतिशत 0·33 और छात्राओं के अंक 7 और उनका प्रतिशत 0·29 है । इससे यह भी स्पष्ट है कि अधिकतर छात्र तथा छात्राएँ ग्रामीय जिला परिषद्, प्रशिक्षु हाईस्कूलों में पढ़ते हैं । इसलिए कभी कभी छात्रों का साधारण पिछड़ापन का प्रभाव विशेष विषय ज्ञान पर ही पड़ सकता है । शोधकार्य के औसत प्रतिशत की तुलना में भी इस प्रश्न में प्राप्त ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं का अंक प्रतिशोध वाँछित स्तर से कम है ।

प्रश्न 4 भाग(अ) यह प्रश्न छात्रों के प्रत्यय ज्ञान के मूल्यांकन के लिए दिया गया है । इस प्रश्न में 8 वीं कक्षा के ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि ठीक है । विश्लेषण सूची से यह पता चलता है कि ग्रामीय छात्रों ने निर्धारित अंकों में से 433 अंक प्राप्त किये हैं और उनका प्रतिशत 36·08 है ग्रामीय छात्राओं ने 487 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 40·58 है । इस उपलब्धि से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीय छात्राएँ प्रत्यय प्रयोग आदि में छात्रों से भी अधिक ज्ञान रखती हैं । औसत शोध प्रतिशत की तुलना में इनकी उपलब्धि इस प्रश्न में संतोषजनक ही है ।

प्रश्न 4(आ) यह प्रश्न छात्रों के वचन संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन करने के हेतु दिया गया है । प्राप्त उपलब्धि अंक एवं प्रतिशत से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं को वचन संबंधी ज्ञान नहीं है । ग्रामीय छात्रों ने 212 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 8·83 है और छात्राओं के अंक 198 हैं और उनका प्रतिशत 8·25 है । शोधकार्य के औसत प्रतिशत से यह बहुत ही कम हैं ।

प्रश्न 4 भाग(इ) के प्रश्न छात्रों के विपरीत शब्दों के प्रयोग का ज्ञान जाँचने के लिए दिया गया है । इसका संबंध छात्रों के शब्द भण्डार का मूल्यांकन

करने से भी है । इसमें ग्रामीय छात्रों ने 373 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 19·43 है और छात्राओं ने 299 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 15·57 है । छात्रों का प्रतिशत शोध प्रतिशत से अधिक है और छात्राओं का प्रतिशत कुछ कम है । परन्तु इन दोनों का प्रतिशत आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित 20% से कम है । इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि शोध प्रतिशत के आधार से छात्रों का प्रतिशत इस प्रश्न में ठीक है और छात्राएँ इस क्षेत्र में कमज़ोर हैं ।

प्रश्न संख्या 4(ई) के अनुसार उच्चारण संबंधी उपलब्धि ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं का साधारण है । उच्चारण संबंधी इस प्रश्न में छात्रों का प्रतिशत 20·52 और ग्रामीय छात्राओं का 21·04 है । इससे पता चलता है कि आन्ध्र प्रान्तों में पढ़नेवाले 8 वीं कक्षा के छात्र हिन्दी ध्वनि प्रक्रिया से परिचित हैं । इनका प्रतिशत शोध प्रतिशत से अधिक है । ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं के प्रतिशत में अधिक अंतर नहीं है ।

प्रश्न संख्या 4 (उ) के अनुसार 8 वीं कक्षा के छात्र स्वतंत्र वाक्य रचना नहीं कर सकते हैं और वे लेखन कौशल में कमज़ोर हैं । ग्रामीय छात्रों ने इस प्रश्न में कुल 2400 अंकों में 22 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·92 है और छात्राओं ने 18 अंक प्राप्त किये हैं जिनका प्रतिशत 0·75 है । इससे यह स्पष्ट होता है कि वे लेखन कौशल में संभावित स्तर प्राप्त नहीं किये हैं।

प्रश्न संख्या-5 छात्रों की स्मरण शक्ति, तथा पुस्तिक संबंधी सूक्ष्म ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए दिया गया है । प्राप्त अंक प्रतिशत के आधार पर छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि निम्न स्तर का है । छात्रों ने इस प्रश्न में 10·83 प्रतिशत और छात्राओं ने 8·75 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं । यह शोध प्रतिशत से बहुत कम हैं । छात्रों का प्रतिशत छात्राओं से प्रतिशत से केवल 2·08 अधिक है । आलोचना की दृष्टि से इसका महत्व कम है ।

प्रश्न संख्या 6 में छात्रों की निर्णय शक्ति की जाँच की गई है । साधारण योग्यता से इसका थोड़ा बहुत संबंध है । इस प्रश्न के हद तक छात्रों की उपलब्धि साधारण मात्रा से अधिक ही है । ग्रामीय छात्रों ने इस प्रश्न में 506 अंक प्राप्त किये हैं उनका प्रतिशत 52.71 है और छात्राओं ने 542 अंक प्राप्त किये उनका प्रतिशत 56.46 है । यह प्रतिशत सभी प्रश्नों में प्राप्त उपलब्धि अंक प्रतिशत से अधिक है । शोध प्रतिशत 15.71 से भी अधिक होने के नाते यह कहा जा सकता है कि छात्रों के निर्णायक शक्ति सबल है ।

प्रश्न संख्या-7 में ग्रामीय छात्र तथा छात्राओं की उपलब्धि संभावित स्तर प्राप्त नहीं किया है । छात्रों ने 164 अंक प्राप्त किये उनका प्रतिशत 4.56 है और छात्राओं ने 143 अंक प्राप्त किये उनका प्रतिशत 3.97 है । शोध प्रतिशत की तुलना में उक्त प्रतिशत का कम महत्व है ।

<u>निष्कर्ष</u> :

उक्त विश्लेषण सूची के अनुसार ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं की भाषा संबंधी निम्न उपलब्धियाँ प्राप्त हैं ।

(1) 8 वीं कक्षा में पढ़नेवाले आन्ध्र के छात्रों की अर्थग्रहण शक्ति ठीक ही है ।

(2) ग्रामीय छात्र एवं छात्राओं का पुस्तकीय ज्ञान छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है ।

(3) छात्र एवं छात्राओं की कवितागत कल्पना एवं समालोचना शक्ति ठीक नहीं है । अधिक प्रतिशत छात्र कविता के भावार्थ को अपने शब्दों में नहीं लिख सके ।

(4) छात्र तथा छात्राओं को हिन्दी शब्द भण्डार से विशेष परिचय नहीं है ।

(5) ग्रामीय छात्र एवं छात्राओं को हिन्दी में स्वतंत्र रचना करने की शक्ति नहीं है ।

(6) छात्र एवं छात्राएँ पुस्तकीय ज्ञान में कमज़ोर हैं । वे पाठ के अंतर्गत आनेवाले सूक्ष्म बातों पर ध्यान नहीं देते हैं ।

(7) छात्र एवं छात्राओं में निर्णायक शक्ति ठीक ही हैं ।

...

मौखिक साक्षात्कार का

विश्लेषण

मौखिक साक्षात्कार का विश्लेषण

शोधकार्य में मौखिक साक्षात्कार एक जटिल प्रक्रिया है । इसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों एवं भावों से पूर्णतः अवगत होता है । इस क्रिया का प्रधान उद्देश्य तथ्य संग्रह करना है ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले उन छात्र एवं छात्राओं का मौखिक साक्षात्कार किया जो शोधकर्ता से ली गई भाषा उपलब्धि परीक्षा में 20% से कम अंक प्राप्त किये गये हैं । शोधकर्ता ने प्रत्येक पाठशाला से 10 छात्रों का प्रतिचयन किया है । इस प्रतिचयन में अत्यधिक कमजोर छात्रों को प्राथमिकता दी गई है ।

शोधकर्ता ने इस साक्षात्कार के द्वारा छात्रों की भाषा संबंधी रुचि, अभिप्रेरणा, वातावरण, प्रयोजन एवं भाषा अधिगम में छात्रों के सामने आनेवाली कठिनाइयों को साधारण रूप में पूछा गया है । इसको चित्र संख्या (3) में दर्शाया गया है । निर्भय से उत्तर देने की सलाह दी गई है । आवश्यकतानुसार शोधकर्ता ने छात्रों की मातृभाषा की सहायता भी ली है । शोधकर्ता ने छात्रों के भाव प्रकाशन से कई निगूढ़ तथ्यों को प्रकाश में लाया है ।

प्रत्येक छात्र के लिए पाँच मिनट का समय दिया गया है और प्रत्येक दस छात्रों तथा छात्राओं के मौखिक साक्षात्कार के लिए शोधकर्ता ने एक घण्टे का समय लिया है और इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं । प्रत्येक छात्र से मौखिक साक्षात्कार लेने के बाद शोधकर्ता ने उनके विचारों को लिपिबद्ध किया है ।

शोधकर्ता ने पूर्व निश्चित प्रश्नों का आयोजन छात्रों पर सावधानी के साथ किया है । इस साक्षात्कार से शोधकर्ता ने अपने निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति की है ।

आगामी पृष्ठों में शोधकर्ता ने मौखिक साक्षात्कार से प्राप्त उत्तर को प्रतिशत में दर्शाया है और अत्यधिक प्रतिशत उत्तर की मान्यता दी गई है ।

..

चित्र संख्या -3

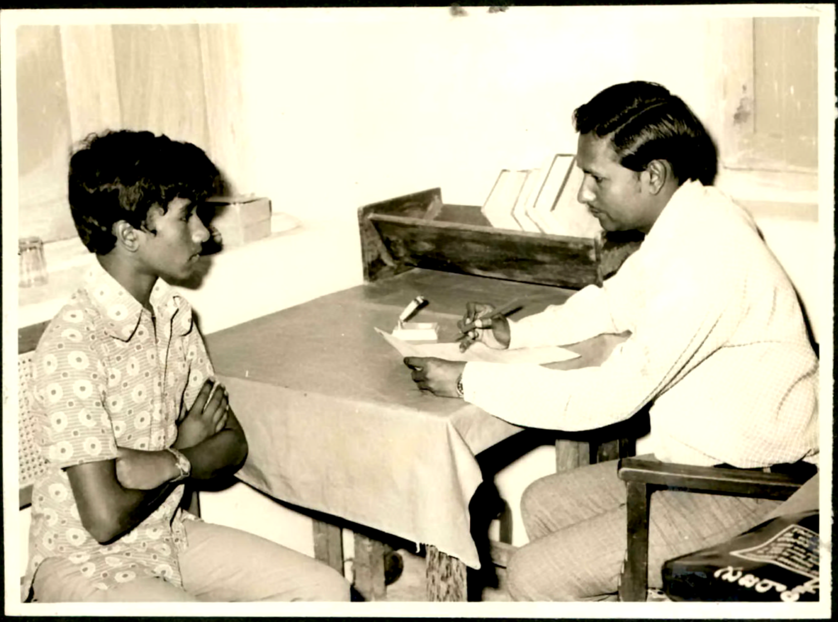

छात्र का मौखिक साक्षात्कार

चित्र संख्या -4

छात्र को लेखन त्रुटि बताना

8 वी कक्षा के छात्रों के मौखिक साक्षात्कार का विवरण

। विद्यार्थी का नाम ः

इस मौखिक-साक्षात्कार में आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के द्वितीय भाषा हिन्दी में पिछडे हुए छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हैं । इसमें 320 उन छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है जिन्होंने उपलब्धि परीक्षा में निम्न स्तर के अंक प्राप्त किये हैं । मौखिक साक्षात्कार के छात्र-छात्राओंका चयन करते समय उनकी पाठशाला का संचालन, जिला, छात्र एवं छात्राओं को समान वरीयता दी गई है ।

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची- ।

	नगरीय छात्र	नगरीय छात्राएँ	ग्रामीण छात्र	ग्रामीण छात्राएँ	कुल योग
संख्या	80	80	80	80	320
प्रतिशत	25%	25%	25%	25%	100

यह मौखिक साक्षात्कार केवल छात्र एवं छात्राओं की भाषा उपलब्धि में बाधक अन्य कारणों को जानने की दृष्टि से लिया गया है । नगरीय एवं ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं को समान प्रतिशत से चयन किया गया है ।

2 पाठशाला का नाम :

इस मौखिक साक्षात्कार में कुल 32 पाठशालाएँ सम्मिलित हैं जिसमें कुल छात्र एवं छात्राओं की संख्या 320 है । प्रत्येक जिले से 40 छात्र-छात्राओं को लिया गया है । प्रत्येक पाठशाला से 10 छात्रों को ग्रामीय एवं नगरीय पाठशालाओं से लिया गया है । इस प्रकार प्रत्येक जिले से 4 पाठशालाओं के हिसाब से कुल 32 पाठशालाओं को शोध विषय के अन्तर्गत चयन किया गया है । मौखिक साक्षात्कार में सम्मिलित पाठशालाओं की संख्या निम्न प्रकार है ।

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 2

	नगरीय पाठशालाएँ		ग्रामीय पाठशालाएँ		कुल योग
	छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ	
संख्या	8	8	8	8	32
प्रतिशत	25%	25%	25%	25%	100

इन 32 मौखिक साक्षात्कार पाठशालाओं में सरकारी, जिला परिषद् (छात्र एवं छात्राएँ) पाठशालाएँ 25% प्रतिशत में सम्मिलित हैं ।

3 पिता का नाम :

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 3

मौखिक साक्षात्कार की प्रश्नावली में प्रश्न संख्या 3 में छात्रों के पिता एवं संरक्षक का नाम पूछा गया है । यह प्रश्न भाषा संबंधी पिछड़ेपन के कारण जानने में कोई विशेष महत्व नहीं रखता है फिर भी इस प्रश्न का मनोवैज्ञानिक महत्व को टाला नहीं जा सकता । इस प्रश्न से साक्षात्कारकर्ता और छात्रों के बीच में एक प्रकार की सामिप्यता बनी रहती है और छात्र बिना किसी डर के साक्षात्कारकर्ता के प्रश्नों का जवाब देते हैं । इसमें 320 छात्र एवं छात्राओं के पिता के नाम सम्मिलित हैं । जिनके माता-पिता नहीं हैं उनके संरक्षक का नाम पूछा गया है और यह मौखिक साक्षात्कार की प्रश्नावली में उल्लेख किया गया है ।

4 पिता/संरक्षक की शिक्षा योग्यता :

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 4

	अशिक्षित	मैट्रिक से कम	मैट्रिक	बी0 ए0 तथा समकक्ष	एम0 ए0 तथा समकक्ष	अन्य	कुल योग
संख्या	50	40	136	60	17	17	~~32~~ 320
प्रतिशत	15•63	15•50	42•50	18•75	5•31	5•31	100•00

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-4 से यह पता चलता है कि 8वीं कक्षा में पढ़नेवाले छात्रों के पिता एवं संरक्षक अधिकतर शिक्षित हैं जिनकी शैक्षिक योग्यता मैट्रिक्युलेशन है । कुल संख्या 320 में भी इनकी संख्या 136 और प्रतिशत 45•50 है जो तुलना में सबसे अधिक प्रतिशत है । इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि छात्रों के पिता एवं संरक्षक साधारण शैक्षिक योग्यता रखते हैं । इस विवरण सूची से यह बात स्पष्ट होती है कि मौखिक साक्षात्कार में सम्मिलित अधिकतर छात्रों के माता, पिता एवं संरक्षक शिक्षित होने के नाते उन्हें घर पर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध है ।

5 परिवार के सदस्यों की संख्या :

मौखिक साक्षात्कार विवरण-सूची - 5

	संख्या 1 - 3	संख्या 4 - 6	संख्या 7 - 9	संख्या 10 - 12	कुल योग
संख्या	110	176	20	14	320
प्रतिशत	34.38	55.00	6.25	4.37	100

आठवीं कक्षा के छात्रों के पारिवारिक विवरण से यह पता चलता है कि प्रत्येक घर में अत्यधिक सदस्यों की संख्या 4 से लेकर 6 तक हैं । अत्यधिक उत्तरदाता छात्रों की संख्या 176 और प्रतिशत 55% है । इसके बाद की संख्या 110 है जिनका प्रतिशत 34.38 है । इसके अनुसार प्रत्येक परिवार में कम से कम 1 से लेकर 3 तक सदस्य हैं । इससे यह ज्ञात होता है कि मध्यवर्गीय परिवार से अधिक संख्यक छात्र आन्ध्र प्रान्त की पाठशालाओं में पढ़ने आते हैं ।

6 पिता/संरक्षक की आमदनी :

मौखिक साक्षात्कार विवरण-सूची - 6

	रू0 100 से कम	रुपयों का अंतर 201 - 200	रुपयों का अन्तर 201-500	रुपयों का अन्तर 501-1500	रुपयों का अन्तर 1501 से अधिक	अन्य	कुल योग
संख्या	17	29	153	100	8	13	320
प्रतिशत	5·31	9·06	47·81	31·25	2·50	4·07	100

कुल संख्या में 153 साक्षात्कार छात्रों के माता-पिता की आमदनी 201-500 के मध्यान्तर में है । इन छात्रों का प्रतिशत 47·81 है । उसके बाद 100 छात्रों ने कहा कि उनके संरक्षक तथा पिता की आय 501 से 1500 के बीच है । इनका प्रतिशत 31·25 है । इससे यह पता चलता है छात्रों की आर्थिक स्थिति साधारण कोटि की है । कुप्पुस्वामी जी की सामाजिक एवं आर्थिक मापक को आधार लेकर उपर्युक्त आर्थिक मापन किया गया है ।

7 क्या आपके घर में पढ़ने के लिए सभी सुविधाएँ हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची -7

	हाँ	नहीं	कुछ हद तक	रिक्त	कुल योग
संख्या	182	76	32	30	320
प्रतिशत	56·87	23·75	10·00	9·38	100

कुल संख्या में 182 छात्रों ने कहा कि उनके घर में पढ़ने की सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं । इस प्रश्न के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 56·87 है । 76 छात्रों के घरों में पढ़ने की सुविधाएँ नहीं है । इनका प्रतिशत 23·75 है । सुविधाओं के इस प्रतिशत से भी यह अनुमान किया जा सकता है कि अधिकतर छात्र मध्यवर्गीय परिवार के हैं ।

8 आप किन-किन विषयों पर अधिक ध्यान देते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण-सूची -8

	खेल-कूदमें	पढ़ाई में	सैर करनेमें	सिनेमा देखने में	अन्य	कुल योग
संख्या	20	254	15	20	11	320
प्रतिशत	6·25	79·37	4·69	6·25	3·44	100

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-8 से यह पता चलता है कि अधिकतर 8 वीं कक्षा के छात्र पढ़ाई में अधिक ध्यान देते हैं । इन छात्रों की संख्या 254 और प्रतिशत 79·37 हैं । बाद की संख्या खेल-कूद और सिनेमा आदि देखने में रुचि लेनें की है इनका प्रतिशत 6·25 है । अधिकतर छात्र पढ़ाई में ध्यान देते हैं ।

9 बचपन में आप किसी रोग से पीड़ित थे ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 9

	हाँ	नहीं	नहीं जानता	रिक्त	कुल योग
संख्या	15	280	20	5	320
प्रतिशत	4·69	87·50	6·25	1·25	100

छात्रों के स्वास्थ्य संबंधी इस सूची से पता चलता है कि अधिक संख्यक छात्र बचपन में किसी रोग से पीड़ित नहीं थे । उनका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक था । इन छात्रों का प्रतिशत 87·50 है । इसलिए छात्रों की शारीरिक अस्वस्थता उनके मानसिक पिछड़ेपन का कारण नहीं है ।

10 निम्नलिखित विषयों में आपका प्रिय विषय कौनसा है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 10

	गणित	तेलुगु	विज्ञान	हिन्दी	समाजशास्त्र	अंग्रेजी	कुल योग
संख्या	20	170	30	14	76	10	320
प्रतिशत	6·25	53·12	9·38	4·38	23·75	3·12	~~100~~ 100

बहुसंख्यक 8वीं कक्षा के छात्रों का प्रिय विषय तेलुगु है, जो छात्रों की मातृभाषा है । इस मत को 170 छात्रों ने प्रकट किया, जिनका प्रतिशत 53·12 है । दूसरा स्थान समाजशास्त्र का है उनका प्रतिशत 23·75 है । अंग्रेजी भाषा केवल 10 छात्रों का प्रिय विषय है और उसके बाद 14 छात्रों ने हिन्दी को अपना प्रिय विषय माना है उनका प्रतिशत 4·37 है । इससे स्पष्ट है कि बहुसंख्यक छात्र हिन्दी पढ़ने के प्रति रुचि नहीं रखते है ।

11 क्या आप हिन्दी पढ़ना चाहते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 11

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	रिक्त	कुल योग
संख्या	197	80	30	13	320
प्रतिशत	61·56	25·00	9·38	4·06	100·00

इस साक्षात्कार सूची से पता चलता है कि 197 छात्र हिन्दी पढ़ना चाहते हैं । अर्थात् छात्रों में पढ़ने की इच्छा है । इनका प्रतिशत 61·56 है । 8वीं कक्षा के छात्रों की इस मत से यह प्रकट होता है कि छात्र हिन्दी पढ़ने को गौरव की बात समझते हैं । इसके बाद 80 छात्रों ने अपनी अइष्टता प्रकट किया । इनका प्रतिशत 25% है ।

12 मातृभाषा के अतिरिक्त आपके घर में कौन कौनसी भाषाएँ बोलते हैं ?

<u>मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची - 12</u>

	उर्दू	तमिल	हिन्दी	अंग्रेजी	कुल योग
संख्या	20	60	79	161	320
प्रतिशत	6•25	18•75	24•69	50•31	100

मौखिक साक्षात्कार विवरण तालिका से यह पता चलता है कि 8वीं कक्षा के छात्र अपनी मातृभाषा के बाद अधिकतर छात्र अपने घरों में अंग्रेजी ही बोलते हैं । उत्तरदाताओं की संख्या 161 और प्रतिशत 50•31 है । इसके बाद 79 की संख्या हिन्दी की है इनका प्रतिशत 24•69 है । इससे स्पष्ट है कि छात्रों के घरों में तेलुगु के बाद अंग्रेजी वातावरण ही अधिक है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 50•31 है ।

13 क्या आपको हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन प्राप्त होता है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-13

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	181	126	13	-	320
प्रतिशत	56·56	39·38	4·06	-	100

56·56 प्रतिशत छात्रों का यह मत है कि उनको हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन प्राप्त होता है । इन छात्रों की संख्या 181 है । परंतु 126 छात्रों को प्रोत्साहन नहीं मिलता । इनका प्रतिशत 39·38 है । तुलना की दृष्टि से इन दोनों में अधिक अन्तर नहीं है । परंतु अत्यधिक छात्रों के उत्तर को मान्यता दी जाती है ।

14 आपको हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन किससे प्राप्त होता है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-14

	माता-पिता	हिन्दी अध्यापक	सरकार	समाज	कुल योग
संख्या	110	176	14	20	320
प्रतिशत	34·38	55·00	4·37	6·25	100

हिन्दी अध्यापक से ही आठवीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी सीखने का अधिक प्रोत्साहन मिलता है । साक्षात्कार प्राप्त इन छात्रों की संख्या 176 और प्रतिशत 55% है । इसके बाद 110 छात्रों का कहना है कि माता-पिता से उनको हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन मिलता है । इनका प्रतिशत 34·38 है।

15 क्या हिन्दी सीखने से कुछ लाभ होता है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-15

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	216	70	34	-	320
प्रतिशत	67·50	21·87	10·63	-	100

प्रश्न संख्या 15 के साक्षात्कार विवरण से यह पता चलता है कि कुल 320 में से 216 छात्रों को हिन्दी सीखने से कुछ लाभ होने की संभावना है । इन छात्रों का प्रतिशत 67·50 है । इसके विपरीत 70 छात्रों ने अपना मत प्रकट किया उनका प्रतिशत 21·87 है ।

उपर्युक्त विश्लेषण का बहुसंख्यक उत्तर को स्वीकार किया गया है ।

16 आपको हिन्दी सीखने के लिए पर्याप्त सुविधाएँ प्राप्त होती हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-16

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	175	65	80	-	320
प्रतिशत	54·69	20·31	25·00	-	100

कुल संख्या में 175 छात्रों ने यह मत प्रकट किया है कि उन्हें हिन्दी सीखने की सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं । इन छात्र तथा छात्राओं का प्रतिशत 54·69 है । इसके विपरीत 65 छात्र एवं छात्राओं ने अपना मत प्रकट किया । इनका प्रतिशत 20·31 है । शेष उत्तरदाताओं की स्थिति संदिग्ध में है ।

17 हिन्दी सीखना आपके लिए सरल है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-17

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	80	162	78	-	320
प्रतिशत	25·00	50·62	24·38	-	100

बहुसंख्यक साक्षात्कारदाताओं का कहना है कि हिन्दी सीखना उनके लिए कठिन है। उनकी संख्या 162 और प्रतिशत 50·62 है। केवल 80 छात्रों ने सरल कहा है इनका प्रतिशत 25% है।

उपर्युक्त विवरण सूची से यह पता चलता है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को हिन्दी सीखना सरल नहीं है।

18 क्या आपकी पाठशाला के ग्रन्थालय में हिन्दी पुस्तकें हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-18

	हैं	नहीं	कुछ हद तक	-	कुल योग
संख्या	70	230	20	-	320
प्रतिशत	21·88	71·87	6·25	-	100

कुल 320 मौखिक साक्षात्कार प्राप्त छात्रों में से 230 छात्रों ने यह उत्तर दिया है कि उनके पाठशालाओं के ग्रन्थालय में हिन्दी पुस्तकें अप्राप्त है । इनका प्रतिशत 71·87 है । 70 छात्रों ने कहा है कि उनके पाठशालाओं में हिन्दी पुस्तकें प्राप्य हैं । उनका प्रतिशत 21·88 हैं ।

इससे यह विदित होता है कि छात्रों को अपनी पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य हिन्दी पुस्तकें देखने नहीं मिलेंगी ।

19 हिन्दी सीखने से आपको किस प्रकार का लाभ पहुँचता है ?

(1) हिन्दी भाषा-भाषियों से संपर्क स्थापित करना ।
(2) हमारे भीतर राष्ट्रीय एकता जागृत होगी ।
(3) केन्द्र सरकार नौकरी देती है ?
(4) हिन्दी अध्यापक बन सकते हैं ।
(5) हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के नाते सीखना आवश्यक है ।

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-19

	1	2	3	4	5	कुल योग
संख्या	84	10	150	60	16	320
प्रतिशत	26·25	3·12	46·88	18·75	5	100

सूची -19 के आधार से इस निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं कि केन्द्रीय सरकार के अंतर्गत कार्यालयों में नौकरी प्राप्त करने की इच्छा से छात्र हिन्दी सीखना चाहते हैं इनका प्रतिशत 46·88 है और संख्या 150 है । 84 छात्र हिन्दी भाषा-भाषियों से संपर्क स्थापित करने के लिए हिन्दी सीखना चाहते हैं । इनका प्रतिशत 26·25 है ।

20 हिन्दी भाषा का ज्ञान अन्य भाषा के अध्ययन को आसान करता है ।

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-20

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	144	84	92	-	320
प्रतिशत	45·00	26·25	28·75	-	100

बहुसंख्यक छात्रों का मत है कि हिन्दी भाषा का ज्ञान अन्य भाषा को सीखने में मदद देता है । इन मतदाताओं की संख्या 144 और प्रतिशत 45% है । 84 छात्रों ने इस पर अपनी असम्मति प्रकट की और 92 छात्र इस संदर्भ में संदिग्ध हैं । इनका प्रतिशत 28·75 है ।

2। हिन्दी सीखने में कठिनाई किस स्तर पर होती है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची -2।

	पढ़नेमें	लिखने में	बातचीत में	अर्थ ग्रहण में	रिक्त	कुल योग
संख्या	40	113	98	28	41	320
प्रतिशत	12·50	35·31	30·63	8·75	12·81	100

छात्रों के साक्षात्कार विवरण सूची-2। से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी सीखने में उनको लेखन की कठिनाई है । इन छात्रों का प्रतिशत 35·31 है और उनकी संख्या 113 है । बातचीत की कठिनाई को 98 छात्रों ने समर्थन किया जिनका प्रतिशत 30·63 है । प्रतिशत की तुलना में अन्य कठिनाइयों को भी टाला नहीं जाता है ।

22 क्या आपको हिन्दी के लिंग भेद का निर्णय करना कठिन है लगता है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची -22

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	235	70	15	-	320
प्रतिशत	73·44	21·88	4·68	-	100

तेलुगु छात्रों के लिए लिंग भेद का निर्णय एक समस्याजनक विषय है । मौखिक साक्षात्कार विश्लेषण सूची में 8वीं कक्षा के 235 छात्रों ने यह मत प्रकट किया है कि लिंग भेद का निर्णय करना उनके लिए कठिन कार्य है । इन छात्रों का प्रतिशत 73·44 है । इसके विपरीत में 70 छात्रों ने अपना मत प्रकट किया है । इनका प्रतिशत 21·88 है ।

23 हिन्दी में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग आपके लिए सरल है ?

<u>मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-23</u>

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	60	225	35	-	320
प्रतिशत	18·75	70·31	10·94	-	100

सूची संख्या -23 में 8 वीं कक्षा द्वितीय भाषा हिन्दी के छात्रों ने यह मत प्रकट किया है कि ' ने ' प्रत्यय का प्रयोग उनके लिए कठिन कार्य है । इन छात्रों का प्रतिशत 70·31 है । 60 छात्रों ने इनके प्रयोग में अपनी सरलता बताई ।

बहुसंख्यक प्रतिशत छात्रों के मतानुसार यह कह सकते हैं कि तेलुगु मातृभाषा छात्रों को हिन्दी के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है । लेखन कौशल में कमज़ोर रहने के कारणों में से यह भी एक पमुख कारण है ।

24 क्या आपके लिए हिन्दी पाठ्यक्रम सरल है ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-24

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	216	70	34	-	320
प्रतिशत	67·50	21·87	10·63	-	100

आठवीं कक्षा के बहुसंख्यक छात्रों का यह मत है कि उनके लिए हिन्दी पाठ्यक्रम सुविधाजनक है । इन छात्रों की संख्या 216 और प्रतिशत 67·50 है । पाठ्यक्रम की कठिनाई पर 70 छात्रों ने अपना मत प्रकट किया है उनका प्रतिशत 21·87 है ।

आन्ध्र प्रान्त के छात्रों ने हिन्दी पाठ्यक्रम को सरल बताया है ।

25 आपको हिन्दी पुस्तक का स्तर कैसा है ?

<u>मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-25</u>

	सरल है	कठिन है	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	102	170	48	-	320
प्रतिशत	31·87	53·13	15·00	-	100

कुल योग में 170 आठवीं कक्षा के छात्रों ने मौखिक साक्षात्कार में यह उत्तर दिया है कि वर्तमान हिन्दी पुस्तक का स्तर ऊँचा है । वे पुस्तक को पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करते हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 53·13 है। इस पुस्तक को 102 छात्रों ने सरल बताया है जिनका प्रतिशत 31·87 है।

आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के द्वितीय भाषा हिन्दी के छात्र हिन्दी विषय में कमजोर होने के कारणों में पाठ्यपुस्तक का कठिन होना भी एक कारण हो सकता है ।

26 आपकी हिन्दी पुस्तक के गद्य पाठ कैसे हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-26

	सरल हैं	कठिन हैं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	72	181	67	7	320
प्रतिशत	22·50	56·56	20·94	-	100

आठवीं कक्षा के छात्रों ने अपने मौखिक साक्षात्कार में यह बताया है कि हिन्दी पुस्तक के गद्य पाठ उनके स्तर से ऊँचे हैं। वे उन पाठों को पढ़कर समझ नहीं सकते हैं।

इन उत्तरदाताओं की संख्या 181 और प्रतिशत 56·56 है। कुल संख्या में 72 छात्रों ने पुस्तक की सरलता पर अपना विचार प्रकट किया है। केवल 67 छात्र इस विषय पर संदिग्ध है।

27 प्राचीन कविताएँ (कबीर, रहीम, सूर, तुलसी आदि) को क्या आप समझ सकते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण-सूची -27

	हाँ	नहीं	कुछ हद तक	-	कुल योग
संख्या	80	167	73	-	320
प्रतिशत	25·00	52·19	22·81	-	100

छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से यह पता चला कि आठवीं कक्षा के छात्र अपनी पाठ्यपुस्तक की प्राचीन कविताओं को समझ नहीं सकते हैं । 167 छात्रों ने यह विचार प्रकट किया है कि इनमें प्रयुक्त नये शब्दों के अर्थ वे नहीं जानते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 52·19 है । 80 छात्रों ने इन कविताओं की सरलता का पक्ष लिया है ।

इस मौखिक साक्षात्कार सूची से यह विदित होता है कि प्राचीन कविताओं में प्रयुक्त खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि बोलियों के शब्दों को आन्ध्र के छात्र समझ नहीं पाते हैं ।

28 क्या आप हिन्दी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य समझते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-28

	हाँ	नहीं	कह नहीं सकता	-	कुल योग
संख्या	187	90	43	-	320
प्रतिशत	58·44	28·12	13·44	-	100

कुल संख्या में 187 छात्र हिन्दी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य समझते हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 58·44 है । 90 उत्तरदाताओं ने इसके विपक्ष में अपना मत प्रकट किया है । इससे यह ज्ञात होता है कि छात्र इसको परीक्षा का अनिवार्य विषय और इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक समझते हैं ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी आन्ध्र प्रदेश के छात्रों को कठिन होने पर भी इसको सीखना वे जरूरी समझते हैं ।

29 सप्ताह में आप हिन्दी के कितने घण्टे (पीरियड्स) होना आवश्यक समझते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-29

	3 घण्टे	4 घण्टे	5 घण्टे	6 घण्टे	कुल योग
संख्या	50	40	96	134	320
प्रतिशत	15·62	12·50	30·00	41·88	100

विवरण सूची-29 से यह पता चलता है कि 134 छात्र हिन्दी शिक्षण के लिए छः घण्टे का होना आवश्यक समझते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 41·88 है । 96 छात्रों के मतानुसार सप्ताह में हिन्दी शिक्षण के लिए 5 घण्टे होना आवश्यक है । इन छात्रों का प्रतिशत 30% है ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आन्ध्र प्रान्त के छात्र तथा छात्राओं को हिन्दी का घण्टा प्रतिदिन होना चाहिए ।

30 आपके हिन्दी अध्यापक हिन्दी की शिक्षा किस माध्यम से देते हैं ?

मौखिक साक्षात्कार विवरण सूची-30

	तेलुगु माध्यम	हिन्दी माध्यम	अंग्रेजी माध्यम	-	कुल योग
संख्या	194	66	60	-	320
प्रतिशत	60·62	20·63	18·75	-	100

60·62 प्रतिशत छात्रों का यह कहना है कि उनकी पाठशाला में अध्यापक हिन्दी की शिक्षा तेलुगु माध्यम से देते हैं । इस मत को 194 छात्रों ने प्रकट किया । 66 छात्रों के मतानुसार हिन्दी अध्यापक उनको हिन्दी की शिक्षा हिन्दी माध्यम से ही देते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 20·63 है ।

बहुसंख्यक उत्तर से यह स्पष्ट होता है कि आठवीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी की शिक्षा तेलुगु माध्यम से दी जाती है ।

निष्कर्ष :

आठवीं कक्षा के छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से उनके हिन्दी अध्ययन सम्बन्धी निम्न बातें प्रकाश में आयी हैं ।

(1) आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले छात्रों के अधिकतर माता तथा संरक्षक साधारण शिक्षा योग्यता रखते हैं । जिनका प्रतिशत 42.50% है ।

(2) अधिकतर छात्र मध्यवर्गीय परिवार से आये हुए हैं । उनके घर में लगभग 4 तथा 6 तक सदस्यों की संख्या है । उनका प्रतिशत 55% है ।

(3) मध्यवर्गीय परिवार के होने के कारण छात्रों के माता-पिता या संरक्षक के मासिक वेतन 201-500 के भीतर है । इन साक्षात्कार प्राप्त छात्रों की संख्या 153 और प्रतिशत 47.81 है ।

(4) मध्यवर्गीय परिवार तथा आर्थिक स्थिति साधारण होने के कारण इन छात्रों के घर में पढ़ने की सभी सुविधाएँ हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 56.87 है ।

(5) आठवीं कक्षा के छात्रों के साक्षात्कार विवरण से यह ज्ञात होता है कि अधिक संख्यक छात्र पढाई की ओर ध्यान देते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 79.37 है ।

(6) छात्रों का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक है । यह उत्तर छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से प्राप्त हुआ । कुल 320 छात्रों में से 280 छात्रों ने इस उत्तर का समर्थन किया । इनका प्रतिशत 87.50 है ।

(7) अधिकतर छात्रों ने अपनी मातृभाषा तेलुगु को ही अपना प्रिय विषय बताया है इनका प्रतिशत 53·12 है । बाद का स्थान समाजशास्त्र का है । इसका प्रतिशत 23·75 है ।

(8) छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से यह पता चला कि बहुसंख्यक छात्र हिन्दी पढ़ना चाहते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत कुल प्रतिशत में 61·56 है ।

(9) मातृभाषा के अतिरिक्त बहुसंख्यक छात्रों के घरों में अंग्रेजी का वातावरण है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 50·31 है ।

(10) आठवीं कक्षा के छात्रों का कहना है कि उनको हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन प्राप्त होता है । इन छात्रों का प्रतिशत 56·56 है ।

(11) इन बहुतसंख्यक उत्तरदाता छात्रों ने यह स्वीकार किया है कि हिन्दी सीखने का प्रोत्साहन अधिक मात्रा में हिन्दी अध्यापक से ही प्राप्त होता है । इन छात्रों का प्रतिशत 55% है ।

(12) छात्रों के उत्तर से यह ज्ञात हुआ कि हिन्दी सीखने में वे कुछ लाभ होने का अनुभव करते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 67·50 है ।

(13) मौखिक साक्षात्कार में सम्मिलित छात्रों का कहना है कि उन्हें हिन्दी सीखने में सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं । इनका प्रतिशत 54·69 है ।

(14) 162 छात्रों का यह मत है कि हिन्दी उनके लिए सरल नहीं है । इन छात्रों का प्रतिशत 50·62 है । उत्तरदाताओं की कुल संख्या 320 है ।

(15) आठवीं कक्षा के छात्रों का कहना है कि बहुसंख्यक पाठशालाओं के ग्रन्थालयों में हिन्दी पुस्तकें प्राप्य नहीं है । इन छात्रों का प्रतिशत 71·87 है ।

(16) बहुसंख्यक छात्र केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धित कार्यालयों में नौकरी प्राप्त करने के हेतु हिन्दी सीखना चाहते हैं । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 46·88 है ।

(17) 144 साक्षात्कार प्राप्त छात्रों का उद्देश्य है कि हिन्दी के ज्ञान से दूसरी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना आसान होता है । इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत 45% है ।

(18) हिन्दी सीखने में अधिक कठिनाई लेखन कौशल में होती है । इस प्रकार के उत्तर को 113 छात्रों ने स्वीकार किया है । इनका प्रतिशत 35·31 है ।

(19) लिंग भेद का निर्णय करना 235 छात्रों ने समस्याजनक बताया इनका प्रतिशत 73·44 है ।

(20) आठवीं कक्षा के छात्रों का कहना है कि वे हिन्दी में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग नहीं जानते हैं । यह उत्तर 320 छात्रों में से 225 छात्रों ने दिया है इनका प्रतिशत 70·31 है ।

(21) 216 छात्रों ने आठवीं कक्षा का पाठ्यक्रम सरल बताया है इनका प्रतिशत 67·50 है ।

(22) छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से यह पता चला है कि आठवीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक का स्तर ऊँचा है । इसका समर्थन 53·13 प्रतिशत छात्रों ने किया है।

(23) बहुसंख्यक छात्रों का कहना है कि आठवीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक के गद्य पाठ छात्रों के भाषायी स्तर से ऊँचा है । प्रत्युत्तर छात्रों का प्रतिशत 56·56 है ।

(24) कुल संख्या में 167 छात्र हिन्दी की प्राचीन कविताओं को नहीं समझ सकते हैं । छात्रों के मौखिक साक्षात्कार से यह उत्तर प्राप्त हुआ । साक्षात्कार प्राप्त इन छात्रों का प्रतिशत 52·19 है ।

(25) आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य समझते हैं । इनका प्रतिशत 58·44 है ।

(26) हिन्दी सीखने के लिए छात्र सप्ताह में 6 घंटों (पीरियड्स) का होना आवश्यक समझते हैं । इन छात्रों का प्रतिशत 41·88 है ।

(27) कुल संख्या में 194 छात्रों ने यह बताया है कि उनको हिन्दी की शिक्षा तेलुगु माध्यम से दी जाती है । इस उत्तर का समर्थन 60·62 प्रतिशत छात्रों ने किया ।